अफगानस्थानका

इतिहास।

कलकत्ता,

३८।२ भवानीचरण दत्त ष्ट्रीट, हिन्दी बङ्गवासी
इलेक्टरी मेशीन-प्रेसमें
श्रीनटवर चक्रवर्त्ती द्वारा मुद्रित
और प्रकाशित।

सम्वत १९६२।

मूल्य २) दो रुपया।

भूमिका।

अबसे पहले अफगानस्थानका इतिहास हिन्दीभाषा साहित्यमें शायद नहीं था। हिन्दीभाषा ही क्यों,—वरञ्च बङ्गला, उर्दू प्रभृति देशकी अन्यान्य उन्नत भाषाओंमें भी सुश्रृङ्खल और सम्पूर्ण अफगानस्थानका इतिहास नहीं है।

किन्तु अङ्गरेजी भाषामें अफगानस्थानके सम्बन्धमें कितनी ही पुस्तकें हैं और अङ्गरेजीदां ऐतिहासिक पाठक इस पुस्तककी सभी बातें नई न पावेंगे। असलमें यह इतिहास सात पुस्तकोंके आधारपर लिखा गया है। जिनमें दो पुस्तकें उर्दू भाषाकी और बाकी पांच अङ्गरेजी भाषाकी हैं। इन सातों पुस्तकोंके नाम इस प्रकार हैं,—

अङ्गरेजी —

1.—The Kandhar Campaign,
by Major Ashe.
मेजर एशकृत "कन्धार युद्ध।"

2.—A Political mission to Afghanistan,
by H. W. Bellew
बेलिउकृत,—"राजनीतिक अफगानस्थान मिशन।

3,—Fourty one years in India
by Field Marshal Lord Roberts
प्रधान सेनापति लार्ड राबर्टसकृत "भारतमें ४१ वर्ष।"

4.—The Afghan War
by Howard Hensman
हेन्समेनकृत,—"अफगान युद्ध।"

5.—Encyclopeadia Britanica.
नानाविषय विभूषित "ब्टानिका कोष।"

अफगानस्थानका इतिहास ।

अफगानस्थान-वृत्तान्त ।

—(०)—

फारसी भाषामें अफगानस्थानको अफगानिस्तान कहते हैं। अफगान और सता, इन दो शब्दोंकी सन्धिसे इसकी उत्पत्ति है। सता मानी रहनेकी जगह और अफगान जाति विशेषका नाम है। अफगान नामके सम्बन्धमे कई कहानियां हैं। बेलिउ साहब अपने जर्नलमे कहते हैं, कि बैतुलमुकद्दस या इस्लामी-मके प्रतिष्ठापक अफगानाकी माताको अफगानाके जननेके समय बडी पीड़ा हुई। उसने परमेश्वरसे कष्टमोचनकी प्रार्थना की। इसके उपरान्त ही पुत्र प्रसव किया और कहा,—"अफगना।' यानी "मैं बचो। इसी बातपर शिशुका नाम अफगना पडा। अफगना अफगानोंका पूर्वपुरुष था। उसीके नामपर उसकी जातिका नाम अफगान रखा गया। बेलिउ साहब ही दूसरी कहानी कहते हैं, कि अफगनाकी जननी अफगनाको प्रसव करनेके समय "फिगा" यानी "हाय हाय' करती थी। इस वजहसे नवजात शिशुका नाम "अफगना" रखा गया। नैरङ्ग अफगानके लेखक मीर साहब फरिश्ताके आधारपर तीसरी ही कहानी कहते हैं। अगले जमानेमें विदेशी

लोग अफगान जातिसे जब कुशल मङ्गल पूछते थे, तो अफगानोंके जवाबका मर्म्म इस प्रकार होता था, दर "अफगानिस्तान वगोयन्द, कि वजुज फरियादो फिगा व गोगा दरां चीजे दीगर नेस्त।" यानी, अफगानस्थानमें लोग कहते हैं, कि उनके देशमे रोने चिल्लानेके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जो हो, भिन्न भिन्न ऐतिहासिकोंने भिन्न भिन्न रीतिसे अफगान शब्दकी कहानी कही है। इसमें सन्देह नहीं, कि अफगानोंके एक सुप्रसिद्ध पूर्वपुरुषका नाम अफगाना था और खूब सम्भव है कि उसीके नामपर उसके जातिवालोंका नाम अफगान पडा।

अफगानस्थान साधारणतः पहाड़ भूभाग है। यह समुद्र वक्षसे ऊंचा है और इसका नीचासे नीचा भाग भी समुद्र वक्षसे ऊंचा है। ६२ दरजेसे लेकर ७० तक पूर्व दिशामें लम्बा और ३०से लेकर ३५तक उत्तर दिशामें चौडा है। इसकी पूर्वीय सीमा बरोघिल दर्रेसे आरम्भ होकर चित्राल, पेशावर और डेराजात प्रान्तसे होता हुआ क्वेटेके समीप बोलन दर्रेतक पहुंचो है। बरोघिल दर्रेके समीप ही अङ्गरेज चीन और रूस इन तीनो बादशाहोंकी बादशाहतें आपसमें मिल गई हैं। अफगानस्थानकी उत्तरीय सीमापर रूसी तुरकस्थान है। इसके पश्चिम फारस और दक्षिण बलूचस्थान है। यह पूर्वसे पश्चिम कोई ६ सौ मील और उत्तरसे दक्षिण लगभग ४ सौ ५० मील लम्बा है। दो लाख ६० हजार वर्गमीलमें फैला हुआ है।

मान लीजिये, कि समुद्र अपनी वर्त्तमान स्थितिकी अपेक्षा ४ हजार फुट ऊंचा हो जाय। ऐसी दशामें भी पूर्वकथित

चौथाई भूभाग पानीमें डूब न सकेगा। सिर्फ काबुल नदीकी नीची घाटियोंका कुछ भाग और एक त्रिकोण भूभाग जलमग्न होगा। इस त्रिकोणका नोकदार कोना सुदूर दक्षिण पूर्वकी सीस्तान झील बनेगी और उसकी आधार रेखा हिरातसे कन्धार पहुंच जावेगी। अवश्य ही इस त्रिकोणके बीचमें असंख्य चोटियां और टीले मौजूद होंगे। फिर मान लीजिये, कि समुद्र अपने वर्त्तमान स्थानसे ७ हजार फुट और ऊंचा हो जावे। इतनेपर भी इतना बड़ा भूभाग डूबनेसे बच जावेगा, कि हिन्दूकुश-पर्वतके कोशान दर्रेसे कन्धार और गजनीके बीचकी सड़कके एक स्थानतक दो सौ मील लम्बी एक सीधी रेखा तय्यार हो सकेगी।

यदि अफगानस्थानकी नैसर्गिक विभक्ति की जावे, तो सम्भवतः ६ टुकडोंमें होगी। उन ६ टुकडोंके नाम इस प्रकार हैं,—(१) काबुल खाल, (२) मध्य अफगानस्थानका वह उच्च भूभाग, जिसपर गजनी और कलाते गिलजई अवस्थित है और जो कन्धारकी ऊपरी घाटियोंका आलिङ्गन करता है, (३) उच्च हलमन्द खाल, (४) निम्न हलमन्द खाल, जो गिरिश्क, कन्धार और अफगानके सीस्तानको वेष्टित किये हुआ है, (५) हिरात नदीकी खाल, (६) मध्य अफगानस्थानके उच्च भूभागका पूर्वीय किनारा। सिन्धनदमें कभी कभी बाढ़ आने हीपर इस भूभागमें जल पहुंचता है। इन ६ भागोंकी प्राकृतिक दशामें बड़ा अन्तर है। कहीं शीत अधिक है, कहीं गर्मी। कहीं जलकी प्रचुरता है, कहीं अभाव। कहीं हरियाली ढूंढे नहीं मिलती और कहींकी भूमि सदैव

सुजला सुफला और सुश्यामला रहती है। इनसाइक्लोपीडिया वृटानिकामें लिखा है,—"काबुल खालकी नैसर्गिक विभक्ति जलालाबादसे ऊपर गण्डमकके समीप पहुंचते ही स्पष्ट दिखाई देने लगती है। इस जगह भूमि कोई ३ हजार फुट नीची हो जाती है। इसीके विषयमें बावर बादशाह कहते हैं,—'जिस समय तुम नीचे उतरोगे, तो तुम्हें नई ही दुनिया दिखाई देगी। वनस्पति, फसल, पशु, मनुष्य और उनके परिच्छद सभी नये दिखाई देंगे।' जलालाबादमें वर्नेसने गेहूंकी फसल तयार पाई, किन्तु २५ मील आगे, गण्डमकमें जाकर देखा, कि उक्त फसल वहां आरम्भिक अवस्थामें है। इसी जगह प्रकृतिने भारतवर्षका फाटक तयार किया है। अफगानस्थानके उच्च भागमें युरोप-जैसी पैदावार होती है और निम्न भागमें भारतवर्षकीसी।

काबुलके पर्व्वतोंके विषयमें नैरङ्गे अफगानमें इस प्रकार लिखा है,—"अफगानस्थानकी उत्तर ओर बहुत ऊंचे पर्व्वत, नीचे मैदान और हरे भरे स्थान हैं। नहरें और जलस्रोत अधिक हैं। दक्षिण ओर ऐसा नहीं है। वहां घास पात और पानी दुष्प्राप्य है। उत्तर ओरकी पर्व्वतमालामें हिन्दूकुश एक पर्व्वत है। यह भारतवर्षके हिमालयसे लेकर अफगानस्थानके पश्चिमतक चला गया है। इसकी ऊंची चोटियां वरफसे ढंकी रहती हैं। इसके समीप ही कोहेबाबाकी अवि-च्छिन्न शृङ्खला पश्चिमीय सीमापर्य्यन्त चली गई है। इसके समीप कितने ही पर्व्वत हैं। इनमें अधिकांश उच्च गिरिशृङ्ग तुषाराच्छादित हैं। इन्हीं पर्व्वतोंकी तराईसे हलमन्द नदी

बहती है। हिन्दूकुश और कोहेबाबाके बीचमें बामियान दर्रा है। कोहेबाबाके पश्चिम ओर कोहेगोर है। यह हिरातक चला गया है और यही तुरकस्थान और हरीरोदके मैदानोंको अलग करता है। अफगानस्थानकी पूर्व ओर, उत्तरसे लेकर दक्षिणतक, कोहेसुलेमानका सिलसिला है। काबुलकी दक्षिण ओर कोहेसुफेद पर्व्वत माला है।" अफगानस्थानमें पर्व्वत तो इतने ही हैं। पर इनकी शाखा प्रशाखा देशभरमें फैली हुई है। कोई कोई शाखा स्वतन्त्र नामसे पुकारी जाती है।

अफगानस्थानमें नदियां बहुत नहीं हैं। जितनी हैं, उनमें अधिकांश बहुत छोटी हैं। बेलिउ साहब अपने ग्रन्थमें कहते हैं,—"काबुलकी कोई नदी समुद्रतक नहीं पहुंचती। जिस देशसे वह निकलती है, उसको सीमाके बाहर भी नहीं पहुंचती। कुल नदियां वर्षके अधिक भागमें न्यूनाधिक पायाब रहती हैं। सब दक्षिण और पश्चिम ओर बहती हैं। सिर्फ कुर्रम और गोमलके जलस्रोत कोहेसुलेमानसे निकलकर दक्षिण पूर्व्व ओर बहते हैं। इनमें गोमल स्रोत पर्व्वतसे बाहर निकलकर पहले ही जमीनमें समा जाता है। पायाब कुर्रमस्रोत इसाखेलके समीप सिन्धनदमें गिरता है। पश्चिम ओर कन्धार और हिरातके सम भूभागको सींचती हुई तारनक अरगन्दाब, खासरूद, फरहरूद, और हरीरूद नाम्नी नदियां बहती हैं। यह सब सीस्तान झील वा "ग्रानिस्तादे हाम्न" की ओर जाती हैं। इन नदियोंमें हेलमन्द सबसे बड़ी है। इसीमें तारनक अरगन्दाब और खाशरूद मिल गई हैं। गर्म्मीके

दिनोंमें सिवा हलमन्दके बाकी सब नदियां सूख जाती हैं। सूख नेके कई कारण हैं। इनका बहुतसा जल आबपाशीके लिये ले लिया जाता है। जो बचता है, कुछ तो भाफ बनकर उड़ जाता है और कुछ पोली भूमिमें समा जाता है। गर्मियोंमें सीस्तान झीलका भी बड़ा अंश सूख जाता है। बरसातमें यह नदिया और झील सब बढ़ती हैं। कभी कभी बढ़कर किनारोंके बाहर निकल आती हैं। जमीनके जल्द जल्द पानी सोखने, गर्म वायुकी वजहसे, पानीके भाफ बनकर उड़ जानेसे और नदियोंकी बाढ़ अस्थायी और उतनी कामकी नहीं होती। खुरासानकी अपेक्षा काबुलप्रान्तमें नदियां बहुत कम हैं। लोगार, काशगर और स्वात प्रान्तीय प्रधान जलस्रोत हैं। यह तीनों काबुल नदीमें मिल जाते हैं और काबुल नदी अटकके पास सिन्धनदमें जा गिरती है। लोगार और काशगर जलस्रोत अनेक ऋतुओंमें पायाब रहते हैं। किन्तु स्वात और काबुल नदी सिर्फ अपने उद्गमके समीप ही पायाब है।"

झीलके विषयमें इनसाईक्लोपीडियामें लिखा है,—"हम नहीं जानते, कि लोरा नदी अफगानस्थको किस झीलमें जाकर गिरी है। दूसरी, सास्तान झील है। इसका बड़ा भाग अफगानस्थानके बाहर है। रह गया गिलजई प्रान्तरका आबिस्तादा वा "आब इस्तादा" "स्थिरजल।" यह गजनीसे दक्षिण पश्चिम ६५ मीलके फासलेपर है। इसकी स्थिति ७००० फुटकी ऊंचाईपर गैर उपजाऊ और सुनसान स्थानमें है। वहां न तो पेड़ है और न घासके तख्ते। बस्तीका तो चिन्ह भी दिखाई नहीं देता। ४४ मीलके घेरेमें इसका छिछला पानी फैला

हुआ है। बीचमें भी सुश्किलसे १२ फुट गहरा होगा। यही झील गजनीकी नदियोंकी प्रधान जननी है। अफ़गानोंका कहना है, कि एक नदी इस झीलमें आकर गिरती है। किन्तु यह ठीक नहीं है। झीलके जलका खार और कडवापन कहा मतका खण्डा करता है। जो मछलियां गजनी नदीसे चढ़कर झीलके खारे जलमें पहुंच जाती हैं, वह ठहरत नहीं, मर जाती हैं।"

अफ़गानस्थानकी खानियोंके विषयमें परलोकगत अमीर, अपनी पुस्तक "तुजुक अब्दुरहमानी"में लिखते हैं,—"अफ़गानस्थानमें इतनी खानियां हैं, कि सबसे प्रतिपत्तिशाली देश उसको ही होना चाहिये।" सचमुच ही अफ़गानस्थान खानियोंसे भरा हुआ है। लघमान और उसके निकटवर्त्ती जिलोंमें सोना पाया जाता है। हिन्दूकुशके समीप पञ्जशीर दररेके सिरेपर चांदीकी खानि है। पशावरसे उत्तर पश्चिम स्वतन्त्र देश वाजारके अन्तर्गत, उच कुर्रम और गोमलके मध्यस्थ जिलोंमें बहुत बढ़िया लोह चूर्ण मिलता है। बामियान घाटी और हिन्दूकुशके अनेक भागोंमे लोहा मिलता है। तांबा अफ़गानस्थानके कितने ही अंशोंमें देखा गया है। कुरम जिलेके बङ्गश जिलेमें, सुफेदकोहके शिनवारी देशमें और काकाप्रदेशमें सीसा धातु मिलती हैं। हिरातके समीप भी सीसेकी खानि है। अरगान्दा, बारदक पहाड़ी, गोरबन्द दर्रा और अफरीदियोंके देशमें भी सीसा मिलता है। अधिकांश सीसा हजारा देशसे आता है। वहां यह धातु जमीन परसे बटोर ली जाती है। कन्धारसे ३० मील उत्तर शाह

मकाहद स्थानमें सुरमा मिलता है। काफार देशके भोव जिलेमें जस्ता मिलता है। हिरात और हजारा देशके पिरकिसरी स्थानमें गन्धक मिलता है। पिरकिसरीमें नौसादर भी मिलता है। कन्धारके मैदानमें खड़िया मट्टी मिलती है। जरमत और गजनीके समीप कोयला मिलता है। अफगानस्थानके दक्षिण पश्चिम प्रदेशोंमें शोरा बहुतायतसे मिलता है। बदखशा सोमाके समीप चाल स्थानमें नमककी चट्टानें हैं।

अफगानस्थानमें भिन्न भिन्न प्रकारका जल वायु है। बेलिउ साहब लिखते हैं,—"गजनी, काबुल और उत्तर-पूर्वके देशोंमें भीषण शीत पड़ती है। कन्धार और दक्षिण पश्चिम अफगानस्थानमें उसका ज़ोर उतना अधिक नहीं है। इन स्थानोंके मैदानोंमें और छोटे पहाड़ोंपर कभी कदाचित ही बरफ पड़ती है। जब पड़ती है, तो जमी नहीं रहती, शीघ्र ही पिघल जाती है। जैसा शीतका आधिक्य है, वैसा ही गरमीका भी। काबुल और गजनीकी गर्मी, चारो ओरके तुषारधवलित गिरिशृङ्गोंसे टकराकर आते हुए समीरणसे बहुत कुछ शान्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त वहां भारतकीसी कड़ी धूप भी नहीं पड़ती। समुद्रसे उठकर हिन्दुस्थान पार करके दक्षिण पूर्व्वसे आये हुए बादल भी कभी कभी पानीके छींटे दे दकर इन स्थानोंको ठण्डा किया करते हैं। किन्तु ठण्डक पहुंचानेके यह कुल सामान एक ओर, और खुरासानकी जलती बलती लू एक ओर है। खुरासान देशकी जलवायु बहुत गर्म है। उसके नाम हीसे वहांकी उष्णता प्रकट होती है। खुरासान

असलमे दुरानिस्तान वा "मासखनिवास"का अपभ्रंश है। वहां गर्दसे भरी हुई आंधियां चला करती हैं। कभी कभी समूम नाम्नी प्राणनाशकारी आंधी भी बहने लगती है। ऊंचे पहाड़ो, और सूखे रेगस्थानकी तपनसे वहांकी गर्मी बहुत बढ़ जाती है। बरसात नहीं होती। इसलिये न तो कभी ठण्डी हवा चलती है और न कभी झुलसी हुई पृथिवी शीतल होती है।

जरनलमे लिखा है,—"अफगानस्थानकी उपज कुछ तो भारतकीसी, कुछ योरोपकीसी और कुछ ख़ास उसी देशकी होती है। गेहूं, जव, बाजरा, मूङ्ग, उर्द, चना, मसूर, अरहर, और चावलके अतिरिक्त कहीं कहीं गन्ना तथा खजूर भी उत्पन्न होता है। रूई, देशके ख़रच लायक थोड़ीसी जगहने तय्यार कर ली जाती हैं। तम्बाकू देशभरमें उत्पन्न होता है। कन्धारका तम्बाकू बहुत अच्छा और रफ़्तनी लायक समझा जाता है। नगरोंकी इर्द गिर्द, चरस निकालनेके लिये, सटरकी खेती की जाती है। कितने ही ज़िलोंमें जलाने, पाक प्रस्तुत करने और औषधमे डालनेके तेलके लिये रेंडी और तिल अधिकतासे उत्पन्न किया जाता है। यह हुई भारतकीसी उपजकी बात, अब युरोपकीसी उपजका हाल सुनिये। सेव, नास्पाती, बादाम, जर्दालू, खिड़ी, बेर, शाहालू, किशमिश, कागजीनीबू तुरञ्ज, अङ्गूर, इञ्जीर और शहतूत यह सब फल भी उत्पन्न होते हैं। यह बड़ी सावधानीके साथ उत्पन्न किये जाते हैं। इङ्गलण्डकी अपेक्षा घटिया होनेपर भी अन्य स्थानोंकी अपेक्षा बढ़िया होते हैं। इन सब सूखे वा

मकसूद स्थानमें सुरमा मिलता है। कावार देशके भील जिलेमे जस्ता मिलता है। हिरात और हजारा देशके पिर किसरी स्थानमें गन्धक मिलता है। पिरकिसरीमें नौसादर भी मिलता है। कन्धारके मैदानोंमें खड़िया मट्टी मिलती है। जरमत और गजनीके समीप कोयला मिलता है। अफगान स्थानके दक्षिण पश्चिम प्रदेशोंमे शोरा बहुतायतसे मिलता है। वदखशा सीमाके समीप चाल स्थानमें नमककी चट्टान है।

अफगानस्थानमे भिन्न भिन्न प्रकारका जल वायु है। वेलिउ साहब लिखते है,— गजनी, काबुल और उत्तर-पूर्वके देशोंमे भीषण शीत पड़ती है। कन्धार और दक्षिण पश्चिम अफगान स्थानमे उसका जोर उतना अधिक नहीं है। इन स्थानोंके मैदानोंमे और छोटे पहाड़ोंपर कभी कदाचित ही बरफ पड़ती है। जब पड़ती है, तो जमी नहीं रहती, शीघ्र ही पिघल जाती है। जैसा शीतका आधिक्य है, वैसा ही गरमीका भी। काबुल और गजनीकी गरमी, चारो ओरके तुषारधवलित गिरिशृङ्गोंसे टकराकर आते हुए समीरणसे बहुत कुछ शान्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त वहा भारतकीसी कड़ी धूप भी नहीं पड़ती। समुद्रसे उठकर हिन्दुस्थान पार करके दक्षिण पूर्वसे आये हुए बादल भी कभी कभी पानीके छींटे दे देकर इन स्थानोंको ठण्डा किया करते हैं। किन्तु ठण्डक पहुचानेके यह कुल सामान एक ओर, और खुरासानकी जलती बलती लू एक ओर है। खुरासान देशकी जलवायु बहुत गर्म है। उसके नाम हीसे वहाकी उष्णता प्रकट होती है। खुरासान

तरहके युरेशियन, १७ तरहके हिन्दुस्थानी और शेष सब युरेशियन और हिन्दुस्थानी हैं। एक टरटरेसरस और दूसरी बुलेनट खास इस देशकी चिड़िया हैं। अण्डा देनेके मौसममें भारत और अफरिकाके मरुस्थलकी कितनी ही चिड़िया अफगानस्थान जाती हैं। जाड़ेके दिनोंमें अफगानस्थान युरेशियन पक्षियोंसे भर उठता है। अफगानस्थानमें भारतवर्ष कैसे कितनी ही तरहके सांप और बिच्छू हैं। यहांके सांपोंमें कम और बिच्छूमें अधिक विष होता है। अफगानस्थानके मेंडक कुछ तो युरेशियन ढङ्गके और कुछ हिन्दुस्थानी ढङ्गके होते हैं। कछुए सिर्फ काबुलमें होते हैं। मछलियां बहुत कम हैं। जितनी हैं, उनमें हिन्दुस्थानी और युरेशियन इन्हीं दो क़िस्मोंकी हैं।

पलुए पशुओंमें ऊंट सुदृढ़ और मोटा ताजा होता है। भारतके दुबले लम्बे डगके ऊंटोंकी अपेक्षा बहुत अच्छा होता है और अत्यन्त सावधानीपूर्वक पाला जाता है। कहीं कहीं दो कोहानके भी ऊंट दिखाई देते हैं, किन्तु यह देशी नहीं होते। यहांके घोड़े भारतवर्ष भेजे जाते हैं। अच्छे घोड़े, मैमना, खुरासान और तुर्कमान आदि स्थानोंमें मिलते हैं। यहांके याबू सुन्दर और सुदृढ़ होते हैं। इनसे बोझ लादने और सवारीका काम लिया जाता है। यह लद्दू जानवरोंका काम बहुत अच्छी तरहसे कर सकता है, किन्तु घोड़ाका घोड़ेका काम नहीं। कन्धार और सीस्तानकी गायें बहुत दूध दिया करती हैं। अफगानस्थानका दूध, घी, दही और मक्खन बहुत अच्छा होता है। देशमें दो

ताजे फलोंकी बडी रफ्तनी होती है और देशके रफ्तनीके व्यापा रमें इन्हींका प्राधान्य है। इसके अतिरिक्त देशमें सर्व्वत्र ही नीबू घास और जुन्हरीका भूसा तय्यार किया जाता है। अफगानस्थानकी खास पैदावार पिश्ता, खाने लायक माजार और अमाफिजटगा है। इनकी भी रफतनी होती है।" इस देशमें खेती करनेके दो मौसम हैं। एक रबी और दूसरी खरीफ। रबीकी फसल खरीफतक तय्यार हो जाती है और खरीफकी फसल गर्म्मियोंतक।

अफगानस्थानमें यूसुफजईमें बन्दर, कन्धारमें चीता, और उत्तर-पश्चिमकी पहाडियोंमें शेर मिलते हैं। स्यार सर्व्वत्र होते हैं। वीरानोंमें भुण्डके भुण्ड भेडिये रहते हैं। पालतू पशुओंको उठा ले जाया करते हैं और अकेले दुकेले सवारों पर आक्रमण किया करते हैं। लकडबग्घे भी सर्व्वत्र होते हैं। इनका भुण्ड नहीं होता। यह कभी कभी बैलोंपर आक्रमण किया करते हैं और भेडें पकड ले जाते हैं। दक्षिणीय अफगानस्थानके युवक कभी कभी लकडबग्घेकी मांदमें निहत्थे घुसकर लकडबग्घे बांध लाते हैं। जङ्गलीकुत्ते और लोमडिया सभी जगह मिलते हैं। न्योला और ऊद भी मिलता है। भालू दो प्रकारके होते हैं। एक काला और दूसरा पीला। जङ्गली बकरिया, बारहसिङ्गा और हरिन भी मिलते हैं। निम्न हलमन्दमें जङ्गली सूअर मिलते हैं। रेग स्थानमें गोरखर मिलते हैं। चमगीदड और छछून्दर हर जगह होते हैं। गिलहरी जेरबोआ और खरगोश भी मिलते हैं। १ सो २४ तरहके पक्षी मिलते हैं। इनमें ६५

तरहके युरेशियन, १७ तरहके हिन्दुस्थानी और प्रेय सब युरेशियन और हिन्दुस्थानी हैं। एक टरटरेसरस और दुसरो बुकेनट खास इस देशकी चिडिया है। अण्डा देनेके मौसममें भारत और अफरिकाके मरुस्थलकी कितनी ही चिडिया अफगानस्थान जाती हैं। जाडेके दिनोंमें अफगानस्थान युरेशियन पक्षियोंसे भर उठता है। अफगानस्थानमें भारतवर्ष केसे कितनी ही तरहके साप और बिच्छू हैं। यहाके सापोंमें कम और बिच्छूमें अधिक विष होता है। अफगानस्थानके मेंडक कुछ तो युरेशियन ढङ्गके और कुछ हिन्दुस्थानी ढङ्गके होते हैं। कछुए सिर्फ काबुलमें होते हैं। मछलियां बहुत कम हैं। जितनी हैं, उनमें हिन्दुस्थानी और युरेशियन इन्हीं दो किस्मोंकी हैं।

पलुए पशुओंमें ऊट सुदृढ और मोटा ताजा होता है। भारतके दुबले लम्बे डग्गे ऊटोंकी अपेक्षा बहुत अच्छा होता है और अत्यन्त सावधानीपूर्वक पाला जाता है। कहीं कहीं दो कोहानके भी ऊट दिखाई देते हैं, किन्तु यह देशी नहीं होते। यहाके घोडे भारतवर्ष भेजे जाते हैं। अच्छे घोडे, मैमना, खुरासान और तुर्कमान आदि स्थानोंमे मिलते हैं। यहाके याबू सुन्दर और सुदृढ़ होते हैं। इनसे बोझ लादने और सवारीका काम लिया जाता है। यह लदुए जानवरोंका काम बहुत अच्छी तरहसे कर सकता है, किन्तु ग्रीष्मगामी घोडेका काम नहीं। कन्धार और मीस्तानकी गायें बहुत दूध दिया करती हैं। अफगानस्थानका दूध, घी, दही और मक्खन बहुत अच्छा होता है। देशमें दो

तरहकी बकरियां होती हैं। एक श्वेत और दूसरी काली। दोनो तरहकी बकरियोंकी पूछ बहुत मोटी और लम्बी चौडी होती है। वहांवाले इन्हें दुम्बा कहते हैं। दुम्बोंका बाल फारस और अब बन्दरकी राहसे युरोप जाता है। नोमाद जातिका धन दुम्बोंके गले हैं और भोजन उनका मांस। गर्मियोंमें बहुतस्थल दुम्बे हलाल किये जाते हैं। उनके मांसके टुकड़े नमकमें लपेटे जाकर धूपमे सुखा लिये जाते हैं। ऊंट तथा अन्यान्य पशुए पशुओंका मांस भी इसी तरहसे सुखा लिया जाता है। भेड़ें काली वा कृष्ण श्वेत रङ्गकी होती हैं। इनके ऊनसे शाल प्रभृति तय्यार किये जाते हैं। अफगानस्थानमे नाना प्रकारके कुत्ते होते है।

जरनलने लिखा है,—"अफगानस्थानमे भिन्न भिन्न जातिके लोग बसते हैं और नाना प्रकारकी भाषायें बोली जाती हैं। वहांके अफगानों और अरबोंकी भाषा 'पखतू' तथा 'पश्तू' है। यही भाषा अफगानी भाषा है। ताजीक और किजल बाशोंकी भाषा फारसी है। हजारा और कितनी ही जाति योंकी भाषा फारसीमिश्रित है। हिन्दकी वा हिन्दू और जाट, हिन्दुस्थानीभाषासे मिलती जुलती भाषा बोलते हैं। कुछ काश्मीरी और अरमनी भी काबुलमे जा बसे हैं, किन्तु इन लोगोंकी संख्या बहुत थोड़ी है।

"इनके अतिरिक्त कितनी ही और जातियां हैं, जिनकी उत्पत्तिका पता नहीं चलता। उनकी भाषा भी निराली है। मैं जहांतक अनुमान करता हूं, उनकी भाषा हिन्दीसे बहुत मिलती जुलती है और उसमें कहीं कहीं संस्कृत शब्द भी

पाये जाते हैं। इन जातियोंका बहुत बड़ा भाग काबुलप्रान्तके ऊंचे स्थानोंमें और हिन्दूकुश पर्व्वतमालाकी तराईमें बसता है। इनमें कुछ प्रधान जातियोंके नाम इस प्रकार हैं,—देगानी, लमघानी, साधु, कबल और नीमचाकाफिर। सम्भवत, यह सब जातियां पहले हिन्दू थीं, किन्तु पीछे मुसलमान बना ली गई। अफगानस्थानकी सम्पूर्ण जातियोंमें अफगान जाति सर्व्व प्रधान है। पहले तो उसकी संख्या अधिक है,—दूसरे, वही देशका शासन करती है।" इनसाइक्लोपीडिया ब्रटानिकामें लिखा है,—"भारतकी फौजके सुयोग्य अफसर करनेल मेकग्रेगरने अफगानस्थानवासियोंकी जनसंख्याका अन्दाजा लगानेकी चेष्टा की थी। उनकी जांचमें अफगानस्थानकी जनसंख्या ४६ लाख एक हजार है। इसमें अफगान तुरकस्थानवासी, चितालवासी, काफिर और यूसुफजईके स्वतन्त्र लोग सभी शामिल हैं। करनेल साहबके अन्दाजेका नकशा देखिये,—

ईमाक और हजारा	४००,०००
ताजीक	५००,०००
किजलबाश	१५०,०००
हिन्दू और जाट	५००,०००
कोहस्थानी इत्यादि	२००,०००
अफगान, पठान और चालीस हजार स्वतन्त्र यूसुफजई इत्यादि	२,३५६,०००
कुल	४,१०८,०००

अफगान जातिका वर्णन आरम्भ करनेसे पहले हम वहाकी कुछ प्रधान जातियोंकी बात कहते हैं। अफगानोंके उपरान्त "ताजीक" नाम्नी बडी और जबरदस्त जाति है। यह प्रधानत देशके पश्चिमीय भागमें बसती है। ईरानी और देशकी आदि जाति समझी जाती है। इन लोगोंकी भाषा और आजकलकी फारसी भाषामें थों होसा प्रभेद है। पोशाक, व्यवहार चेहरामुहरा अफगानोंसे मिलता जुलता है। इनमे और अफगानोसे एक प्रत्यक्ष प्रभेद यह है, कि यह लोग एक जगह रहकर खेती बारी और नाना प्रकारके रोजगार करते हैं, किन्तु अफगान एक जगह स्थिर होकर रहना नहीं जानते। इस जातिके कितने ही लोग फौजमें भरती हैं। अफगान सैन्यका बडा अश इन्हीं लोगोंसे बना है। 'किजलबाश' जाति भी ताजीकोंकी तरह ईरानी है। किन्तु इन दोनो जातियोंकी भाषामें थोडासा प्रभेद है। किजलबाश जातिकी उत्पत्ति फारसकी मुगल जातिसे हुई है। यह लोग आजकलकी फारसी भाषा बोलते हैं। कहते है कि सन १७३७ ई०मे इस लोग नादिर शाहके साथ फारससे काबुल आये थे। उस समय शाहने इस लोगोको काबुलमे बसा दिया था। यह जाति सुन्दर और मजबूत है। अफगानस्थानके रिसाले और तोपखानेमें बहुसख्यक किजलबाश नौकरी करते हैं। "हजारा" जाति तुरकीभाषा मिश्रित फारसीभाषा बोलती है। यह अपनी सूरतसे तातार-वशकी जान पडती है। इन लोगोंकी कोई भी गुआन बसती नहीं है। यह स्वच्छ देशमे फैले हुए है और हि-

मत मजदूरी करके पेट पालते हैं। हजारा पर्वतमालामें रहते हैं और शीतकाल उपस्थित होनेपर, झुण्डके झुण्ड नौकरी या मिहनत मजदूरीकी तलाशमें निकलते हैं। हजारा जातिके लोग बहुत ही गरीब हैं। सिर्फ गजनीके समीप इस जातिके कुछ लोग जमीन्दारी करते हैं। "हिन्दू" और "जाट" भी अफगानस्थानकी प्रधान जाति है। अफगानस्थानके अधिकांश हिन्दू क्षत्रिय हैं और वहां "हिन्दकी"के नामसे प्रख्यात हैं। यह व्यवसाय करते हैं और अफगानस्थानके बड़े बड़े नगरोंसे लेकर किसी भी गिनती लायक देहातकमें मौजूद हैं। देशके लेनदेनका रोजगार इसी जातिकी मुट्ठीमें है। यह अफगानोंको रुपये पैसेकी सहायता दिया करती हैं और अफगान इनको यत्नपूर्वक अपने देशमें रखते हैं। हिन्दू अफगानस्थानमें खूब निश्चिन्तताके साथ रहनेपर भी कई बातोंमें तकलीफ पाते हैं। उनपर "जजिया" नामक टिकस सिर्फ इसलिये लगा हुआ है, कि वह मुसलमान नहीं, हिन्दू हैं। वह अपना कोई भी धार्मिक उत्सव खुल्लमखुल्ला नहीं कर सकते, न काजीके सामने गवाही देने पाते हैं। घोड़ेकी सवारी भी नहीं करने पाते, यदि कर सकते हैं, तो नङ्गी पीठवाले घोड़ेपर। हिन्दू इतने कष्ट सह कर भी चार पैसेके रोजगारकी लालचसे वहां पड़े हुए हैं। दूसरी बात यह है, कि सिर्फ अपने धर्मकी बदौलत इतनी तकलीफें सहा करते हैं, किन्तु धर्म नहीं छोड़ते। वास्तवमें काबुलके हिन्दुओंके लिये यह कम प्रशंसाका विषय नहीं है। "जाट" सभी जातिके मुसलमान हैं। उनकी उत्पत्तिका

हाल अज्ञात रहनेपर भी वह देशके आदि निवासी समझे जाते हैं। उनका रङ्ग पक्का और चेहरा सुन्दर होता है। काबुलके उस भागमें कितनी ही जातियां रहती हैं। उनका हाल बहुत कम मालूम है। कारण, वह अपने पड़ोसियोंसे भी मिलना पसन्द नहीं करतीं। उनमेंकी बहुतसी जातियां अपने गल्ले लिये पहाड़ों पहाड़ों फिरती रहती हैं। कुछ जातियां स्थायी रूपसे बसकर कृषिकार्य्य करती हैं। कुछ अफगान सैन्यमें भरती हैं और कुछ अमीरों रईसोंकी गर्ले-बानी, खिदमतगारी प्रभृति नौकरियां करती हैं। यह सब जातिया खास अपनी भाषा बोलती हैं और एक जातिकी भाषा दूसरीकी भाषासे नहीं मिलती। इन जातियोंके लोग अपनेको कहते तो मुसलमान हैं, किन्तु अपना धर्म्मकर्म्म बिलकुल नहीं जानते। जान पड़ता है, कि यह सब जातियां पहले हिन्दू थीं।

अब हम देशकी सर्व्वप्रधान और राजा जाति "अफ-गानों"की बात कहते हैं। ऊपर उनकी गणना लिख चुके हैं। इस जातिकी चालचलन, पोशाक, रीति व्यवहार आदि सभी बातें देशकी अन्यान्य जातियोंसे अलग हैं। यह अपनी निजकी भाषा 'पश्तो' वा "पख्तो" बोलती है। असलमें यह भाषा विदेशियोंके लिये बहुत कठिन है। भाषाका विचार किया जावे, तो उसमें फारसी, अरबी और रूस्तान शब्द मिलेंगे। इससे जान पड़ता है, कि इसकी उत्पत्ति इन्हीं तीनों भाषाओंसे हुई है। इस भाषाकी बोली है, किन्तु इसके अक्षर नहीं हैं। अरबी अक्षरोंको कुछ

और टेढ़ा सीधा करके लिख ली जाती है और इन्हीं अक्षरोंमें इसका साहित्य है। अफ़ग़ान भाषाका व्याकरण अत्यन्त सरल है। किन्तु इसकी क्रिया वा फ़ेल बहुत कठिन है। कारण, पश्तोकी क्रिया "हिबरू" भाषाकी क्रियाके अनुसार बनी हुई है। पश्तो भाषामें कुछ ऐसे स्वर हैं, जैसे एशियामात्रकी भाषाओंमें नहीं मिलते। ऐसे, स्वर लिखनेके लिये अरबीके अक्षर नये ढङ्गसे तोड़े मरोड़े गये हैं। यह स्वर किसी कदर सस्कृतके मिले हुए शब्दके स्वरसे मिलने जुलते हैं। कानोंको इतने विचित्र जान पड़ते हैं, कि जल्द निकलते नहीं,—उनमें बसे रहते हैं।

अफ़ग़ान जातिके दो भाग हैं। एक तो वह जो सपरिवार और गल्लोंके साथ अच्छी अच्छी चरागाहें और रमणीक स्थान ढूंढता हुआ, इधर उधर भटकता फिरता है। दूसरा वह, जो एक जगह जमकर बसा हुआ और खेती बारी अथवा अन्यान्य चलते धन्धोंमें लगा हुआ है। पहले तरहके खानाबदोश अफ़ग़ानोंकी जातिको नोमाद कहते हैं। यह काबुल प्रान्त और खुरासान प्रान्तमें बसती है। यह जाति झगड़े बखेड़ोंसे बचती हुई शान्तिपूर्वक समय काटा करती है। लेकिन कभी कभी भीषण रक्तपात भी कर बैठती है। यह जाति खेती नहीं करती। सिर्फ़ अपने गल्लेकी रक्षा करती और उन्हींकी बदौलत अपना जीवन निर्वाह करती है। खूब तन्दुरुस्त और मिहनती होती है। बहुत परहेजके साथ रहती है। साथ साथ अज्ञान और शक्की भी होती है। मवेशी चराने और सड़कोंपर डाके

डालनेमें कमाल रखती है। सरलहृदय होती और अपने घर आये अतिथिका सत्कार करती है। इसकी अतिथिसेवा देशप्रसिद्ध है। किन्तु इसका व्यवहार उसके घर वा पड़ावके भीतर ही होता है। जब अतिथि उसके पड़ावसे बाहर निकल जाता है, तो सोनेकी चिड़िया या लूटका शिकार समझा जाता है। अफगान कुछ देर पहले जिस अतिथिको आश्रय और भोजन देते हैं,—कुछ देर बाद, सड़कपर, उसीको लूट लेते और मार भी डालते हैं। नौमाद जाति काबुल सरकारको अपने अपने सरदारोंकी मारफत राजकर भेजा करती है। यह जाति अफगान सैन्य और मिलिशियामें भी भरती है। इसके अलावा शान्तिके समय काबुल सरकारसे बहुत कम सम्बन्ध रखती है। फिर भी अपने अपने सरदारोंके अधीन रहती है, और सरदार काबुल सरकारकी आज्ञा प्रतिपालन किया करते हैं। जातिके बड़े बड़े झगड़े सरदार मिटाया करते हैं, छोटे छोटे झगड़ोंका निबटेरा मुल्ले काजी कर दिया करते हैं।

यह हुई खानाबदोश अफगानोंकी बात। अब नगरवासी अफगानोंका हाल सुनिये। खानाबदोशोंकी अपेक्षा इन लोगोंकी संख्या अधिक है। अफगान फौजमें यही लोग अधिक हैं। इस जातिके प्रायः समस्त अफगान जमीन्दार हैं। सिवा फौजी नौकरी और खेती बारीके दूसरा काम नहीं करते। व्यापार करते लजाते हैं। लाखों अफगानोंमें जो गिनतीके अफगान रोजगार करते हैं, वह स्वयं रोजगारके समीप नहीं जाते, नौकरोंसे कराते हैं। अफगान खूबसूरत और मजबूत होते

हैं। स्वदेशमें भांति भांतिकी कठिनाइयां बरदाश्त कर सकते हैं। शिकार और घोड़ेकी सवारीके बहुत शौकीन होते हैं। बन्दूक और ढेलेसे बहुत अच्छा निशाना लगाते हैं। प्रसन्नवदन और आह्लादित रहते हैं। उनमें अय्याशी खूब फैली हुई है। विदेशियोंके सामने बहुत घमण्ड दिखाते हैं। अफगान सुन्नी सम्प्रदायके मुसलमान हैं।

मध्यश्रेणी वा निम्नश्रेणीके अफगानोंकी पोशाक तो वही है, जो इस देशमें आनेवाले व्यापारी अफगानोंकी होती है। वहांके रईसोंकी पोशाकका भी ढङ्ग ऐसा ही होता है। फर्क इतना है, कि इनकी पोशाकका कपड़ा मोटा और उनकी पोशाकका पतला होता है। रईस और मध्यश्रेणीके लोग चुगा पहनते हैं। मध्यश्रेणीके लोगोंके लिये यह कपड़ा भेड़के अच्छे ऊन अथवा ऊंटके रूयें से तय्यार किया जाता है। चुगा अफगानोंकी जातीय पोशाक है। बड़े बड़े रईस शालका चुगा पहनते हैं। अफगानोंका कमरबन्द १६ से लेकर बीस फुटतक लम्बा और कोई चार फुट चौड़ा होता है। रईस लोग शालदोशालोंसे कमर कसते हैं, मध्यश्रेणी वा निम्नस्थितिके लोग सूती चादरोंसे। कमरबन्दमें अफगानी "छुरा" तथा एक वा अनेक पिस्तौलें लगी होती हैं। अफगान कभी कभी ईरानी पेशकब्ज भी कमरसे लगा लेते हैं। अपने शिरपर पहले कुलाह रखते हैं और कुलाहकी गिर्द पगड़ी र पेटते हैं। रईसोंकी पगड़ी कीमती और अन्य श्रेणीवालोंकी साधारण होती है। अमीर लोग चमड़े, ऊन और कपड़ेका, तथा सर्वसाधारण सिर्फ चमड़ेका जूता पहनते हैं। अफगान जातिकी उच्चकुलकी रमणीयां भीतर

बेनियन वा फतुद्दीसा एक तङ्ग वस्त्र पहनती हैं। उसपर एक ढीलाढाला चौडी बाहोंका कुरता पहनती हैं। यह कुरता रेशमी सुत्थनपर झूलता रहता है। साधारणत: रेशमी रूमाल शिरपर बांधती हैं। रूमालके दो सिरे ठुड्डीके पास आपसमें बांध देती हैं। कभी कभी ऊनी शाल कन्धोंपर डाल लिया करती हैं। जब बाहर निकलती हैं, तो श्वेत वा नीले रङ्गका बुरका पहन लेती हैं। इससे उनका सर्व्वाङ्ग ढक जाता है। सिर्फ आखें खुली रहती हैं। कोई कोई उच्च-कुलकी ललना बाहर निकलनेपर मुलायम मोजे और स्लिपर जूते पहनती हैं।

अफगान जातिकी उत्पत्तिके विषयमें नैरङ्गे अफगानमें इस तरहसे लिखा है,—"ऐसा नियम है, कि जबतक कोई जाति राजनीतिक गौरव प्राप्त नहीं करती, तबतक उसकी उत्पत्तिके विषयमें बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। इस तरहकी कितनी ही जातियोंमें अफगान भी एक जाति है, जिसकी उत्पत्ति जाननेका खयाल सैकडों सालतक किसी ऐतिहासिकको नहीं हुआ। यह खयाल हुआ तो उस समय, जब ईरानमें सफवि योंका घराना और भारतवर्षमें मुगलशासनका सितारा ऊंचाई-पर चमक रहा था। कन्धारका सूबा, ईरान और अफगान स्थानमें लडाई झगडेका कारण बना हुआ था। उस समय अफगान जाति इतनी शक्तिशालिनी हो गई थी, कि वह जिस राजाको अपना राजा मानती, उसीका प्रभाव सम्पूर्ण अफगान स्थानपर फैलता था। उस जमानेमें केवल, अफगानस्थान हीमें झगडे फिसाद नहीं हुआ करते थे, वरच अफगान जातिने

विषयमे भी झगडा पडा हुआ था। भारतके मुगल सम्राट जहांगीरके शासनकालमें ईरानके राजदूतने कहा था, कि अफगान दैत्य वंशोत्पन्न है। उसने प्रमाणमे एक किताब दिखाई। उसमें लिखा था, कि जुहहाक बादशाहको किसी पाश्चात्य देशमे कुछ सुन्दर स्त्रियोंके राज्य करने और लूट तागतका पेशा करनेकी खबर मिली। जुहहाकने एक बहुत बडी फौज उस देशपर अधिकार करनेके लिये भेजी। घोर युद्ध हुआ। स्त्रियां जीतीं जुहहाककी फौज परास्त हुई। इसके उपरान्त जुहहाकने नरीमानके सेनापतित्वमें एक बडी फौज स्त्रियोंके देशमे भेजी। इसवार जुहहाककी सैन्य जीती। स्त्रियोंने एक सहस्र क्वारी लडकियां जुहहाक बादशाहके लिये देकर शाही फौजसे सन्धि कर ली। वापसीके समय एक पर्व्वतके समीप नरीमानने डेरा डाला। रातको एक विशालाकार दैत्य पर्व्वतसे निकला। इसको देखकर बादशाही लशकर भागा। दैत्य उन स्त्रियोंके पास रहा। भागी हुई फौज जब फिर उस जगह वापस आई, तो उसने स्त्रियोंको गर्भिणी पाया। यह बात जुहहाकको मालूम हुई। उसने आज्ञा दी, कि उन स्त्रियों को उसी पर्व्वत और वनमे रहने देना चाहिये, वह यदि नगरमे आवेंगी, तो उनके सन्तान नगरवासियोंको कष्ट पहुचावेंगे। उन स्त्रियोंसे जो लडकेवाले हुए, उन्हींकी अफगान जाति बनी।

"ईरानके राजदूतकी यह बात सुनकर खानेजहान लोदीने कुछ आदमियोको अफगानोंकी उत्पत्ति जाननेके लिये अफगानस्थान भेजा। उन लोगोंको जाचसे जान पडा, कि अफगान

याकूब पैगम्बरके लड़के यहूदाके वंशसे हैं। खानेजहान लोदीने इस जांचपर अफ़गानस्थानका एक इतिहास लिखा। उसमें ईरानी राजदूतका खण्डन हो जानेपर भी अफ़गान जातिकी उत्पत्तिका यथार्थ निर्णय नहीं हो सका। इसमें यहांतक लिखा गया है, कि कैस अब्दुररशीद एक मनुष्यका नाम था। वह मदीनेमें मुसलमान हुआ। वहीं उसने मुसलमानोंके बहुत बड़े सेनापति खालिद बिन वलीदकी कन्या मुसम्मात सारासे विवाह किया। इस कन्यासे तीन पुत्र उत्पन्न हुए। यही तीनो अफ़गानोंके पूर्व पुरुष हैं। किन्तु पुस्तकमें यह नहीं लिखा है, कि कैस अब्दुररशीद मुसलमान होनेसे पहले किस जातिका मनुष्य था।"

नेरङ्गे अफ़गानमें जो बात अधूरी छोड़ दी गई, बेलिउ साहब अपने जरनलमें उसीको पूरी करते हैं। वह भी कैसको अफ़गानोका आदि पुरुष बताते हैं और अफ़गानस्थानके सात प्रामाणिक इतिहासोंके आधारपर कहते हैं, कि कैस यहूदी था। यहूदीसे वह मुसल्मान हुआ। बेलिउ साहबने अपनी इस बातके प्रमाणमें बहुतसी बातें कही हैं। जिन्हें स्थानाभाववश हम प्रकाश नहीं कर सकते। अफ़गान भी कहते हैं, कि मुसलमान होनेके पहले हम यहूदी थे। इम्पीरियल गज़ेटियरमें भी अफ़गान यहूदियोंकी औलाद कहे गये हैं। जो हो, सम्भव है, कि अफ़गान यहूदी ही हों और घूमते घामते अफ़गानस्थान आकर बसे हों।

अफ़गानस्थानके साहित्यके विषयमें अधिक कहना नहीं है। कारण, अफ़गान बड़ी ही अपढ़ जाति है। काजी मुल्लाओं

को छोड़कर ऐसे बहुत कम लोग हैं, जो अपने देशकी भाषा लिख पढ सकते हों। अफगानोंकी भाषा पश्तोमें गिनती की किताबें हैं। अफगानस्थानमें जो कुछ साहित्य मौजूद है, वह फारसी भाषाका है। चिट्ठी पत्री, व्यापार सम्बन्धी लिखा पढी, सरकारी काम प्रभृति सब फारसी भाषामें किये जाता है। पश्तो साहित्यमें सिर्फ धर्म्म, काव्य, कहानियां और इतिहासकी कुछ पुस्तकें हैं। ग्रन्थकर्त्ताओंकी गणना बहुत थोड़ी है और उनको किताबें थोड़े से आदमी पढते हैं।

अफगानस्थानमें नाव चलाने लायक नदी नहीं हैं और गाड़ियां भी नहीं हैं। इसलिये वहांकी पहाड़ी राहोंपर लदुए जानवर, विशेषत ऊंट माल ले आने और ले जानेका काम किया करते हैं। कारवान और काफिले सौदागरी माल लेकर इधर उधर आते जाते हैं। व्यापारकी प्रधान राहें इस तरह अवस्थित हैं,—(१) फारससे मशहद होती हुई हिराततक (२) बुखारेसे मर्व होती हुई हिराततक (३) उसी जगहसे करशी, बलख और खुलम होती हुई काबुलतक, (४) पञ्जाबसे पेशावर और खयबरके दर्रेसे होती हुई काबुल तक, (५) पञ्जाबसे घावालारी दर्रेसे होती हुई गजनीतक (६) सिन्धसे बोलन दर्रेसे होती हुई कन्धारतक। इसके अतिरिक्त पूर्व्वीय तुरकस्थानसे चित्राल होती हुई जलाला बादतक और पेशावर होती हुई दीरतक भी एक राह है। किन्तु यह नहीं मालूम, कि इस राहसे काफले चलते हैं, या नहीं। अफगानस्थानसे सिन्धकी ओर ऊन, घोड़े, रेशम, फल, madder और assafoetida जाते हैं। भारतवर्षसे

अफगानस्थानमें पेशावरकी राहसे रुई ऊन और रेशमी कपड़े जाते हैं। इनके अलावा रूस और इङ्गलण्डकी भी कितनी ही चीजें अफगानस्थानमें खपती हैं। सन १८६२ ई०में अफगानस्थान और भारतवर्षमें जो आमदनी और रफतनी हुई, उसका नकशा इस प्रकार है,—

	भारतमें आया	भारतसे गया।
पेशावरकी राहसे	२३४७६६५	१८०६६४५
घावालरी दररेकी राहसे	१६५००००	२४६००००
बोला दररेसे	४७०८०५०	२८३३८०
	कुल—४७७,७४५	४५५३०७५

अफगानस्थान काबुल, जलालाबाद, गजनी, कन्धार, हिरात और अफगानतुर्कस्थान प्रदेशमें विभक्त है। काबुल, गजनी, कन्धार और हिरातकी बात यथासमय कहेंगे। प्रत्येक प्रधान प्रधान प्रदेशोंके नगरोंका हाल नीचे प्रकाश करते हैं,—

काबुल नदीकी उत्तर ओर समुद्र तलसे १ हजार ९ सौ ४६ फुटकी ऊंचाईपर एक लम्बे चौड़े मैदानमें जलालाबाद बसा है। यह सड़कके फासलेसे काबुलसे नौ मील और पेशावरसे ९१ मीलके फासलेपर अवस्थित है। जलालाबाद और पेशावरके बीचमें खैबर और उसके पासके दर्रे हैं। जलालाबाद और काबुलके बीचमें जगदलक और खुर्द काबुल आदि दर्रे हैं। सन १८४२ ई०में भालक साहब नामक पहले अङ्गरेज इस स्थानतक गये थे। शहरकी शहरपनाह ७ हजार एक सौ गजमें फैली हुई है। शहरमें कोई ३ सौ मकान और कोई २ हजार मकीन होंगे। शहरपनाहके

बाहर बागोंकी चहारदीवारियां हैं। इनकी आडसे किसी आक्रमणकारी शत्रुका आक्रमण रोका जा सकता है। पालक साहबने शहरपनाह तोड दी थी, किन्तु वह फिर बना ली गई। जलालाबादकी गिर्द कोई २५ मीलकी लम्बाई और तीन वा चार मीलकी चौडाईमें खेती होती है। यहां चारो ओर जल मिलता है। जलालाबादप्रदेश कोई ८० मील लम्बा और ३५ मील चौडा है। जलालाबादके पार्श्ववर्ती दर्रोंमें अनेकानेक टूटे फूटे बुद्धमन्दिर मौजूद हैं। बाबर बादशाहने यहां कितने ही बाग लगवाये थे और उन्होंने लगाये "जलालुद्दीन" बागके नामपर शहरका नाम जलालाबाद पडा। (२) काबुलसे ३० मील उत्तरपूर्व कोहदामनमें इस्तालीफ नाम्नी बसती है। सन १८४२ ई०मे अङ्गरेजसेनापति मेकासरिलने यह गाव बरबाद कर दिया था। इसके बाद फिरसे बसा। यह चित्ताकर्षक स्थान अत्यन्त मनोरम है। पहाडकी तराईमे एक स्वच्छ जलस्रोत किनारे नगरकी बसती है। बसतीकी चारो ओर अङ्गूरकी टट्टियां और उत्तमोत्तम फलोंके बाग हैं। बसतीके ऊपर हिन्दूकुश पर्वतकी बरफसे ढकी हुई चोटी अति शोभाको प्राप्त होती है। प्रत्येक नगरनामीके पास एक एक बाग है और प्रत्येक बागमें बुर्ज बना हुआ है। फलोंकी फसलमें लोग फल खानेके लिये घर छोडकर बागमें जा बसते हैं। बसती और उसके निकटवर्त्ती गांवोंमे कुल १८ हजार मनुष्य बसते हैं। (३) चारीकार नगरमे कोइ पांच हजार मनुष्य बसते है। यह इस्तालीफसे बीस मील उत्तर और कोहदामनकी

छोरपर बसा हुआ है। बारां नदीकी गोरबन्द शाखासे इसमे जल पहुचता है। इसी जगह बखतरिया, इस्लिराव और पिलवीकी राहें मिलकर तिराहा बनाती है। इसी जगहसे तुरकस्थानको काफले जाते हैं और यहीं कोह स्थानका गवरनर रहता है। यहां अङ्गरेजी फौजका कबजा था। सन १८४१ ई०मे काबुलके गदरके जमानेमें यहाकी अङ्गरेजी फौज काबुल चली, किन्तु राह हीमे नष्ट कर दी गई। फौजका सिर्फ एक सिपाही जान लेकर काबुल पहुंचा था। (४) कालाते गिलजई प्रदेशकी कोई खास बसती नही है। प्रदेशके नामका सिर्फ एक किला तारनक नदीके दाहने किनारेपर बना है। यह कान्धारसे ८६ मीलके फासलेपर और समुद्रवत्तसे ५ हजार ७ सौ ७६ फुटकी ऊंचाईपर बना है। सन १८४२ ई०मे इसपर भी अङ्गरेजोंने अधिकार कर लिया था। (५) गिरिशक भी किला ही है, किन्तु नाममात्रके लिये इसके साथ एक बसती भी लगी हुई है। यह किला बडे मौकेका है। हिरात और कान्धारके बीचकी शाहराह, कितनी ही छोटी छोटी राहें और हलमन्द नदीका गर्मियोंके मौसमका घाट इसकी मारपर हैं। सन् १८३६ ई०के अगस्त महीनेसे सन् १८४२ ई०तक इसपर अङ्गरेजोंका कबजा रहा। काबलेके न्यासरी नौ महीने बडी मुशकिलसे कटे थे। [६] फरह नगर फरह नदीके किनारेपर हिरात कान्धारकी सडक किनारे सीस्तान स्वातमें बना है। हिरातसे १ सौ ६४ मील और कान्धारसे २ सौ ३६ मील दूर है। शहरकी गिर्द बुर्जदार शहरपनाह है और शहरपनाहके

नीचे चौडी और गहरी खाई है। प्रयोजन होनेपर खाई पानीसे भर दी जा सकती है। खाईपर पुल पडा रहता है। शहर लम्बा है। इसके दो फाटक हैं। लडाई भिडाईके लिये मौकेकी जगह है, किन्तु यहाका जलवायु खराब है। शह रमे गिनतीके मकान है। इसको शाह अब्बास और नादि-रने यथासमय बरबाद किया था। सन् १८३७ ई०मे कोई ६ हजार नगरवासी नगर छोडकर कान्धार बसाने चले गये थे। (७) सबजार नगरका नाम फारसीके "असेजार" शब्दका अप भ्रंश है। यह नगर हिरातसे ६५ और फरहसे ७१ मीलके फासलेपर है। सन् १८४५ ई०में नगरमें कोई एक सौ मकान और एक छोटासा बाजार था। नगरका बडा भाग वीरान पडा था। इससे जान पडता है, कि किसी जमानेमें वह बहुत आबाद रहा होगा। कितनी ही नहरें हारुत नदीसे नगरमे पहुचाई गई हैं। यह नहरें शत्रुकी चढाइमें बहुत बाधा उपस्थित कर सकती है। [८] हिरातकी पूर्व ओर गोर प्रदेशमें जरनी छोटासा नगर है। गोर प्रदेशके गोरीद वंशने कई पुश्ततक अफगानस्थानपर राज्य किया था। फेरि यर साहबके कथनानुसार जरनी गोरकी पुरानी राजधानी है। शाहरपनाहकी मेहराब पहने हुए जरनीके खण्डर उसकी भूल पूर्व विशाल बसतीका पता बताते हैं। यह घाटीमे बसा है और कितने ही घुमावदार जलस्रोत इसको स्थान स्थानसे चूमते हैं। सन् १८४५ ई०में इसकी जनसंख्या कोई बारह सौ थी। अधिकांश नगरवासी फारसकी प्राचीन जातिके हैं। [६] कुन्दज प्रदेश अफगान तुरकस्थानमे है। इसके पूर्व

बदरवशां, पश्चिम खुलुम, उत्तर अच नदी और दक्षिण हिन्दू कुश है। कुन्दुनके जिले इस प्रकार हैं,—[क] कन्दज पाच वा छः सौ छोटे छोटे कच्चे मकानोंकी बसती है। बसतीके समीप कुछ बाग और खेत हैं और एक किनारे, टीलेपर एक कच्चा किला है, (ख) हिरातेइमाम अच नदीके किनारे एक उपजाऊ भूभागपर बना है, यह बसती भी कन्दजकीसी ही है, सिर्फ यहाका किला अपेक्षाकृत अच्छा है और उसकी चारो ओर दलदलकी खाई है, [ग] बागलान और [घ] गोरीसुरखाब नदीकी आर्द्र घाटीमें बसे हुए हैं, [ङ] दोशी बसती इसी घाटीमें अन्दराब नामक जलस्रोतके किनारे बसी है, [च] किलगाई और खिनजान बसतिया इसी नदीके छोरपर बसी हुई हैं, [छ] अन्दराव बसती हिन्दूकुश पर्व्वतके तल और खावाक दररेके समीप बसी हुई है। मशहूर है, कि दशवीं शताब्दिमें परयानमें चादीकी खानि रहनेकी वजहसे यह बसती बहुत गुलजार थी, (ज) खोस्त बसती अन्दराज और कन्दजके बीचमें बसी हुई है। बादशाह बाबर और उनके वंशधरोंके समय यह बसती बहुत मशहूर थी, (झ) नारिन और इशकिमिश बस्तिया बघलानके पूर्व्व, बघलान नदीके उद्गमपर और कन्दज नदीकी शोराब नाम्नी शाखापर बसी हुई है, [ञ] फरहङ्ग और चाल दोनो बसती बदरवशाकी सरहदपर बसी हुई हैं और इनका हाल विदेशी ऐतिहासिकोंको मालूम नहीं है, (ट) तालीकान बसती भी बदख्शांकी सरहदपर है। यह कन्दज और बदखशाकी राजधानी फैजाबादके बीचकी शाहराहपर बसी हुई हैं। अब यह गिरी

हुई दशामें हैं, किन्तु पुरानी और खूब मशहूर है। बसतीके समीप एक किला भी है। चङ्गेज खांने इसका घेरा किया था। कन्दजवाले मुरादबेगके शासनकालमें यह बदखशांकी राजधानी थी, (ङ) खानाबाद खान नदीके किनारे बसा है और किसी जमानेमें इस प्रान्तके रईसोंका ग्रीष्मनिवास था। [१०] खुलम प्रदेश कन्दज और बलखके बीचमें है। जहांतक मालूम है, इसके जिले इस प्रकार हैं;—[क] ताशकरधा वा खुलम बसती अच नदीके मैदानपर बसी है। इसकी चारो ओर जलसे सींचे हुए अच्छे अच्छे बाग हैं। इससे ४ मील दक्षिण कुछ गाव हैं। गावों और कसबेकी मिली जुली जनसख्या कोई १५ हजार है, (ख) हैबक बसती किसी कदर सुदृढ किलेकी गिर्द बसी हुई है, बसतीके मकान प्राय' गुम्बजदार और बेढङ्गे बने हैं। खुलम नदीकी घाटी यहां खुलती है। स्थान उपजाऊ है। नदीके दोनो किनारे सघन वृक्षोंसे ढके हैं। इसी जगह एक बुद्ध स्तूप है, [ग] खुलम नदीके सिरेपर खुर्रम और सरबाग नामकी दो बसतियां हैं। [११] बलख प्रदेशका बलख बहुत पुराना नगर है। नगरकी चारो ओर कोई बीस मीलतक खण्डर पडा हुआ है। भीतरी नगर ४ वा ५ मीलके घेरेकी टूटी फूटी शहरपनाहके भीतर बसा हुआ है। शहरपनाहके बाहर खण्डरोंमें भी कुछ लोग बसते हैं। सन् १८५८ ई०में अमीर दोस्त मुहम्मद खांका लडका, तुरकस्थानका गवरनर, अफजल खां अपनी राजधानी बलखसे तख्तपुल ले गया। तख्तपुल बलखसे ८ मील पूर्व है। इस, जिलेमें मजारेशरीफ भी

वर्णनयोग्य बसती है। वहांवाले कहते हैं, कि मजारेशरीफमें मुसलमान पैगम्बर मुहम्मदके दामाद अलोकी कब्र है। दूर दूरसे मुसलमान कबका दर्शन करने आते हैं और वहां साल साल बहुत बड़ा मेला लगता है। नाम्बरी नामक लेखकका कहना है, कि कब्रपर एक तरहके गुलाबके पेड़ हैं। इनकी रङ्गत और सुगन्धिको ससार भरके गुलाब नहीं पहुंचते। पहाड़के भीतर बलख नदीके किनारेके जिलोंका हाल अङ्गरेज ग्रन्थकारोंको मालूम नहीं है, [रा] आकचा बसती बलखसे ४० वा ४५ मील पश्चिम है। बसती छोटी होनेपर भी जल और मनुष्योंसे भरी पुरी है। बसती मोरचाबन्द है और उसमें एक किला भी है। (१२) चहारअकलीम वा चार प्रदेशके जिले इस प्रकार हैं,—(क शिबरघन बसतो आकचेसे २० मील पश्चिम है। बसतोमें कोई बारह हजार उजबक और पारसीवान बसते हैं। बसतीके मोरचाबन्द न होनेपर भी उसमें एक किला है। यह अच्छे अच्छे बागीचों और खेतोंसे घिरी हुई है। सिरीपुल बसतीसे यहां पानी आता है। कभी कभी सिरीपुलवाले पानी रोक देते हैं। इससे दोनो बसतियोंके रहनेवालोंमें युद्ध हो जाता है। यहांकी भूमि उपजाऊ और यहांके रहनेवाले दृढ़ तथा पराक्रमी हैं, [ख] अन्दखुई शिबरघनसे बीस मील उत्तर पश्चिम रेगस्तानमें है। बसतोमें, मैमना और सिरीपुलसे जल आता है। किसी जमानेमें यहां कोइ ५० हजार मनुष्य बसते थे। किन्तु सन् १८४० ई०में हिरातके यारमहम्मदके हाथसे ऐसी तबाह हुई, क आजतक न सुधरी, [ग] मैमना बसती बलखसे एक सौ

ाच मीलके फासलेपर और अन्दखुईसे ५० मील दक्षिण पश्चिम है। राजधानीके सिवा कोई दश गाव इसके समीप हैं। राज धानी और गांवोंकी मिली जुली जनसंख्या कोई एक लाख है। इस प्रान्तमें रोजगार और व्यापार खूब चलता है, (घ) मिरीपुल बसती वलखसे उत्तर पश्चिम और मैमनेसे पूर्व है। इसकी जनसंख्या मैमना जिलेकी अपेक्षा कुछ कम है। बसतीके दो तिहाइ मनुष्य उजबक हैं और शेषके हजारा।

प्राचीन इतिहास।

वेलिउ माइब जरनलमें लिखते हैं,—"आठवीं शताब्दिके आरम्भमें अफगानजाति इतिहासमें लिखी जाने लायक हुइ। उस समय यह गोर और खुरासानके पश्चिमीय किनारेपर बसती थी। इसी समय या इससे कुछ पहले अरबोंने अफ गान राज्यपर आक्रमण किया। उस समय अरबोंके एक हाथमें कुरान और दूसरेमें तलवार रहती थी। इसी सूरतसे उन लोगोंने कितने ही देशोंमें सरलतापूर्वक प्रवेश करके अपना धर्म प्रतिष्ठित किया था। असलमें उन लोगोंने अफगानोंको धर्म परिवर्तनके लिये उत्सुक पाया। थोडे ही समयमें जातिका बहुत बडा भाग मुसलमान बन गया।

"इस घटनाके दो शताब्दि बाद देशके उत्तरीय और पूर्वीय भाग—काबुलके वर्त्तमान प्रदेशोंपर उत्तर ओरसे तातार बादशाह

सुबुक्तगीनने आक्रमण किया। उसके साथ कट्टर मुसलमान तातार थे। उसने बिना विशेष कठिनाईके काबुलके प्राचीन शासनकर्त्ता हिन्दुओंको काबुलप्रान्तसे मार भगाया। सुबुक्तगीन काबुलमें जमकर बैठ गया और कुछ सालके उपरान्त सन् ६७५ ई०में उसने गजनी नगर बसाया और उसीको अपनी राजधानी बनाया। इसमें सन्देह नहीं,कि सुबुक्तगीनका अधिकार प्रतिष्ठित करनेमें अफगानोंने भी खासी सहायता दी होगी। कारण, एक तो वह लोग काबुलप्रान्तके किनारे नये नये आबाद हुए थे,—दूसरे, तातारोंकी तरह वह भी मुहम्मदी धर्मके अनुयायी थे। सन् ६६७ ई०में सुबुक्तगीनके मरनेपर उसका पुत्र महम्मद सिंहासनारूढ़ हुआ। उस समय बहुसख्यक अफगान उसकी फौजमें भरती हुए। महम्मदने जिस जिस ओर आक्रमण किया, उसी उसी ओर अफगान सैन्यने उसे बहुत सहायता दी। विशेषत भारतवर्षपर बारबार आक्रमण करनेमें अफगान सिपाहियोंने और ज्यादा सहायता पहुंचाई। अन्तमें अफगान सैन्य हीकी सहायतासे सन् १०११ ई०में महम्मदने दिल्लीपर कबजा कर लिया। महम्मदने अफगान सिपाहियोंको बहुत पसन्द किया। उसने बहुसख्यक अफगानोंको अफगानस्थानसे भारतवर्ष भेजकर वहां उनका उपनिवेश बनाया। रुहेलखण्ड, मुलतान और डेराजातमें अफगानोंके उपनिवेश बने। इन स्थानोंमें प्रवासी अफगानोंके वंशधर आज भी पाये जाते हैं।

"सन् १०२७ ई०में महम्मदकी मृत्यु हुई। तिग रिससे लेकर गङ्गा किनारेतक फैला हुआ महम्मदका लम्बा चौड़ा राज्य

उसके बेटे मुहम्मदके हाथ लगा। मुहम्मद नालायक था। उसने अपने जोड़ा भाई मसऊदके साथ झगड़ा किया। मसऊदने महम्मदको सिंहासनसे उतार दिया। इस प्रकार राज घरानेमें झगड़ा चला और मार्गोतक चलता रहा। अन्तमें लाहोरमें मुहम्मद नामे मनुष्यने सुबुक्तगीन घरानेके अन्तिम बादशाह खुसरो मलिकको हत्याकरके यह बादशाही घराना निर्वंश कर दिया। असलमें महम्मदकी मृत्यु के उपरान्त हीसे इस घरानेका पतन आरम्भ हुआ। उसी समयसे उसके फारस और भारतवर्षमें जीते हुए प्रदेश एक एक करके स्वतन्त्र होने लगे थे।

*गजनोका साम्राज्य कुल १ सौ ८८ साल जीया। इसकी उत्पत्तिके समय अफगान मातहत सिपाही बने। जैसे जैसे यह मरने लगा अफगान अपने शौर्य वीर्यके प्रतापसे उन्नत होते गये और थोड़े ही दिनोंमें सैनिक तत्त्वावधान करने योग्य बन गये। यह शक्ति वह अपने समरक्षेत्रमें लाये। सन् ११५० ई॰में अफगान अपने देशकी गोर जातिसे मिल गये। गोर जातिका राजकुमार सुरी अफगानों और गोर लोगोंकी फौज लेकर गजनीपर चढ़ गया। गजनीपर कबजा किया और उसको फौजसे अच्छी तरह लुटवा लिया। सन् ११५१ ई॰में गजनवी घरानेके बैरम नामे मनुष्यने गजनी विजय किया और सुरीको गिरफ्तार करके मरवा डाला। इसके अनन्तर सुरीके भाई अलाउद्दीनने गजनीपर आक्रमण करके अधिकार कर लिया। बैरमशा भारतवर्ष भाग आया। अलाउद्दीनने अपनी सैन्यसे सात दिनोंतक गजनी नगरको लुटवाया। इसके उपरान्त उसने

इस नगरको आग लगाकर भस्मकर दिया और ध्वस गजनीपर गया गजनी नगर बसाया। इसी नगरको अपनी राजधानी बनाई।

"यह राजघराना अल्पकालमें नष्ट हो गया। सिर्फ छः वा सात बादशाह हुए। सन् १२१४ ई०में महम्मद गोरीकी मृत्युके साथ साथ इस घरानेका राज्य भी मर गया। गोर घरानेका राज्य अफगानिस्थानके भीतर ही भीतर रहा और वहीं नष्ट हो गया। इस घरानेकी एक शाखाने भारतवर्ष विजय किया था और सन् ११६३ ई०में गोरवंशीय इबराहीम लोदीने भारतवर्षकी उस समयकी राजधानी दिल्लीपर अधिकार कर लिया। भारतवासी इसी घरानेको पठान घराना कहते हैं। सन् १२२२ ई०में चङ्गेज खाने और सन् १३८६ ई०मे तैमूर लङ्गने भारतवर्षपर आक्रमण करके इस घरानेके शासनपर बडा धक्का लगाया। खूब धक्के खानेपर भी इस घरानेकी प्रभुता लुप्त नहीं हुई। अन्तमे सन् १५२५ ई०मे बाबर बादशाहने गोर घरानेको पददलित करके दिल्लीपर कबजा कर लिया। बाबर बादशाहने इससे बारह वर्ष पहले काबुलपर अधिकार कर लिया था। बाबरने दिल्लीपर अधिकार करके भारतमे मुगल वा तुर्क फारस घरानेके शासनकी नीव डाली। सन् १५३० ई०मे दिल्लीमें बाबरका देहान्त हुआ और उसके उपदेशानुसार उसकी लाश काबुलमें गाडी गई। आज भी यह कब्र काबुलमे मौजूद है और अफगान उसकी बडी प्रतिष्ठा करते हैं। मानो वह उनकी जातिके किसी साधु महात्माकी कब्र है।

"अफगानस्थान भारतवर्ष और फारसके बीचमें है। बाबरकी मृत्यु के उपरान्त उधर फारसके बादशाह और इधर भारतसम्राटके दांत अफगानस्थानपर लगे। एक जमानातक कभी अफगानस्थान फारसके अधीन रहा और कभी भारतवर्षके। समय समयपर फारस वा भारतवर्षमें राजनैतिक झगड़े उठनेकी वजहसे अफगानस्थान स्वतन्त्र हो जाता था। उसी देशका कोई आदमी अफगानस्थानका शासनकार्य करने लगता था। अन्तमें सन् १७३६ ई०में फारसके बादशाह नादिर शाहने अफगानस्थान फतह किया। इसके दो वर्ष बाद भारतवर्षपर आक्रमण किया और दिल्ली फतह करके फारससे लेकर भारतवर्षतक फारसका राज्य फैला दिया। इसी बादशाहने सन् १७३७ ई०में दिल्लीमें मशहूर कत्ले आम कराया था। किन्तु नादिरकी जय अधूरी, शीघ्रता पूर्वक और बहुत लम्बी चौड़ी होती थी। इससे वह उतनी मजबूत नहीं होती थी। सन् १७४७ ई०में नादिर भारतवर्ष लूटकर और लूटका माल साथ लेकर फारस वापस जा रहा था। मशहदके समीप रात्रिके समय कुछ लोगोंने उसकी हत्या की और नरपिशाच नादिरने अपनी पैशाचिक लीला सम्बरण की।

"नादिरकी मृत्यु के उपरान्तसे अफगानस्थान प्रकृतरूपसे स्वतन्त्र हुआ। अवदाल जातिका अहमद खां अफगान सरदार था। वह नादिरकी सैन्यमें ऊंचे दरजेपर आरूढ़ था। उस समय उसके अधीन वही फौज थी, जो भारतवर्षके लूटका माल फारस ले जा रही थी। नादिरशाहका मृत्युसमाचार पाते ही अहमद खांने कन्धारमें नादिरके खजानेपर कब्जा कर लिया। इस धनकी सहायतासे उसने अपनेको अफगान-

इस नगरको आग लगाकर भसकार दिया और अब गजनीपर नया गजनी नगर बसाया। इसी नगरको अपनी राजधानी बनाई।

"यह राजघराना अल्पकालमें नष्ट हो गया। सिर्फ छः या सात बादशाह हुए। सन् १२१४ ई०में महम्मद गोरीकी मृत्यु के साथ साथ इस घरानेका राज्य भी मर गया। गोर घरानेका राज्य अफगानस्थानके भीतर ही भीतर रहा और वहीं नष्ट हो गया। इस घरानेकी एक शाखाने भारतवर्ष विजय किया था और सन् ११६३ ई०में गोरवंशीय इबराहीम लोदीने भारतवर्षकी उस समयकी राजधानी दिल्लीपर अधिकार कर लिया। भारतवासी इसी घरानेको पठान घराना कहते हैं। सन् १२११ ई०मे चङ्गेज खाने और सन् १३८६ ई०मे तैमूर लङ्गने भारतवर्षपर आक्रमण करके इस घरानेके शासापर बडा धक्का लगाया। खूब धक्के खानेपर भी इस घरानेकी प्रभुता लुप्त नहीं हुई। अन्तमें सन् १५२५ ई०में बाबर बादशाहने गोर घरानेको पददलित करके दिल्लीपर कबजा कर लिया। बाबर बादशाहने इससे बारह वर्ष पहले काबुलपर अधिकार कर लिया था। बाबरने दिल्लीपर अधिकार करके भारतमें मुगल वा तुर्क फारस घरानेके शासनकी नीव डाली। सन् १५३० ई०मे दिल्लीमें बाबरका देहान्त हुआ और उसके उपदेशानुसार उसकी लाश काबुलमें गाडी गई। आज भी यह लाश काबुलमे मौजूद है और अफगान उसकी बडी प्रतिष्ठा करते हैं। मानो वह उनकी जातिके किसी साधु महात्माकी कब्र है।

"अफगानस्थान भारतवर्ष और फारसके बीचमें है। बाबरकी मृत्यु के उपरान्त उधर फारसके बादशाह और इधर भारतसम्राटके दांत अफगानस्थानपर लगे। एक जमानेतक कभी अफगानस्थान फारसके अधीन रहा और कभी भारतवर्षके। समय समयपर फारस वा भारतवर्षमें राजनैतिक झगड़े उठनेकी वजहसे अफगानस्थान स्वतन्त्र हो जाता था। उसी देशका कोई आदमी अफगानस्थानका शासनकार्य करने लगता था। अन्तमें सन् १७३६ ई०में फारसके बादशाह नादिर शाहने अफगानस्थान फतह किया। इसके दो वर्ष बाद भारतवर्षपर आक्रमण किया और दिल्ली फतह करके फारससे लेकर भारतवर्षतक फारसका राज्य फैला दिया। इसी बादशाहने सन् १७३७ ई०में दिल्लीमें मशहूर कतले आम कराया था। किन्तु नादिरकी जय अधूरी, शीघ्रता पूर्वक और बहुत लम्बी चौड़ी होती थी। इससे वह उतनी मजबूत नहीं होती थी। सन् १७४७ ई०में नादिर भारतवर्ष लूटकर और लूटका माल साथ लेकर फारस वापस जा रहा था। मशहदके समीप रात्रिके समय कुछ लोगोंने उसकी हत्या की और नरपिशाच नादिरने अपनी पैशाचिक लीला सम्वरण की।

"नादिरकी मृत्यु के उपरान्तसे अफगानस्थान प्रकृतरूपसे स्वतन्त्र हुआ। अबदाल जातिका अहमद खां अफगान सरदार था। वह नादिरकी सैन्यमें ऊंचे दरजेपर आरूढ़ था। उस समय उसके अधीन वही फौज थी, जो भारतवर्षके लूटका माल फारस ले जा रही थी। नादिरशाहका मृत्युसमाचार पाते ही अहमद खांने कन्धारमें नादिरके खजानेपर कब्जा कर लिया। इस धनकी सहायतासे उसने अपनेको अफगान

स्थागका बादशाह प्रसिद्ध किया। उस समय कन्धार प्रान्तमें अबदाल जातिके अफगान बसते थे। उन सबने अहमद शाहका प्राधान्य स्वीकार किया। इसके उपरान्त ही इजारा जाति और बलूचियोंने भी अहमद शाहको अपना बादशाह माना। एक दिन कन्धारके समीप यथाविधि अहमद शाहका राज्याभिषेक हुआ। प्रजाने उसको अहमद शाह दुर्रे दुरानकी उपाधि दी। इसके उपरान्त उसने एक नया नगर बसाया। 'अहमद शाही' या 'अहमद शहर' उसका नाम रखा। नया शहर नये बादशाहकी राजधानी बनी। फिर उसने अन्तरस्थ और बाहरी झगड़ोंसे बिगड़े हुए देशके बनानेकी ओर ध्यान दिया। अपने सुदृढ़ हाथमें सुदृढ़ रूपसे राजदण्ड धारण किया। इसी नीतिके अवलम्बसे वह देशको बहुत कुछ सुधार सका।

असलमें अहमद शाह हीके शासनकालमें अफगानस्थान सैकड़ों सालसे चलते हुए बाहरी और भीतरी झगड़ोंसे साफ हुआ। यह पहलीबार पृथक देश बना और उसने ऐसी स्वतन्त्रता पाई, जैसी और कभी नहीं पाई थी। कोई २६ सालतक उत्तम रीतिसे शासनकार्य करके, सन् १७७३ ई०में अहमद शाहने शरीरत्याग किया। वह गया और उसके साथ साथ नये साम्राज्यकी नई सुख शान्ति भी चली गई। उसके बाद उसका पुत्र तैमूर सिंहासनारूढ़ हुआ। सन् १७९३ ई०में उसकी मृत्युके उपरान्त उसका पुत्र जमान शाह राज्याधिकारी बना। जमान शाह अपने पिताकी तरह लक्ष्यभ्रष्ट, दुर्बलचित्त और अत्याचारी था। इसके प्रतिद्वन्द्वियोंने इसको अपने चक्रमें

फसाया। सौतेले भाई महम्मदने उसे राज्यच्युत तथा अन्धा करके कैदखानेमें डाल दिया। अनन्तर अभागे जमानशाहके भाई शुजाउलमुल्कने अपने भाईका बदला महम्मदसे लिया। उसने उसे सिंहासनसे उतारकर कैद कर दिया।

"शुजाउलमुल्क वा शाहशुजाको सिंहासनारूढ़ हुए बहुत दिन नहीं बीते थे, कि देशमें बलवा हुआ। बारकजई जातिका सरदार फतह खां बलवाइयोंका सरदार बना। शाहशुजा बलवाइयोंसे इतना दुःखी और भीत हुआ, कि सन् १८०९ ई०में अपना राज्य छोड़कर भारतवर्ष भाग आया। भागा हुआ बादशाह पहले सिखोंकी शरण गया। पञ्जावकेशरी रणजित सिंह उस समय सिखोंके महाराज थे। मशहूर है, कि महाराजने पदच्युत बादशाहके साथ सुव्यवहार नहीं किया। आज जो सुप्रसिद्ध 'कोहेनूर' नामे हीरा हमारे राजराजेश्वर सप्तम एडवर्डके पास है, वह उस समय शाह शुजाके पास था। कहते हैं, कि सिखनरेशने शाह शुजासे यह हीरा छीन लिया। इससे हृदयभग्न होकर शाहशुजा अङ्गरेजोंके पास चला आया। उस समय अङ्गरेजोंकी सरहदी छावनी लोधियानेमें थी। वहीं शाहशुजा सिखोंके राज्यसे भागकर अङ्गरेजोंकी शरण आया।"

उधर शाह शुजाके अफगानस्थानसे भाग आनेके उपरान्त महम्मद कैदखानेसे छूटा। बलवाइयोंके सरदार फतह खांके उद्योगसे अफगानस्थानका बादशाह बना। उसने फतह खांको अपना वजीर बनाकर उसकी खिदमतका बदला दिया। इसके थोड़े ही दिनों बाद फतह खांके भतीजे दोस्तमुहम्मद खां

और कुहनदिल खाको काबुल और कान्धारका गवरनर यथाक्रम बनाया। फ़तह खाकी बढ़ती हुई शक्ति महम्मदके बेटे युवराज कामरानको काटा बनकर खटकी। सन् १८१८ ई०में गजनी शहरके समीप हैदरखेलमें फतह खा बुरी तरह मारा गया। अमीर अब्दुररहमान अपने तुजुकमें इस वजीरकी प्रशंसा इस प्रकार करते हैं,—"विलायतके अर्ल आफ वार्वको 'बादशाह बनानेवाला' की उपाधि दी गई थी, किन्तु यह विचित्र पुरुष बहुत ज्यादा 'बादशाह बनानेवाला' कहे जानेके योग्य है। यह अफगानस्थाके इतिहासमें कोई १८ सालतक श्रेष्ठ आसनपर आसीन था।" अमीर इसकी मृत्युके विषयमें इस तरह लिखते हैं,—"शाह शुजाके परास्त होनेके उपरान्त वजीर फतह खाने शाह महम्मदके राज्यका शासन करना आरम्भ किया। अपने स्वामीके लिये हाजी फीरोजसे हिरात छीना और ईरानियोंने जब उस नगरपर आक्रमण किया, तो उसे रोका। इस आक्रमणका कारण यह था, कि ईरानी उस नगरका राजकर वसूल करना और वहां अपना सिक्का चलाना चाहते थे। इस सेवाका बदला यह मिला, कि उस अभागे, कृतघ्नी, कर्त्तव्याकर्त्तव्य ज्ञानशून्य शाह महम्मदने अपने दगाबाज बेटे तथा अन्यान्य मनुष्योंके कहनेसे फतह खाकी आंखें निकलवा डाली। फिर जब वजीरने अपने भाइयोंका हाल बताने और उनका भेद खोलनेसे इनकार किया, तो एक एक करके उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग कटवा डाले। उसी मनुष्यकी इतनी दुर्दशा की, जिसकी बदौलत महम्मदने दुबारा राज्य प्राप्त किया था। इस प्रकार इस अद्वितीय मनुष्यका अन्त हुआ।"

इस गन्दे काससे महम्मद्के मोतिं हुए शाह, भागे। उधर मारे गये वजीरके सम्बन्धी भी बिगड खडे हुए। फतहखाके बीस भाई थे। उनके नाम इस प्रकार हैं,—"मुहम्मद आजम खा, तैमूर कुली खा, पुरदिल खा, शेरदिल खा, कुहनदिल खा, रहमदिल खा, मिहरदिल खां, अता मुहम्मद खा, सुलतान मुहम्मद खा, पीर मुहम्मद खा, सईद मुहम्मद खां, अमीर दोस्त मुहम्मद खा, मुहम्मद खा, मुहम्मद जमान खा, अमीर खा, हैदर खां, तुरेंहवाज खा, जुमा खा और खैरल्लह खा। यह बीसो भाई शाह महम्मद और उसके लडके कामरानसे बिगड गये। देशमें बदअमली फैल गई। चारो ओर मार काट और लूट होने लगी। इसका फल यह हुआ, कि अफगानस्थानमे चारो तरफ बगावत फैल गई। सरदारोंने देशके टुकडे टुकडेपर कबजा कर लिया और एक सरदार दूसरेको नीचा दिखानेकी घातमें रहने लगा।

इस दुर्घटनाके उपरान्त शाह महम्मद हिरात चला गया। सिर्फ यही देश उसके पास रह गया था। यहां कुछ साल रहकर उसने शरीरत्याग किया। इसके बाद कामरा अपने पिताके आसनपर आसीन हुआ और केवल हिरात प्रदेशका राज्य करने लगा। इसने कई सालतक अन्यायपूर्व्वक राज्य किया। आखिर सन् १८४२इ०में इसके वजीर यार मुहम्मद खांने अपने बादशाह कामरानकी हत्या की और खुद सिंहासन पर बैठा। यह स्वामिहन्ता अलिकोजई जातिका कलङ्क था।

इधर फतह खांकी मृत्युके उपरान्त ही मारे गये वजीर फतह खाके भाई कुहनदिल खाने कन्धारपर कबजा कर लिया।

उसके भाई पुरदिल खां, रहमदिल खां और मिहरदिल खां भी उसके साथ थे। फतह खाके छोटे भाई दोस्त मुहम्मद खाने काबुलपर कबजा कर लिया। देशका बाकी भाग, जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं,—भिन्न भिन्न जातियोंके भिन्न भिन्न सरदारोंके हाथ लगा। सन् १८३९ ई० तक अफगानस्थानकी ऐसी ही दशा रही। ऐसे ही समय अङ्गरेज महाराज शाहशुजाको काबुलकी गद्दी दिलानेके लिये अफगानस्थानमें घुसे। इसी जमानेमें प्रथम अफगानयुद्ध हुआ और इसी जमानेसे अफगानस्थानका ध्यान देने योग्य मनोहर इतिहास आरम्भ होता है।

प्रथम अफगान-युद्ध।

किन्तु इतिहासका सिलसिला जारी करनेसे पहले अङ्गरेज अफगान सम्बन्धके विषयमें थोड़ीसी बातें कहना चाहते हैं। आज जिस तरह रूस भारतपर आक्रमण करने और उसको ले लेनेकी घातमें लगा हुआ है, कोई सौ साल पहले,—उन्नीसवीं शताब्दिके आरम्भमें फ्रान्स भारतके भाग्यका विधाता बननेकी चेष्टामें लगा हुआ था। फलतः आज अङ्गरेज महाराज जिस तरह रूसका मुंह फेरनेकी तय्यारीमें लगे हुए हैं, उन्नीसवीं शताब्दिके आरम्भमें उन्हें फ्रान्सीसियोंको भारतसे दूर रखनेकी चिन्तामें फसना पड़ा था। उस जमानेमें शाह जमां अफगानस्थानका बादशाह था और वह पञ्जाबपर बार

बार आक्रमण करता था। अङ्गरेजोंको शाहजमानकी ओरसे भी थोड़ी बहुत चिन्ता थी। इस प्रकार नाना राजनीतिक कारणोंसे बाध्य होकर उस समय अङ्गरेज महाराजने ईरानसे सन्धि की। सन् १८०१ ई०की जनवरी महीनेमें अङ्गरेजोंके राजदूत मेलकम साहबने ईरान जाकर ईरानपति फतहअली शाह० सन्धि की। नैरङ्गे अफगानमें सन्धिकी जो नकल प्रकाश की गई है, वह इस प्रकार है,—

"(१) अफगानस्थानका बादशाह यदि अङ्गरेजोंके अधीन हिन्दुस्थानपर चढ़ाई करे, तो ईरान एक सुदृढ़ सैन्य भेजकर अफगानस्थानको नष्ट कर देनेकी चेष्टा करेगा।

(२) अफगानस्थानका बादशाह यदि ईरानसे सन्धि करे, तो उसको इस बातकी प्रतिज्ञा करना होगी, कि हम अङ्गरेजोंसे युद्ध न करेंगे।

(३) अफगानस्थान अथवा फ्रान्स यदि ईरानपर चढ़ाई करेगा, तो अङ्गरेज लोग ईरानको अस्त्र शस्त्रसे यथोचित सहायता देंगे।

(४) फ्रान्स यदि ईरानके किनारेके पास किसी टापूपर पैर जमाना चाहेगा, तो अङ्गरेजोंकी सैन्य उसे वहांसे भगा देगी। कोई फ्रान्सीसी यदि ईरानमें वा ईरानके अधीन किसी टापूमें बसना चाहेगा, तो ईरान सरकार उसको बसनेकी आज्ञा न देगी।

(५) ईरान यदि अफगानस्थानपर आक्रमण करेगा, तो अङ्गरेज, ईरान और अफगानस्थान दोनोंमें किसीका भी साथ न देंगे। दोनो बादशाह यदि सन्धि करानेके लिये अङ्गरेजोंको

मध्यस्थ बनाना चाहेंगे, तो अङ्गरेज बनेंगे।"

इस सन्धिके उपरान्त फ्रान्सके सुप्रसिद्ध सम्राट् नेपोलियन बोनापार्टने रूसको परास्त किया। फिर रूस और फ्रान्समें सन्धि हुई। दोनो देशके सम्राटोंने मिलकर भारतपर आक्रमण करनेकी सलाह की। सन् १८०७ ई०में फ्रान्सीसियोंने भी ईरानसे सन्धि की। इस सन्धिकी नकल "नासिखुल तवारीख"में प्रकाश हुई थी। नैरङ्गे अफगानने उसीकी नकल इस प्रकार की है,—

सन्धि पत्र।

(१) शाह ईरान आला हजरत फतह अलीशाह काचार और हिज इम्पीरियल मेजेष्टी फ्रान्स सम्राट् इटलीराज नेपोलियन बोनापार्ट सदैवके निमित्त सन्धि करते हैं। दोनो नरपति पारस्परिक प्रेम स्थिर रखनेकी चेष्टा करेंगे और दोनो राज्योंमें सदैव सख्य सम्बन्ध रहेगा।

(२) फ्रान्स सम्राट ईरानसे प्रण करते और जिम्मेदार होते हैं, कि इस सन्धि पत्रके उपरान्त हम कभी ईरानमे उपद्रव न करेंगे। कोई दूसरी शक्ति जब ईरानपर आक्रमण करेगी, तो फ्रान्स सम्राट ईरानके साथ होकर वैरीको मार भगानेकी चेष्टा करेंगे। इस विषयमे कभी बेपरवाही और स्वार्थसे काम न लेंगे।

(३) फ्रान्स सम्राट गुरजस्थान देशको ईराका मानते हैं।

(४) फ्रान्स सम्राट ईरानको गुरजस्थान और ईरानसे रूसियोंके निकालनेमें यथोचित सहायता देंगे। इसके उपरान्त जब रूस और ईरानमें सन्धि होगी, तो सन्धि यथानियम करा देनेमे फ्रान्स सम्राट ईरानको सहायता देंगे।

(५) फ्रान्स सरकारका एक राजदूत ईरानमें रहेगा और प्रयोजन उपस्थित होनेपर ईरान सरकारको सलाह देगा।

(६) ईरान यदि चाहेगा, तो फ्रान्स सम्राट ईरानी सैन्यको युरोपकी युद्धविद्या सिखानेका प्रबन्ध कर देंगे और ईरानी किलोंको युरोपीय किलोंके ढङ्गपर बनवा देंगे। ईरानकी इच्छा होनेपर फ्रान्स सम्राट युरोपकी तोपें आदि भी ईरानमें भेज देंगे। ईरानको अस्त्र शस्त्रका मूल्य देना पड़ेगा।

(७) ईरानके शाह यदि अपनी फौजमें फ्रान्सीसी अफसर नियुक्त करना चाहेंगे, तो फ्रान्स सम्राट उनके पास अफसर और उहदेदार भेज देंगे।

(८) फ्रान्सकी मैत्रीके खयालसे ईरानको उचित है, कि अङ्गरेजोंको शत्रु समझे। उन्हें भगानेकी चेष्टा करे। ईरानके जो राजदूत भारतवर्ष और इङ्गलण्ड गये हैं, ईरानको उन्हें वापस बुलाना चाहिये। इङ्गलण्ड और ईष्ट इण्डिया कम्पनीकी ओरसे जो दूत ईरानमें हैं, ईरानको उन्हें निकाल देना चाहिये। अङ्गरेजोंकी सम्पत्तिपर अधिकार कर लेना चाहिये और उनका जल और स्थलका व्यापार बन्द कर देना चाहिये। इसके अतिरिक्त इस विषयका एक आज्ञापत्र निकालना चाहिये, कि विलायतका जो दूत ईरान आना चाहेगा, वह आने न पावेगा।

(९) भविष्यमें रूस और इङ्गलण्ड मिलकर यदि ईरान या फ्रान्सपर चढ़ाई करनेकी चेष्टा करें, तो ईरान और फ्रान्स मिलकर उन्हें भगानेकी कोशिश करेंगे। रूस और अङ्ग-

रेच मिलकर यदि किसी शक्तिपर चढ़ाई करें, तो ईरान और फ्रान्स मिलकर उनके रोकनेकी फिक्र करेंगे।

(१०) ईरान अपनी सैन्य तय्यार करे और निर्दिष्ट समयपर भारतके अङ्गरेजी राज्यपर अधिकार करनेके लिये भारतकी ओर रवाना हो।

(११) जिस समय फ्रान्सीसी जहाज ईरानके समुद्रमें आवें, तो ईरानको उन्हें हर तरहकी सहायता देना पड़ेगी।

(१२ फ्रान्स-सम्राट जब भारतपर आक्रमण करनेके लिये अपनी फौज स्थल मार्गसे ले जाना चाहेंगे, तो शाह ईरानको अपने देशमें फ्रान्सीसी सैन्यको राह देना पड़ेगी। ईरानी सैन्य भी इस सैन्यके साथ हो लेगी। जब कभी ऐसा समय उपस्थित होगा, तो फ्रान्स सम्राट ईरान-सम्राटसे और एक सन्धि कर लेंगे।

(१३) ईरानके लोग समुद्र किनारे अथवा देशके भीतर फ्रान्सीसियोंके हाथ अपना माल और रसदका सामान बेच नेमें सङ्कोच न करें।

(१४) ऊपरके बारहवें नियममें ईरानने फ्रान्सके साथ जो प्रण किया है, वह वही प्रण ईरान रूस या इङ्गलण्डके साथ न कर सकेगा।

(१५) दोनो देशोंमें व्यापारके सम्बन्धमें भी एक सन्धि की जावेगी।

(१६) चार महीनेमें इस सन्धिपत्रपर फ्रान्स सम्राट और शाह ईरानकी मुहरें लग जावेंगी। दो मुहरदार सन्धिपत्र तय्यार किये जावेंगे। एक फ्रान्स सम्राट और दूसरा शाह फ्रान्सके पास रहेगा।"

नेरङ्गे अफगानमें लिखा है,—" इस फ्रान्सीसी सन्धिने इङ्गलण्डकी सन १८०१ वाली सन्धि कुछ न रक्खी। ईरानमें फ्रान्सका प्रभाव बढ़ गया। सन् १८०२ ई०में भारतके गवरनर जनरल लार्ड मिण्टोने जब मलकम साहबको दुबारा ईरान भेजा, तो ईरानियोंने उनको बूशहरसे आगे बढ़नेकी आज्ञा न दी। ईरानमें फ्रान्सीसी प्रभाव फैल जानेसे लण्डन और भारतवर्षमें हलचल पड़ गई थी। जब ईरानियोंने मलकम साहबके साथ ऐसा व्यवहार किया, तो वह हलचल और बढ़ गई। इसके उपरान्त ही इङ्गलण्डने हरफर्ड साहबको अपना दूत बनाकर ईरान भेजा। मलकम साहब तो आगे बढ़ न सके थे, किन्तु हरफर्ड साहब बेखटके आगे बढ़ गये। इस अवसरमें और एक दुर्घटना हुई। फ्रान्स और ईरानमें जो सन्धि हुई थी, उसके तीसरे और चौथे नियममें रूसको ईरानसे निकालनेकी बात कही गई थी। यह नियम ईरानकी ओरसे किये गये थे। किन्तु फ्रान्समें और रूससे मैत्री हो चुकी थी। इसलिये फ्रान्स इन विषयोंको स्वीकार करनेमें सङ्कोच कर रहा था। इसलिये फ्रान्स और ईरानके सन्धि पत्रपर हस्ताक्षर नहीं हो सके। फ्रान्सीसी मिशन ईरान राजधानी तिहरानसे वापस चली गई। इसके उपरान्त ईरानमें इङ्गलण्डको अपना प्रभाव फैलानेका समय मिल गया। ईरानके मन्त्री मिरजामुहम्मद शफी और हरफर्ड साहबने मिल जुलकर एक नया सन्धि पत्र तय्यार किया।"

इसके उपरान्त फ्रान्सके साथ साथ रूस भी भारतवर्षपर आक्रमण करनेकी धमकी देने लगा। कारण, वह उस समय

मध्य एशिया पार करके अफगानस्थानकी सीमाके समीप पहुंच रहा था। इसलिये सन् १८०८ ई०में अङ्गरेजोंने ईरान और अफगानस्थान दोनोंसे सन्धि की। सन् १८०८ ई०में शाहशुजा काबुलका अमीर था। अङ्गरेजोंने एलफिंस्टन साहबको शाहशुजाके पास सन्धिके लिये भेजा था। यह सबसे पहला अङ्गरेजों और अफगानोंका सम्बन्ध हुआ था। इसके उपरान्त सन् १८१५ ई०में फ्रान्सके वाटरलू स्थानमें सम्राट् नेपोलियनका पतन हुआ। नेपोलियन-पतनके उपरान्तसे अङ्गरेज फ्रान्सकी ओरसे निश्चिन्त हो गये। उन्होंने ईरानके साथ भी उतना मेल जोल रखनेकी जरूरत नहीं देखी। उनको सिर्फ रूसका खटका रह गया। रूस अफगानस्थान होकी राहसे भारतपर चढ़ाई कर सकता है। इसलिये अङ्गरेजोंने ईरानको छोड़कर अफगानस्थानकी ओर अधिक ध्यान दिया।

रूसके भारतवर्षकी ओर धीरे धीरे बढ़नेके विषयमें लार्ड राबर्टस अपनी पुस्तक "फार्टीयन इयर्स इन इण्डिया"में इस प्रकार लिखते हैं,—"कोइ दो सौ साल पहले अङ्गरेजोंके पूर्वीय राज्य और रूसराज्यमें कोई चार हजार मीलका अन्तर था। उस समय रूसकी सबसे आगे बढ़ी हुई चौकी ओरनबर्ग और सेटरोपावलस्कमें थी, इधर इङ्गलण्ड दक्षिणीय भारतके समुद्रतटपर अनिश्चित रूपसे पैर जमा रहा था। भारतवर्षमें सिर्फ फ्रान्स हमारा प्रतिद्वन्दी था। उस समय हमें सिन्धकी ओर बढ़नेका उतना ही कम खयाल था, जितना रूसका आक्ष नदीकी ओर बढ़नेका।

"तीस सालके उपरान्त सौ सालके परिश्रमके उपरान्त रूस

किरगिज हड़प करता हुआ आगे बढ़ने लगा। इधर इङ्गलैण्ड भी निश्चिन्त नहीं बैठा था। उसने बङ्गालपर अधिकार किया, मन्द्राजमें प्रेसिडेन्सी स्थापित की और बम्बईकी प्रयोग नीव जमनी जमाई। इस तरह दोनो शक्तियोंके आगे बढ़नेसे दोनोंका फासला चार हजार मीलसे घटकर सिर्फ दो हजार मील रह गया।

"अब हम लोग जल्द जल्द तरक्की करने लगे। उधर रूस एक गैरआबाद रेगस्थान पार कर रहा था। हम लोगोंने अवध, पश्चिमोत्तर प्रदेश "युक्तप्रदेश", कराटक, पेशवाके राज्य, सिन्ध और पञ्जाबपर क्रमशः अधिकार किया। सन् १८५० ई०तक हमारा अधिकार सिन्धनदके पारतक पहुंच गया।

"उधर रूस रेगस्तान पार करके अरल झील और सिर दारियाके समीप अरलस्क स्थानतक पहुंच गया। इस तरह एशियामें दो बढ़ती हुई शक्तियोंके बीचमें सिर्फ एक हजार मीलका फासला रह गया।"

पाठकोंने देख लिया, कि अङ्गरेज रूसकी ओरसे अकारण ही सशङ्क नहीं थे। एक ओर तो रूस अफगानस्थानपर और दूसरी ओर फारसपर अपना प्रभाव डालना चाहता था। सम्राट नेपोलियनके जमानेमें ईरानपर रूसका प्रभाव जम नहीं सका। रूसने ईरानसे युद्ध करके ईरानके सिर्फ कई स्थानोंपर अधिकार कर लिया था। किन्तु नेपोलियनका पतन होनेके उपरान्त ही से उसने ईरानपर अपना असर जमाया। सन् १८३७ ई०में रूसके अनुरोधसे ईरानने हिरात घेर लिया। इसके उपरान्त ही रूसके लिए

रानस्थ राजदूतने कप्तान विटकेविचको काबुल भेजा। वजीर फतहखाके भाई दोस्त मुहम्मदखा उस समय काबुलके शासक थे। रूसी कप्तान विटकेविच अमीरके पास चिट्ठी लेकर पहुंचे। चिट्ठीमें जारने लिखा था, मैं आशा करता हूं, कि भारतपर आक्रमण करनेमें आप मेरा और ईरानका साथ देंगे।

अङ्गरेजोंने रूसकी इच्छा पहले होसे समझ ली थी। इसलिये भारतके गवरनर जनरल लार्ड आकलडने सन् १८३७ ई०में कप्तान बरनेसकी प्रधानतामें एक मिशन काबुल भेज दी थी। रूसदूत विटकेविच सन् १८३७ ई०के अन्तमें काबुल पहुंचा। बरनेस साहब उससे तीन महीने पहले काबुल पहुंच चुके थे। प्रत्यक्षमें तो यह काबुल मिशन अफगानस्थानसे व्यापार सम्बन्धी सन्धिके लिये गई थी, किन्तु यथार्थमें इसका अभिप्राय यह था, कि काबुलमें रूसकी प्रभाव प्रतिपत्ति रोके। इससे कुछ पहले पञ्जाबपति महाराज रणजितसिंहने अफगानस्थानके पश्चिमीय भागपर और उसके काश्मीर देशपर अधिकार कर लिया था। अङ्गरेजोंकी मिशन जब काबुल पहुंची, तो अमीर दोस्त मुहम्मदने उसकी बडी खातिरदारी की। कारण, अमीरको आशा थी, कि अङ्गरेज हमसे मिलकर हमें हमारा छिना हुआ देश सिखोंसे वापस दिला देंगे। अङ्गरेजोंसे मैत्री करनेके खयाल होसे अमीर दोस्त मुहम्मदने रूसदूतसे काबुल पहुंचनेपर भी उससे घठवारोंतक मुलाकात नहीं की। इससे रूसदूत कुछ उदास भी हो गया।

किन्तु अमीरकी आन्तरिक आशा पूर्ण नहीं हुई। अङ्गरेज सिखोंको छेड़कर लड़ना झगड़ना नहीं चाहते थे। इसलिये उन्होंने सिखोंसे अफगानस्थानका देश वापस दिलानेका वादा नहीं किया। इतना ही नहीं,—अमीर दोस्त मुहम्मदने अङ्गरेजोंसे जब यह कहा, कि हम जब रूस और ईरानसे सन्धि न करेंगे, तो खूब सम्भव है, कि दोनो शक्तियां हमपर चढ़ाई करें। ऐसी दशामें क्या आप हमें अस्त्र शस्त्रकी सहायता देंगे और हमारे दुर्ग सुदृढ़ कर देंगे? अङ्गरेजोंने इससे भी इनकार कर दिया। अङ्गरेजोंका यह उत्तर पाकर अमीर दोस्त मुहम्मदने रूसदूत विटकी विचकी ओर ध्यान दिया। उनपर इतनी दया प्रकाश की, कि उसकी पिछली उदासी मिट गई। बर्न्स सन् १८३८ ई०के अन्तपर्यन्त काबुल रहे। इसके उपरान्त उन्होंने भाग्य वापस आकर भारत सरकारको समाचार दिया, कि अमीर पूर्ण रूपसे रूसके तरफदार हैं। इसपर विलायती सरकारने भारतके गवरनर जनरलको लिखा, कि दोस्त मुहम्मदको काबुल सिंहासनपर बैठा रखना उचित नहीं। कारण, वह हमारा विरोधी है। उसकी जगह वह अमीर बैठाना चाहिये, जो हमसे मिला रहे। प्रथम अफगान-युद्ध होनेका यही कारण था।

कितने ही अङ्गरेजोंने इण्डिया-सरकारका यह काम पसन्द नहीं किया। "काबुल कैम्पेन" नामी पुस्तकमें मेजर एश लिखते हैं,—"अमीरने काप्तान बर्न्ससे अपने दिलकी बातें साफ साफ सुनाई। किन्तु बर्न्सको राजनीतिक विष

थपर बातचीत करनेका अधिकार नहीं दिया गया था। अमीरने अङ्गरेजोंके साथ सम्बन्ध स्थापन करनेमें अङ्गरेजोंसे सहायता लेनेके लिये यथाशक्य चेष्टा की। यह चेष्टा करनेके समय रूस इनकी मुंह नहीं लगाया। जब उसने देखा, कि लार्ड आकलण्ड किसी तरह नहीं पसीजते, तो उसने अपनेको रूसकी गोदमें डाल दिया। विटकोविचने अमीरको रुपये देने, हिरात दिला देने और रणजित सिंहसे बातचीत करनेकी आशा दिलाई। अमीरकी इच्छासे उसने कन्धारके शाहजादोंसे बातचीत की। कन्धारके शाहजादों और अमीर काबुलमें सन्धि हो गई। शाहजादोंने अमीरको सैनिक सहायता देनेकी प्रतिज्ञा की। रूसकी छायामें अफगानस्थान और फारसका सम्बन्ध हो जानेसे भारत सरकार डरी और उसने इस विषयमें उचित कारवाई करनेका दृढ़ सङ्कल्प किया। उस समय लिबरल दल प्रधान था। हमारे माननीय करनेल मेलेसन उस समयकी कारवाईपर तीव्र कटाक्ष करते हैं। वह कहते हैं, कि लिबरेल दलकी उस समयकी कारवाई ध्यान देने योग्य थी। उनका कहना है,—

'उन लोगोंने उस शासकको पदच्युत करनेका सङ्कल्प किया, जिसने सोदागरोंकी फैलाई हुई अशान्ति दबाकर देशमें शान्ति स्थापित की थी। उसकी जगह एक ऐसा शासक नियुक्त करना चाहते थे, जो शान्तिके समय भी अफगानस्थानका शासन नहीं कर सका था। उसके अफगानस्थानसे चले जानेके उपरान्त बारकजई सरदारोंने जब उसको फिर वापस बुलाया, तो उसने ऐसे ऐसे नियम करना चाहे, जिससे प्रमाणित हुआ,

क इतने बड़े तनबसे भी वह न तो कुछ भूला और न सीख
सका * * *।"

अङ्गरेजोंने काबुलपर चढ़ाई करनेसे पहले सन् १८३८ ई०के
जून महीनेमें रणजितसिंह और शाहशुजासे एक सन्धि की।
सन्धिपत्रपर महाराज रणजितसिंह, शाहशुजा और गवर-
नर जनरल आकलण्ड साहबने हस्ताक्षर किये। नैरङ्गे अफ़-
ग़ानामें यह सन्धि इस प्रकार प्रकाश की गई है;—

"(१) शाहशुजा अपनी ओरसे और अपने जातिवालोंकी
ओरसे सिन्धकी दोनों ओरके देशोंको छोड़ते हैं। उनपर
सिखसरकारका अधिकार रहे। छोड़े हुए स्थानोंके नाम इस
प्रकार हैं,—(क) काश्मीर प्रदेश, (ख) अटक, भच्छर, हजारा,
केयल और अम्बके किले, (ग) यूसुफ़ जई, खटक, हश्तनगर,
मचनी और कोहाटके साथ, पेशावर जिला। इसमें खैबर
दर्रा, वजीरस्थान, दौरेगनक, कुनाक और कालाबाग
शामिल हैं, (घ) डेराजात, (ङ) अमठन और उसके पासके
इलाके, और (च) मुल्तान जिला। शाहशुजा अब इन
जगहोंसे किसी तरहका वास्ता न रखेंगे। इन जगहोंके
मालिक महाराज हैं।

(२) जो लोग खैबर घाटीकी दूसरी ओर रहते हैं, वह
घाटीकी इस ओर आकर चोरी या लूट मार न करने पावेंगे।
दोनों राज्योंका कोई बाकीदार यदि रुपये हजम करके एक
राज्यसे दूसरे राज्यमें चला जावेगा, तो शाह शुजा और
महाराज रणजितसिंह दोनों नरपति प्रण करते हैं, कि उन्हें
एक दूसरेको दे देंगे। जो नदी खैबर दर्रेसे निकलकर

फतह गढमें पानी पहुंचाती है, दोमें कोइ नरेश उसको न रोकेंगे।

(३) अङ्गरेज सरकार और महाराजमे जो सन्धि हो चुकी है, उसके अनुसार कोई मनुष्य बिना महाराजका परवाना लिये सतलजके बाये किनारेसे दाहने किनारे नहीं जा सकता। सिन्धनदके विषयमे भी, जो सतलजसे मिलता है, ऐसा ही समझना चाहिये। कोई मनुष्य बिना महाराजकी आज्ञाके सिन्धनद पार न कर सकेगा।

(४) सिन्धनदके दाहने किनारेके सिन्ध और शिकारपुरकी बस्तियोंके विषयमे महाराज जो उचित समझेंगे, करेंगे।

(५) जब शाह शुजा कन्धार और काबुलपर अपना कब्जा कर लेंगे तो महाराजको प्रतिवर्ष निम्नलिखित चीजें दिया करेंगे,—सजे सजाये सुन्दर घोडे ५५, ईरानी तलवार और खञ्जर ११, सूखे और ताजे मेवे, अङ्गूर, अनार, सेव, हीङ्ग बादाम, किशमिश और पिश्ता ढेरके ढेर, रङ्गबरङ्ग साटनके थान, चुगे, सम्हर, किमखाब और सुनहरे रुपहले इरानी कालीन एक सौ।

(६) पत्र व्यवहारमें दोनो ओरसे बराबरीका बर्त्ताव किया जायेगा।

(७) महाराजके देशके व्यापारी अफगानस्थानमे और अफगानस्थानके पञ्जावमें बेरोकटोक व्यापार किया करेंगे।

(८) प्रतिवर्ष महाराज शाहशुजाके पास मित्रभावसे निम्नलिखित चीजें भेजा करेंगे,—दुशाले ५५, मलमलके थान २५, दुपट्टे ११, किमखाबके थान ५, रूमाल ५, पगडी ५ और पेशावरके बारबिरञ्ज ५५।

(६) महाराजका कोई नौकर यदि ग्यारह हजार रुपयेतकका माल खरीदने अफगानस्थान जावे वा शाहका नौकर उतने ही रुपयेका माल खरीदने यदि पञ्जाब आवे, तो दोनो ओरकी सरकारें ऐसे नौकरोंको खरीदनेमें सहायता देंगी।

(१०) जब दोनो ओरकी सैन्य एक जगह जमा होंगी, तो मह्हा गोवध न होने पावेगा।

(११) शाह यदि महाराजकी सैन्यसे सहायता लें, तो लूटका जो माल मिलेगा, उसमें आधा महाराजकी सैन्यको देना होगा। यदि शाह बिना महाराजकी सैन्यकी सहायताके बारकजइयोंको लूटें, तो लूटका च.था भाग अपने नौकरोंकी मार्फत महाराजके पास भेज दें।

(१२) दोनो ओरसे बराबर पत्र व्यवहार होता रहेगा।

(१३) महाराजको यदि शाही सैन्यका प्रयोजन होगा, तो शाह किसी बड़े अफसरकी अधीनतामें सैन्य भेजनेका वादा करते हैं। इसी तरह महाराज भी अपनी मुसल्मान फौज किसी बडे अफसरकी अधीनतामें काबुल भेज देंगे। जब महाराज पेशावर जाया करेंगे, तो शाह किसी शाहजादेको महाराजसे मिलनेके लिये भेजा करेंगे। महाराज शाहजादेके मरके अनुसार उसका आदर सत्कार करेंगे।

(१४) एकके मित्र और शत्रु, दूसरेके भी मित्र और शत्रु समझे जावेंगे।

(१५) महाराजके पांच हजार मुसल्मान सिपाही शाहके साथ रहेंगे। शाह अङ्गरेजोंकी सलाहसे उन सिपाहियोंको

जहां जरूरत होगी, रवाने करेंगे। जिस तारीखसे यह सिपाही शाहके पास जावेंगे, उसी तारीखसे शाह महाराजको दो लाख रुपये साल दरसाल देंगे। जब महाराजको शाहकी फ़ौजकी जरूरत होगी, तो महाराज भी शाहको इसी हिसाबसे रुपये देंगे। अङ्गरेज महाराज शाहके रुपये अदा करनेकी जमानत करते हैं।

(१६) शाह वादा करते हैं, कि वह सिन्धकी मालगुजारी सिन्धके अमीरोंको छोड़ देते हैं। जब सिन्धके अमीर अङ्गरेजोंकी बताई हुई रकम अदा कर देंगे और महाराजको पन्द्रह लाख रुपये दे चुकेंगे, तो सिन्ध देशपर अमीरोंका कबजा हो जावेगा। इसपर भी अमीरों और महाराजके बीचमें नियमित मत्रव्यवहार और भेंट उपहारादिका लेना दिलवाना जारी रहेगा।

(१७) शाह शुजा अफ़गानस्थानपर अधिकार करके भी हिरातपर आक्रमण न करेंगे।

(१८) शाह शुजा वादा करते हैं, कि वह बिना अङ्गरेजों और सिखोंकी सम्मतिके किसी दूसरी शक्तिके साथ किसी तरहका सम्बन्ध न करेंगे। जो कोई अङ्गरेजोंके अथवा सिखोंके राज्यपर आक्रमण करेगा, उससे लड़ेंगे। तीनों सरकारें, यानी अङ्गरेज सरकार, सिख सरकार और शाह शुजा इस सन्धिपत्रके नियमोंको स्वीकार करती हैं। इस सन्धिपत्रके अनुसार उसी दिनसे काम होगा, जिस दिनसे इसपर तीनों सरकारके हस्ताक्षर होंगे।"

सन् १८३८ ई०की १५वीं जुलाईको शिमलेमें तीनों नरपतियोंके हस्ताक्षर सन्धिपत्रपर हो गये।

अङ्गरेज महाराज काबुलपर चढ़ाईके लिये तयार हुए। इले उन लोगोंने पञ्जाबकी राहसे काबुलपर चढ़नेका इरादा किया। किन्तु महाराज रणजितसिंहने अपने देशसे अङ्गरेजी सैन्यको जाने नहीं दिया। अन्तमें अङ्गरेजी सैन्य सिन्धकी ओरसे काबुलपर चढ़नेको तयार हुई। पहले अङ्गरेजोंने सिन्धके अमीरोंको परास्त किया। अनन्तर सन् १८३८ ई० के मार्च महीनेमें अङ्गरेजी फ़ौजके २१ हजार सिपाही बोलन दर्रेसे अफ़गानस्थानमें दाखिल हुए। सर जानकन साहब इस सैन्यके प्रधान सेनापति थे। राहमें बड़ी कठिनाइयां मिलीं, किन्तु बाधा नहीं। कन्धारके हाकिम और अमीर दोस्त मुहम्मदके भाई कुहनदिल खां ईरान भाग गये। सन् १८३८ ई० के अपरैल महीनेमे अङ्गरेजी फ़ौजने इस शहरपर कबज़ा किया। शाह शुजा अपने दादेकी मसजिदमें सिंहासनपर बैठाया गया। २१वीं जुलाईको अङ्गरेजी फ़ौज गजनी पहुंची। अङ्गरेजी सैन्यके इञ्जीनियरोंने शहरपनाहका फाटक उड़ा दिया। अङ्गरेजी सैन्य नगरमें घुस पड़ी। खासी मारकाटके उपरान्त नगरका पतन हुआ। दोस्त मुहम्मदखां अपनी फ़ौजके पैर उखड़ते देखकर काबुलसे भागकर हिन्दूकुश पार कर गया और ७ वीं अगस्तको शाह शुजा राजधानी काबुलमें दाखिल हुआ। अङ्गरेजोंने समझा, कि इतने हीमें झगड़ा मिट गया। सैन्यके प्रधान सेनापति कीन साहब भारत लौट आये। उनके साथ अङ्गरेजी सैन्यका बहुत बड़ा भाग काबुलसे वापस आ गया। सिर्फ़ आठ हजार सिपाहियोंकी अङ्गरेजी फ़ौज काबुलमें रह

गई। इसके अतिरिक्त शाहशुजाके पास उसके ६ हजार सिपाही थे। मेकनाटन साहब अङ्गरेजोंका राजदूत होकर और बरनेस साहब उसका साथी बनकर काबुलमे रहा।

कोई दो सालतक अङ्गरेजों और शाहशुजाने मिलकर काबुलपर राज्य किया।

यह हुई शाहशुजाकी बात। अब अमीर दोस्तमुहम्मदका हाल सुनिये। नैरङ्ग अफगानमें लिखा है,—"जब गजनी फतह हो गया और अमीर दोस्त मुहम्मदका लड़का गजनीमें बड़ी लड़ाई लड़नेके उपरान्त कैद हो गया, तो शाहशुजा काबुलकी ओर बढ़ा। इधर अमीर दोस्तमुहम्मद खांको जब मालूम हुआ, कि शाह शुजा काबुलके समीप आ गया, तो उसने अफगान सरदारोंको अपने खेमेमें बुलाया और अपना साथ देनेके लिये सबसे कसमें ली। सबने शपथ किया, कि जबतक शरीरमें प्राण हैं, हम आपके वैरीसे लड़ेंगे। इसके उपरान्त अमीरने प्रण किया, कि जबतक शाहको पकड़ न लू, या लड़ाईमें मारा न जाऊं और अपने पुत्रको छुड़ा न लू तलवार नियाममें न करूंगा। शाह शुजाको और जब इस दृढ़ प्रणका समाचार पहुंचा, तो उदासी छा गई। लोगोंने कानाफूसी की, कि हैदरखांने बिना अधिक सैन्यके गजनीमें घोर युद्ध किया था। अमीरके पास तो सैन्य है—उसके भाई बेटे हैं। वह और भी भयङ्कर युद्ध करेगा। उचित है, कि जिन लोगोंने अमीरकी ओरसे युद्ध करनेका प्रण किया है, शाह उन्हें अपने पास बुलावें। उनको रुपये देकर अपनी ओर मिला लें। वह लोग बुलाये गये और

यह शाहसे रुपये और जागीरें पाकर अमीरके विरुद्ध हो गये। शाह बहुत प्रसन्न हुआ और अमीरको अकेला समझकर तुरन्त ही काबुलकी ओर रवाना हुआ। किन्तु एक खैरखाह नौकरने अमीरको सूचित कर दिया, कि यदि आज की रात आप यहांसे चले न जायँगे, तो आप मारे जावेंगे, या पकड़ लिये जावेंगे। अमीरने अपने अकेले होनेपर बहुत दुःख किया। यह भी ख़याल किया, कि यहांसे यदि चला न जाऊँगा, तो मारा जाऊँगा और मेरे लड़केबाले पकड़ लिये जायँगे। इससे यही उचित है, कि अपने परिवारको किसी सुरक्षित स्थान भेजकर मैं कहीं चला जाऊं। कहीं जाकर और ठहरकर देखूं, कि मेरे अदृष्टमें क्या बदा है। उसने अपने लड़के मुहम्मद अकबर खांसे सलाह की। यह स्थिर हुआ, कि मुहम्मद अकबर खां परिवार लेकर बलख चला जावे। अमीर बामियानको रवाना हो। ऐसा ही हुआ। रातोरात मुहम्मद अकबर बलखकी ओर और अमीर बामियानकी ओर रवाना हुआ। इधर सबेरे शाह शुजा काबुलमें दाखिल हुआ। उसने सुना, कि अमीर दोस्त मुहम्मद बामियान चला गया। अमीरकी गिरफ्तारीके लिये फ़ौजका एक दस्ता भेजा। किन्तु शाहके लश्करके एक आदमीने अमीरके पड़ावमें जाकर उसको खबर दी, कि आपको पकड़नेके लिये फ़ौज आ रही है। आप होशियार रहें। यह समाचार पाते ही अमीर रात हीको चल खड़ा हुआ। प्रातःकाल जब अङ्गरेजी फ़ौज पहुंची, तो उसने अमीरके पड़ावपर घोड़ोंकी लीद, घास और चूल्हेकी राख पड़ी

अमीर शेरमुहम्मद बुखारे न जाता। किन्तु जब शाह बुखाराने उसको बुलाया, तो वह वहाँ गया। इसका वृत्तान्त इस प्रकार है, कि जब शाह बुखाराको मालूम हुआ, कि शाह शुजाके डरसे अमीर शेर मुहम्मद खां कन्दज चला आया है। इसपर उसने अपना एक दूत कन्दज भेजा। उसकी मारफत अमीर शेर मुहम्मदको कहला भेजा, कि आपकी विपत्तिका हाल सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं बहुत दिनोंसे आपका दर्शन करना चाहता हूं। बहुत दिनोंसे आपका नाम और वीरताका हाल सुनता था, अमीर शाह बुखाराका पत्र पढ़कर और पैगाम सुनकर बुखारे चला। राहमें दो तीन दिनोंतक बलखमें ठहरा। अपने परिवारसे मिला। मुहम्मद अकबर खां अपने बड़े बेटेको साथ लेकर पांच सौ सवारोंके साथ बल्खसे बुखाराकी ओर रवाना हुआ। मंज़िलें तय करता हुआ बुखारा नगरके समीप पहुंचा, तो शाहकी आज्ञासे शाही अफसरोंने उसका स्वागत किया। अफसर उन्हें प्रतिष्ठापूर्वक अमीर और उसके लड़केको शाह बुखाराके पास ले गये। अमीरने यथानियम भेंट करनेके उपरान्त शाहको आशीर्वाद दिया। अमीरने शाहकी और शाहने अमीरकी प्रशंसा की। शाहने अमीरको अच्छी खिलअत और कितनी ही बहुमूल्य चीजें दीं। शाहने कहा, कि आप कुछ दिनोंतक यहां आराम करें। मैं आपकी सहायताके लिये अपने सर्दारोंसे सलाह लूंगा और तुर्कोंकी फौज आपके साथ करके काबुल फिर आपको दिलाऊंगा। बुखारेसे तीन कोसके अन्तरपर एक किला

था। शाह बुखाराने अमीरको उसीमें उतारा। अमीरके आराम के लिये क़िलेमें रसद भर दी गई। अमीरने यह कायदा रखा था, कि सप्ताहमें एकबार अपने पुत्र सरदार मुहम्मद अकबर खांके साथ शाह बुखाराके दरबार जाता था। एक दिन दरबारमें शाह बुखाराने दरबारियोंके सामने कहा, कि शाह शुजाने अमीरको गृहविहीन करके काबुलसे निकाल दिया है। वह अकेला काबुलसे बामियान और बामियानसे कन्दज आया। फिर वह वीर यहां पहुंचा। इनकी सहायता करना चाहिये। मन्त्रियोंने कहा, कि ऐसा करनेसे यश और कीर्त्ति अवश्य ही मिलेगी, किन्तु काबुलकी चारो ओर और कोह स्यागमें इतनी बरफ़ पड़ी है, कि राह बन्द हो गई है। फौजका जाना कठिन है। जब बरफ़ पिघलेगी, उस समय अमीरकी सहायता की जा सकती है। अमीरने इस बातको बहाना समझा और कहा, कि तुरकोंकी जाति कायर है। पोस्तीन और दुशालोंके होते हुए भी बरफ़से डरती है। जान पड़ता है, कि इन लोगोंने अपने देशसे बाहर कभी पैर नहीं रखा। स्त्रियोंकी भी अपेक्षा अधिक शरीरपालनमें रत रहते हैं। इनसे बहादुरीकी आशा नहीं की जा सकती। शाह बुखाराको इन बातोंसे बहुत दुःख हुआ और उसने अमीरको नसीहत की, कि अमीर तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं है। इसी लिये तुम ऐसी बातें मेरी जाति और मेरे सैन्यके बारेमें कहते हो। तुमको पदमर्यादाका विचार नहीं। अमीरके साथ साथ उनके पुत्र मुहम्मद अकबर खांने भी ऐसी ही बातें कहना शुरू कीं। अन्तमें दोस्त मुहम्मद खां बहुत क्रुद्ध हुआ।

कहा, कि अब मुझे बुखारेका दानापानी हराम है। यह कहकर अमीर उठा। शाह बुखाराके समझाने बुझानेका खयाल नहीं किया। जिस किलेमें ठहरा था, वहासे अपने साथियोंसहित चल खडा हुआ। इधर शाह बुखाराको खयाल हुआ, कि मैं आश्रयदाता था और अमीर आश्रित। मुझसे असन्तुष्ट होकर उसका चला जाना अच्छा नहीं। उसको राहसे वापस बुलाना चाहिये।

"इस विचारसे उसने अपने सईद नामक पहलवानको पांच सौ सवारोंके साथ अमीरको वापस लानेके लिये भेजा। अमीरने सईद और सवारोंको देखकर अनुमान किया, कि शाह बुखाराने यह फौज मेरे पकडनेके लिये भेजी है। यह भी अनुमान किया कि, मेरी दरबारकी बातोंसे असन्तुष्ट होकर शाह मुझको कैद करना चाहता है। पिता पुत्र इसी विचारमें थे, कि सईद पहुच गया और कहा, कि अमीर। ठहर जा, कहा जाता है। बादशाहने तुझे बुलाया है। तुझे मेरे साथ बुखारे चलना पडेगा। अमीरने जवाब दिया, कि अब मैं शाह बुखारापर विश्वास नहीं करता और मै बुखारे न जाऊंगा। न मैं उसका गुलाम हूं, न नौकर और न प्रजा। सईदने अमीरसे अनुरोध किया और उसकी कमरमें हाथ डालकर अपनी ओर खींचा। अन्तमे दोनो ओरसे तलवारें निकल पडी और मार काट हुई।

"कहते हैं, कि इस लडाईमें कोइ दो सौ तुर्क हताहत हुए। अमीरके भी कुछ आदमी मारे गये। अमीरका घोडा घायल हुआ। मुहम्मद अकबर खा जखमी होकर घोडेसे गिर

पड़ा और बेहोश हो गया। घोड़ेके घायल हो जानेसे अमीर एक जगह ठहर गया। इसी समय बुखारेके सवारोंने अमीरको घेर लिया और इसी दशामें उसको बुखारे ले गये। मर्दने अमीर और उसके बेटेको शाह बुखाराके सामने पेश किया। साथ साथ दोनोंके शौर्य वीर्यकी प्रशंसा की। कहा, कि अमीर दोस्त मुहम्मद खां और सरदार मुहम्मद खाकासा कोई अफ़गान बहादुर नहीं देखा। यह दोनो जिसपर तलवार मारते, उसके दो टकड़े होते थे। अमीरने एक भालेसे दो सवारोंको छेदकर जीनसे उठा लिया था। यही बात उसके लड़के मुहम्मद अकबर खांने की। मैं नहीं कह सकता कि यह मनुष्य हैं, वा दैत्य। युद्धके समय यह अपनी जान अशवत समझ रहे थे। अमीरका घोड़ा यदि घायल न हो जाता, तो अमीर कदापि पकड़ा न जाता। शाह बुखाराने अमीरके पराक्रमका हाल सुनकर अपने दिलमें कहा, कि ऐसे बहादुरोंको मारना वा कैद करना शाहाना शानके खिलाफ़ है।

शाहने उनका अपराध क्षमा किया। उनके घावकी दवा कराई। जब सरदार मुहम्मद खांके भी जखम अच्छे हो चुके, तो अमीर दोस्त मुहम्मदने शाहसे कहा, कि अब आप मुझे आज्ञा दीजिये। चलकर अपने बाल बच्चोंसे मिलूं। शाह बुखाराने कहा, कि मैंने आपको इसलिये बुलाया था, कि आपकी सहायता करके आपको फिर काबुलके सिंहासनपर बैठाऊं। किन्तु आपकी कठोर बातोंसे कुल तुर्क दुखी हो गये हैं। आपके मददके साथ लड़नेसे वह और भी असन्तुष्ट हो गये हैं। इसलिये यहां आपका ठहरना उचित नहीं।

आप जिस तरफ जाना चाहते हैं, जाइये। भगवान आपके सहाय होंगे। फिर कहा, कि अशरफियोंकी थैलियां, दो घोड़े और साज सामान अमीर और उनके पुत्रको दे दिये जावें। शाहने अमीरको राहदारीका परवाना देकर विदा किया।

"अमीर दोस्त मुहम्मद खां अकबर खांके साथ बुखारेसे कन्दज वापस आया। वहां अपना कुटुम्ब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिनोंतक वहीं ठहरा। फिर एक दिन उसके मनमें आया, कि अपने परिवारको किसी सुरक्षित जगह भेज देना चाहिये। कुश उसको सुरक्षित जान पड़ा! अमीर वहांके हाकिमपर विश्वास करता था। अमीरने अपने भाई जब्बार खांके साथ अपना परिवार कुश भेजा। जब्बार खां जब तीन या चार मंज़िल पहुंचा, तो उसने शाह शुजाको चिट्ठी लिखी, कि यदि आप मुझे रुपये और जागीर दें, तो मैं अमीरका परिवार कुश न ले जाकर आपके पास लाऊं। यह चिट्ठी पाते ही शाह शुजाने अपना एक विश्वस्त कर्मचारी जब्बारके पास भेजा। जब्बारको कहलाया, कि तुम शीघ्र ही दोस्त मुहम्मदके कुटुम्बसहित काबुल चले आओ। मैं तुमको इतना धन दूंगा, जितना तुमने कभी स्वप्नमें भी देखा न होगा। अमीरने जब्बारके पास अपने कर्मचारीकी मारफत बहुतसी अशरफियां भेज दीं। जब्बार खां अशरफियां पाकर बहुत सन्तुष्ट हुआ और अन्तमें अमीरके परिवारसहित काबुल पहुंचा।

"इधर अमीर अपना परिवार कन्दजसे भेजकर निश्चिन्त हो गया। वह सैर और शिकारमें लगा। एक दिन एक

मनुष्यने अमीरको खबर दी, कि आप तो चैन कर रहे हैं, किन्तु आपके भाई जब्बारने रुपयेके लालचसे आपका परिवार काबुल पहुंचा दिया। यह सुनकर अमीर बहुत घबराया। जब घबराहट कम हुई, तो परमेश्वरसे सहायता पानेकी प्रार्थना करने लगा। इस घटनासे वह इतना विह्वल हुआ, कि एक दिन यमधर मारकर आत्महत्या करनेपर उद्यत हुआ। ऐसे ही समय कन्दनका हाकिम यहां आ गया। उसने अमीरका हाथ पकड़ लिया और समझाया, कि अपमृत्यु अच्छी नहीं। मरना ही है तो सम्मुख समरमें मरिये। यदि जीत गये तो अच्छा है, मारे गये तो शहादत पाइयेगा। मेरे पास जो खज़ाना है, उसे आपको देता हूं। मेरी फ़ौज अपनी फ़ौज समझिये। कुछ दिन धीरज धरिये। मैं सुप्रसिद्ध वीरों और पहलवानोंको एकत्र करके आपके साथ किये देता हूं। हाकिमने अपनी बात पूरी की। जब कुल फ़ौज अमीरके पास जमा हो गई, तब वह कन्दनसे काबुलकी ओर चला। बुतेवामियानमें पहुंचकर पड़ाव किया। फ़ौजमें प्रत्येक जातिके सिपाहियोंपर उसी जातिका अफ़सर नियुक्त किया। कुछ फ़ौज दाहने रखी, कुछ बांये। बीचमें आप हुआ। कह दिया, कि लड़नेके समय इसी कायदेसे युद्ध करना होगा। उधर शाह शुजाने अमीरके आनेका समाचार पाकर एक फ़ौज मुक़ाबिलेके लिये भेजी। पांच अङ्गरेज अफ़सरोंकी अधीनतामें कोई बीस हजार सिपाही बुते बामियानकी ओर रवाना हुए। जब यह फ़ौज अमीरकी फ़ौजके समीप पहुंची, तो सरदारोंने सलाह करके अमीरको

पास एक सरदार भेजा और कहलाया, कि आप वृथा ही अपनी जान देना और शाही फौजसे सामना करना चाहते हैं। आप जङ्गल जङ्गल पहाड़ पहाड़ भटकते फिरते हैं। उचित तो यह था, कि आप शाहकी सेवामें चले आते। शाह आपको शरण देंगे और आपका देश आपको लौटा देंगे। सरदारकी यह बात सुनकर अमीरको बहुत क्रोध आया। उसने सरदारसे कहा, कि यह बादशाह अन्यायी और अत्याचारी है। वह इस योग्य नहीं, कि मैं उसकी सेवा स्वीकार करूं। काटन साहबसे कह देना, कि कल मैं युद्ध करूंगा। अब कभी ऐसा सन्देसा मुझे न भेजा जावे।

दूसरे दिन अमीर तुरकी फौज लेकर अङ्गरेजी फौजके सामने आया। अङ्गरेजोंकी शिक्षित सैन्यकी गोली गोलोंके सामने अमीरके रङ्गरूट सिपाही भागे। अमीरका पड़ाव लुट गया। इस पराजयसे अमीर बहुत दुःखी हुआ। रात्रिके समय भगवानसे प्रार्थना करने और रोने लगा। अमीरके रोनेकी आवाज सुनकर तुरकी अफसर अमीरके पास आये। कहा हम लोगोंने पहले अङ्गरेजोंके युद्ध करनेका ढङ्ग देखा नहीं था। इसीलिये गोली गोलोंके सामने ठहर नहीं सके। दूसरी लड़ाईमें हम लोग जीतेंगे और बन पड़ेगा, तो अङ्गरेजी फौजका एक भी आदमी जीता न छोड़ेंगे। इसके उपरान्त सबने अमीरके सामने शपथपूर्वक प्रण किया, कि जबतक हमारे शरीरमें प्राण हैं हम युद्ध करेंगे। इस प्रणसे अमीरके निर्बल हृदयमें बलका सञ्चार हुआ। उसने अपनी फौज फिरसे दुरुस्त की और युद्धस्थलमें आ डटा।

"दूसरी लड़ाईमें अङ्गरेजी फौजने बडी चेष्टा की। खूब गोली गोले बरसाये। किन्तु अमीरकी सैन्य अग्निवृष्टिकी परवा न करके आगे बढी और अङ्गरेजी सैन्यसे भिड गई। घोर युद्ध हुआ। काटन साहबकी फौजके आधे आदमी मारे गये। युद्ध देखनेवालोंका बयान है, कि अमीरकी फौजके सिपाही जिसपर तलवारका भरपूर हाथ मारते उसके ककडी कैसे दो टुकडे करते। अन्तमें अङ्गरेजी फौजके पैर उखडे। वह भागकर एक पहाड़पर चढ गई। अमीर दोस्त मुहम्मद खां इस युद्धमें बहुत थक गया था। वह अङ्गरेजी फौजका पीछा नहीं कर सका। उसने दूसरे पहाडपर चढ़कर दम लिया। दोनो ओरकी फौज एक सप्ताहतक सुस्ताती रही। सिर्फ शत्रुतो सिपाहियोंमें छोटी मोटी लडाइया हो जाया करती थीं। उधर अमीर यह सोच रहा था, कि या तो लडते लडते मारा जाऊं या काबुल पहुंचकर शाह शुजासे अपना बदला लूं और अपना परिवार कैदसे छुडाऊं। इसके उपरान्त किसी ऐसी जगह चला जाऊं, कि फिर मेरा हाल किसीको मालूम न हो। अमीर न तो गोलेसे डरता था और न गोलियोंसे। वह अपनी जान हथेलीपर रखे हुआ था।

एक सप्ताहके उपरान्त अङ्गरेजी फौज पहाडसे उतरकर मैदानमें आई। फौजके अफसरने अमीरको कहला भेजा, कि या तो आप उतरकर युद्ध करें, अन्यथा मैं आपपर आक्रमण करूंगा। अमीरने जवाब दिया, कि कलसे मैं युद्धमें प्रवृत्त हूंगा। दूसरे दिन दोनो फौजोंका सामना हुआ। एक ओरसे गोले गोलिया चलती थीं,—दूसरी ओरसे सवार और

पैदल सिर्फ तलवारें खींचकर धावा मारते हुए आक्र-मण करते थे। अमीरके सवारोंने अङ्गरेजोंके तोपखानेपर आक्रमण किया। तोपखानेने गोले मार मारकर आते हुए सवार उड़ाना आरम्भ किये। अधिकांश सवार उड़ गये अन्तमें जो बचे, वह तोपखानेतक पहुंचे। उन लोगोंने वह पहुंचते ही तोपखानेके सिपाहियोंके टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये। इसके उपरान्त वही सवार अङ्गरेजोंकी शिक्षित सैन्यपर टूट पड़े। अङ्गरेजी सैन्य सङ्गीनों और तमचोंसे सवारोंको मारने लगी। इसी अवसरमें अमीरकी सैन्यने अङ्गरेजी फौजपर पीछे और आगेसे आक्रमण किया। उस समय अङ्गरेजी फौज बहुत चिन्तित हुई। फौजने अपने खजानेके कोई पैंतीस लाख रुपये नदीमें फेंक दिये और वह भागकर एक पर्वतपर चढ़ गई। अमीरकी फौजने अङ्गरेजी फौजका पड़ाव लूट लिया। अमीर भी दूसरे पहाड़पर चला गया और अपने घायलोंकी औषधि करने लगा।

"अब अमीरने दृढ़ सङ्कल्प किया, कि मैं काबुलपर अवश्य ही आक्रमण करूंगा। इधर अङ्गरेजी सैन्यके सेनापति बहुत चिन्तित थे। उन्होंने रात्रिके समय कप्तान बाकरको उस अङ्ग रेजी फौजमें भेजा, जो युद्धस्थल और काबुलके बीचमें पड़ी थी। यह क्रुमकी फौज थी। कप्तान बाकरने क्रुमकी सैन्यके सेनाप तिसे जाकर कहा, कि जो सैन्य अमीरसे लड़ रही है, वह आधी मारी जा चुकी है। जो बची है, घायल पड़ी हुई है। हम लोग अपना खजाना पानीमें डाल चुके हैं। अमीर मनुष्य नहीं, वरच दैत्य जान पड़ता है। गोला गोलीकी वृष्टिमें बेध-

तक घुस आता है। यही दशा उनके तुरकी सिपाहियोंकी है। लड़ाईके समय वह अपनी दाढ़िया मुंहमें दबा लेते हैं और तलवारें खींचकर हमारी फौजपर आ टूटते हैं। घोर युद्ध करते हैं। हम लोगोंने दो सप्ताहतक युद्ध किया। तोप बन्दूकसे खूब काम लिया। पर लड़ाईमें अमीर हीका पल्ला भारी रहा। प्रत्येक वार उसने हमारे सिपाहियों और अफसरोंको मारा। अब हम सिपाहियोंका छोटासा झुण्ड लिये दो पहाड़ोंके बीचमें पड़े हुए हैं। उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है। आप शीघ्र ही कुमकी फौज लेकर चलिये। न चलियेगा, तो हमारी थोड़ीसी फौज मारी जायगी। कप्तान थाकरकी बात सुनकर कुमकी सैन्यके सेनापतिको चिन्ता हुई। उसने इस घटनाका समाचार काबुल भेजा।

"इधर अमीरने अपनी छोटीसी फौज और नाममात्रके खजा नेपर निगाह की। खयाल किया, कि इस दशामें मैं काबुल कैसे पहुंच सकूंगा। किन्तु वह अपनी जिन्दगीसे हाथ धो चुका था। इस लिये सिर्फ दो हजार सवार लेकर काबुलकी ओर रवाना हो गया। राहमें उसको सय्यद नामे नगर मिला। सय्यद मसजिदी नगरका हाकिम था। वह अगवानी करके अमीरको अपने किलेमें ले गया। वहां अमीरकी दावतें कीं। हाकिमकी हठसे अमीर कुछ दिनोंतक किलेमें रहा। सेनापति काटन साहबको जब यह हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने सय्यद मसजिदीके पास अपना एक दूत भेजा। दूतकी मारफत सय्यदको कहलाया, कि अमीरको गिरफतार करके मेरे पास भेज दो। भेज दोगे तो पारितोषिक पाओगे, न भेजोगे,

तो आफतमें फंसोगे। सय्यद मसजिदीने दूतको जवाब दिया कि साहबको इस बातका जवाब मैं तलवार और खञ्जरसे देना चाहता हूं। दूत यह सुनकर चला गया। दूसरे दिन अमीर दोस्त मुहम्मद और सय्यद मसजिदी तुरकी फौज लेकर काटनकी फौजके सामने पहुचे। सामने पहुंचते ही नियमानुसार अमीरकी फौजने बादशाही फौजपर आक्रमण किया। दोनों ओर मजेसे तलवारें चलने लगीं। कहीं कहीं सिपाही इतने भिड गये, कि आपसमें कुशती होने लगी। एकको दूसरेकी खबर नहीं थी। यह नहीं मालूम, कि काटन साहब कहां मारे गये। रेट साहब गुम हो गये। अङ्गरेजी सैन्यके कुल सिपाही हताहत हुए। अमीरने अङ्गरेजी फौजका कुल साज सामान लूट लिया। इसके बाद अमीर सय्यद मसजिदीके साथ अपने डेरेपर वापस आया। जब सेनापति सीलको यह हाल मालूम हुआ, तो वह स्वय अपनी फौज लेकर अमीरसे लडने और अपनी फौजकी सहायता करनेके लिये चला। राहमें उसको अपनी फौजके परास्त होने और दो अङ्गरेज अफसरोंके मारे जानेका हाल मालूम हुआ। इस समाचारसे उसे बहुत दुःख हुआ। लारेंस साहब हिन्दूकुश पर्वतपर अपनी फौज लिये पडा था। सीलने उसको सैन्यसहित अपने पास बुला लिया। अङ्गरेजी फौजमें बहुत सिपाही हो गये। इस फौजने आगे बढकर यशट किलेको घेर लिया। किलेपर इतने गोले बरसाये, कि किलेके बुर्ज आदि टूट गये। यह देखकर अमीर और सय्यद मसजिदी चिन्तित हुए। उनको भय हुआ, कि किसी समय अङ्गरेजी फौज किलेमें घुस आवेगी।

"एक दिन अमीर और सय्यद मसजिदीने किलेका खजाना अपने साथ लिया और बाकी सामान फूक दिया। इसके उपरान्त वह अपनी फौजके साथ किलेसे बाहर निकले और अङ्गरेजी फौजसे लड भिड़कर निकल गये। एक पहाड़पर चढ़कर दम लिया। रात्रिके समय युद्ध नहीं हुआ। अङ्गरेजी फौजने यग़द नगरमें आग लगाकर उसको भस्म कर दिया। प्रातःकाल सय्यद मसजिदी पर्व्वतपरसे उतरा और अपनी सिपाहियोंको मारकर सीलकी सैन्यपर आक्रमण करनेके लिये बढ़ा। किन्तु कर न सका। कारण, सीलको सय्यदके आनेका समाचार पहले ही मिल चुका था। उसने तोपें लगवा दी थी और एक किलासा बना लिया था। इसके उपरान्त फिर यह न मालूम हुआ, कि सय्यद मसजिदीका क्या हुआ। वह मारा गया या किसी ओर चला गया। प्रातःकाल अमीर भी पहाड़से उतरा और अङ्गरेजोंकी फौजसे लड़कर फिर पहाड़पर चढ़ गया। एक सप्ताहतक अमीर इसी प्रकार लड़ता रहा। किन्तु रात्रिके आक्रमणके डरसे एक जगह नहीं ठहरता था। एक पर्व्वतसे दूसरेपर चला जाता था। इधर अङ्गरेजी फौज रात्रिके आक्रमणसे डरती थी। उसका अधिकांश रातभर कमर कसे तय्यार रहता था। जब अमीरने देखा, कि उसके सिपाही इस तरह लड़ते लड़ते थक गये हैं, तो वह अपने सिपाहियोंको लेकर आजीहिसार नामी किलेमें पहुंचा। आजीहिसारके हाकिमने प्रत्यक्षमें अमीरका बहुत सम्मान किया। अमीरकी जियाफत की—कुछ सामान नजर किये और दिनरात नौकरोंकी तरह अमीरके पास रहने लगा। किन्तु उसका यह सब काम

नज़ली था। वह अमीरसे प्राय: कहता था, कि यह दुर्ग बहुत सुदृढ़ है। आप किसी तरहकी चिन्ता न करें। निश्चिन्त होकर यहां रहें। आपका वैरी यदि यहां आवेगा, तो मैं अपनी सैन्यसे उसका सामना करूंगा। किन्तु अमीर दोस्त मुहम्मदने उसकी बातोंसे उसको ताड़ लिया था। वह उसपर विश्वास नहीं करता था और बहुत सावधानीके साथ रहता था।

"अमीरकी यहांकी स्थितिका हाल भी सेनापतिको मालूम हुआ। यह भी मालूम हुआ, कि अमीर वहां लड़नेका सामान एकत्र कर रहा है। सामान एकत्र करते ही वह काबुलपर चढ़ाई करेगा। सेनापतिने खयाल किया, कि अमीर यदि काबुलपर चढ़ गया, तो पहले वह शाह शुजाको मार डालेगा। इसके उपरान्त काबुलमें आग लगाकर उसे भस्म कर देगा। यह सोचकर उसने दृढ़ सङ्कल्प किया, कि अमीरको काबुल न जाने दूंगा। उसने बहुतसे सिपाही और तोपें एकत्र कीं। इसके उपरान्त वह आलीहिसार पहुंचा और उसने किला घेर लिया। अमीरने किलेपरसे देखा, कि बहुत बड़ी फ़ौज किला घेरे पड़ी है। इसपर वह अपनी सुदीर्घ फ़ौज लेकर किलेसे निकल आया और अङ्गरेज़ी फ़ौजपर टूट पड़ा। घमसान युद्ध करनेके उपरान्त फिर किलेमें वापस गया। इधर अङ्गरेज सेनापतिने किलेकी गिर्द मोरचे बना दिये और कोई सात दिनोंतक किलेपर गोलोंकी वृष्टि की। इसका कोई फल नहीं हुआ। अन्तमें अमीर किलेमें घिरा घिरा घबराया। उसकी रसद भी घट गई थी और साथियोंके लड़

नेके किलेमें बहुत बदबू फैल गई थी। एक रात उसने किलेमें आग लगा दी और अपनी फौजके साथ अङ्गरेजी फौज चीरता फाड़ता थल्सर किलेकी ओर चला। इस किलेके हाकिमने भी अमीरका स्वागत किया, किन्तु स्वच्छ हृदयसे नहीं। अमीरने किलेमें पहुंचकर अपने घोड़े चरागाहोंमें चरने और मोटे होनेको छोड़ दिये। आप सैन्यसहित दम लेने लगा। इधर किलेके दगाबाज हाकिमने सेनापति नोल साहबको समाचार दिया, कि अमीर मेरे किलेमें उतरा है। आप शीघ्र ही आवें। किला घेर लें। किलेके फाटककी ताली मेरे पास है। मैं द्वार खोल दूंगा। अमीरको इस घटनाकी खबर न मिली। एक दिन सबेरे अमीरका एक सिपाही किलेसे बाहर निकला। उसने अङ्गरेजी फौजको किला घेरे पाया। वह उलटे पैर लौटकर अमीरके पास गया। उसने उन्हें जगाकर अङ्गरेजी फौजके आनेकी खबर दी। अमीर तुरन्त ही किलेकी दीवारपर आया। उसने अपनी चारों ओर अङ्गरेजी फौज देखी। यह देखकर अपने सिपाहियोंको कमर कसने और किलेके हाकिमसे किलेके फाटककी ताली ले लेनेके लिये कहा। इसपर दगाबाज हाकिम अमीरके पास आया। कहने लगा, कि मैं हैरान हूं, कि आपके यहां आनेकी खबर किसने अङ्गरेजी फौजको दी। आज्ञा दीजिये, तो मैं किलेका फाटक खोलकर बाहर जाऊं और अङ्गरेजी फौजका हाल मालूम करूं। अमीर हाकिमका चेहरा देखते ही उसकी दगाबाजी समझ गया। कहा, बदमाश! तूने ही यह सब किया है। मैं तेरा मेहमान था

और तूने मेरे मरवा डालनेकी फिक्र की। तूने जैसा किया, अब उसका फल चख! यह कहकर तलवारसे उसका सिर काट डाला। फिर उसके घरमे घुसकर उसके घरानेमें किसीको भी जीता न छोडा। इसके उपरान्त अपनी फौज लेकर किलेके फाटकपर आया और दरवाजा खुलवाकर अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण किया। अमीर जान हथेलीपर लिये गोला गोलीकी वृष्टिसे होता हुआ साफ निकल गया और एक पहाडपर पहुंच गया। दो सप्ताहतक पहाडपर ठहरा रहा। वहां पहाडी जवानोंकी एक फौज तय्यार की।

"इधर अङ्गरेज सेनापतिको जब अमीरका पता लगा, तो अपना दलबल लेकर अमीरके सामने पहुंच गया। अमीर भी सेनापतिको देखकर पहाडसे उतरा। युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध प्रातःकालसे लेकर सन्ध्यापर्य्यन्त हुआ। युद्धस्थल लाशोंसे भर गया। अन्तमें दोनो फौजें अलग हुई और अपने अपने पडावपर लौट गई। दूसरे दिन अमीर फिर पहाडसे उतरा और अङ्गरेजी फौजसे लडकर पहाडपर वापस चला गया। कुछ दिनोंतक ऐसा ही हुआ। दिनको युद्ध होता और रातको दोनो फौजें अलग हो जातीं। सेनापति सील इस युद्धसे बहुत हैरान हुआ। कारण, उसकी फौज रातको आराम नहीं कर सकती थी। दिनको लडने होसे फुरसत नहीं पाती थी। वह स्वयं हर घडी कमर कसे रहता था। न मुसलमानों-की लाशोंको कफन और कब्र मिलती थी—न हिन्दुओंको ला-शोंको आग। सील अमीरके लिये दुःखी था। वह जानता था, कि अमीरका देश छिन गया है—उसके बाल बच्चे काबुलमें

कैद है—इसीलिये वह अपनी जानकी परवा न करके लड़ रहा है और इसी तरह लड़ता लड़ता एक दिन मारा जावेगा। उसने विचार किया, कि क्या ही अच्छा हो, यदि यह वीर पुरुष अकालमृत्यु से बच जावे और हमारी शरण चला आवे। सेनापतिने एक दूतकी मारफत यही बात अमीरसे कहलाई। अमीरने दूतको प्रतिष्ठापूर्वक अपने सामने बुलाया। सेनापतिका पैगाम सुना और जवाब दिया, कि सील साहबने इस विचारसे मैं अनुगृहीत हुआ। किन्तु शाह शुजासे अत्याचारी बादशाहकी शरण जाना पसन्द नहीं करता। सील साहब यदि मुझपर अहसान करना चाहते हैं, तो मेरे बालबच्चोंको कैदसे छुड़ाकर मेरे पास भेज दें। मैं उन्हें लेकर ऐसी जगह जा बसूंगा, कि फिर मेरा नाम निशान किसीके सुननेमें न आवेगा। किन्तु जबतक मेरा कुटुम्ब कैद है और मेरे शरीरमें प्राण हैं, तबतक मैं बिना युद्धके न रहूंगा। दूतने वापस आकर सील साहबको अमीरकी उक्त बात सुनाई। सील समझ गया, कि अमीर साधारण मनुष्य नहीं है। फिर उसने फ्रेजर साहबके सेनापतित्वमें एक फौज अमीरसे युद्ध करनेके लिये नियुक्त की। अमीर भी फ्रेजरके मुकाबले डट गया।

इस युद्धमें कुछ नयापन हुआ। अङ्गरेजोंने अमीरसे कहला भेजा, कि दोनो सैन्यका एक एक मनुष्य युद्धस्थलमें आवे। वही लड़े, बाकी सिपाही दूर खड़े रहें। फ्रेजर साहबने सोचा था, कि इस पुराने ढङ्गके युद्धमें बिना विशेष मारकाटके अमीर मारा जा सकता है। अमीरको जो आदमी मार देगा,

उसकी नामवरी भी कम न होगी। यह विचारकर खयं फ्रेजर साहब अपनी फौजसे अकेला निकलकर युद्वस्थलमें आया और अपने मुकाबलेके लिये अमीरको बुलाया। अमीर अपना नाम सुनते ही उसके सामने आ गया। कहा, साहब! अपनी हिम्मत दिखाइये, जिसमें आपके मनमें कोई हौसला बाकी न रहे। फ्रेजरने अमीरपर तलवारकी दो चोटें कीं। अमीर खफ्तान पहने था, इसलिये उसपर कोई असर न हुआ। अमीरने हंसकर कहा, इसी दल और हथियारके भरोसे मेरे सामने आये थे। अब ठहरो और मेरा भी जोर देखो। यह कहकर अमीरने तलवारका वार किया। पहले ही वारमें फ्रेजरका हाथ कटकर जमीनपर गिर पड़ा। फ्रेजरने पीठ फेरी। चाहा, कि भागे, किन्तु अमीरने उसकी पीठपर और एक घाव लगाया। इसके उपरान्त कप्तान मम्ली (?) अमीरके सामने आया। अमीरने इसकी कमरपर वार किया। कप्तान कमरसे दो टुकड़े हो गया। नीचेका धड़ घोड़ेकी पीठपर रह गया, ऊपरका नीचे गिर पड़ा। इसके उपरान्त कप्तान बाकर आया। इसने आते ही अमीरपर बरछी चलाई। अमीरने उसकी बरछी खाली दी और उसके घोड़ेकी बराबर अपना घोड़ा ले जाकर उसके शिरपर ऐसा खञ्जर मारा, कि दिमागतक घुस गया। इसपर कप्तान बाकर भागने लगा, किन्तु अमीरने उसको पकड़ लिया और घोड़ेसे उठाकर जमीनपर इस जोरसे पटका, कि कप्तानका दम निकल गया। यह देखकर एक मोटे ताजे डाकर अमीरके सामने आये। अमीरने डाकरका सामना करना अपनी अप्रतिष्ठा समझी।

सलिये अमीरने लड़के अफ़ज़ल खाँको उसके मुकाबलेके लिये भेज दिया। इससे डाक्टर बहुत क्रुद्ध हुआ। बड़े क्रोधसे उसने अफ़ज़ल खाँपर आक्रमण किया। डाक्टरने अफ़ज़लपर तलवारका वार करना चाहा, किन्तु अफ़ज़लने इससे पहले ही डाक्टरके घोड़ेपर एक गदा मारी। डाक्टरका घोड़ा ज़ख्म खा गिर पड़ा और डाक्टर भाग गये। इसी तरहसे अमीर का दूसरा लड़का सेख़ों नामे अफ़सरसे लड़ा और उसने भी अपनी वीरता प्रकट की।

जब इसतरह युद्ध समाप्त न हुआ, तो दोनों ओरकी फ़ौजें भिड़ गईं। एक ओरसे अङ्गरेज़ी फ़ौज अमीरकी फ़ौजपर गोले गोली बरसा रही थी,—दूसरी ओरसे अमीरके सिपाही अङ्गरेज़ी तोपख़ानेकी तरफ़ टूटे पड़े थे और नङ्गी तलवार हरे आदिसे लड़ रहे थे। इस युद्धमें कोई एक हज़ार सिपाही और अफ़सर अङ्गरेज़ोंकी ओरके और कोई एक सौ सवार अमीरकी तरफ़के हताहत हुए। अब अमीरके पास उसके कुछ सिपाही और दो लड़के रह गये। इसी दशामें उसने एक पहाड़पर जाकर डेरा डाला। अङ्गरेज़ी फ़ौज इतना थक गई थी, कि वह अमीरका पीछा न कर सकी।

अब अमीरने देखा, कि मेरे अधिकांश सिपाही और मेरे इष्ट मित्र मारे जा चुके हैं। मेरे पास ख़ज़ाना भी नहीं है, कि मैं दूसरी फ़ौज तय्यार कर सकूँ। एक ओर मेरी यह दशा है, दूसरी ओर अङ्गरेज़ी फ़ौज प्रति दिवस मुझपर आक्रमण कर रही है। मैं तो अङ्गरेज़ी फ़ौजसे सामना करने लायक नहीं

हूं और ऐसा कोई सुरक्षित स्थान वा सहायक भी नहीं है, जिसकी शरण जाकर आत्मरक्षा कर सकूं। मैंने तो बहुत चाहा था, कि लड़ते लड़ते मारा जाऊं, किन्तु बिना मृत्युके कोई कैसे मर सकता है। मैं यही उचित समझता हूं, कि यहांसे अकेला काबुल जाऊं। वहां अङ्गरेज राजदूत मेकनाटन साहबके हाथ आत्म समर्पण कर दूं। आशा है, कि वह मेरे साथ न्याय करेगा—मेरी दशापर दया प्रकाश करेगा। यह स्थिर करके उसने अपने लोहेके कपड़े उतारे और एक नौकर साथ लेकर रात ही रात वह काबुलकी ओर चला। काबुल पहुंचकर मेकनाटन साहबके घर गया। सन्तरीसे कहा, वजीरको मेरे आनेकी खबर दे दो। मेकनाटन अमीरका नाम सुनते ही बाहर निकल आया। साहबको देखकर अमीर घोड़ेसे उतरा। मेकनाटन अमीरको अपने घरमें ले गया। उसने उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की और आनेका कारण पूछा। कहा, अमीर! कलतक तो आप युद्ध कर रहे थे,—आज इस तरह यहां क्यों चले आये? कल राततक आपके काबुल आनेकी खबरसे नगरमें हलचल पड़ी हुई थी। काबुलवासी बहुत चिन्तित थे। मेकनाटन साहबने यह बात पूछते पूछते कुछ अफगान सरदारोंको अमीरकी पहचानके लिये वहां बुलाया। सरदारोंने अमीरको देखते ही सलाम किया और उसके हाथ पैर चूमे। इसके बाद वह अमीरके पीछे जा खड़े हुए। अब मेकनाटनको निश्चय हो गया, कि यही अमीर है। उसने अमीरकी प्रतिष्ठा और ज्यादा की। अमीरने अपना हाल बयान करनेसे पहले अपनी कमरसे तलवार खोलकर मेकनाटनके

हुनाने की। कहा अब आपके सामने मुझे तलवार बांधना उचित नहीं है। यह देखकर मेकनाटनकी आंखोंमें आंसू आ गया। उसने तलवार फिर अमीरकी कमरसे बांध दी और कहा, कि मैं यह तलवार इङ्गलण्डकी ओरसे आपकी कमरसे बांधता हूं। असलमें यह तलवार आप हीको शोभा देती है। इसके उपरान्त मेकनाटनने अमीरके आनेका कारण फिर पूछा। अमीरने आदिसे अन्ततक अपनी कहानी कह सुनाई। अन्तमें कहा, कि अब मैं आपके पास न्यायप्रार्थी होकर आया हूं। मेकनाटनने कहा, कि आप धैर्य धरिये आपकी इच्छा पूर्ण करनेकी चेष्टा की जायेगी। अमीरने कहा, कि मेरी सिर्फ तीन इच्छा है। एक यह, कि आप मुझे शाहके सामने न ले जावें। दूसरे यह, कि आप मुझे भारतवर्ष भेज दें और मुझे मेरे लड़के हैदर खांसे मिला दें। तीसरी यह, कि मेरे लड़के अकबर खांको जन्दजसे नरमी और मुलायमतसे बुलावें। जब वह आ जावे, तो उनको भी मेरे पास हिन्दुस्थान भेज दें। मेकनाटन साहबने अमीरकी तीनो बातें स्वीकार कीं और उसे एक बहुत बड़े मकानमें ठहराया। साथ साथ आरामका बहुतसा सामान भेज दिया। अमीर गजनीसे अपना कुटुम्ब बुलाकर काबुलमें रहा। इसके उपरान्त भारतवर्षकी ओर चला। मेकनाटन साहबने निकलसन साहबको अमीरके साथ कर दिया। अमीर खैबरकी राहसे काबुलसे भारतवर्ष आया। अङ्गरेजोंने उसको लोधियानेमें रखा। कारण, लोधियानेमें अङ्गरेजोंकी फौज थी और वह अमीरकी देख भाल कर सकती थी।

"अमीरको लोधियानेमें सपरिवार रहते हुए बहुत दिन नहीं बीते थे, कि उस जमानेके गवरनर जनरल लार्ड आकलन्डने अमीरको कलकत्ते बुलाया। एक चिट्ठी लिखी। उसमें लिखा था, कि मैंने आपकी बहादुरीकी तारीफ सुनी है। अब आप कम्पनीकी शरण आये हैं,—इसलिये मैं आपसे मिलना चाहता हूं। मैं चाहता था, कि मैं खय आपकी मुलाकातको आऊं। पर कामके बखेड़ोंमें फंसा हुआ हूं। आसामकी ओर फौजें भेज रहा हूं। इसलिये इस समय मेरा आना नहीं हो सकता। आप यदि यहां आवेंगे, तो सैर कर सकेंगे मुझसे मिलेंगे और अपने लड़के गुलाम हैदर खांसे भी मुलाकात करेंगे। अमीरने चिट्ठीके जवाबमें लिखा, कि मुझे आपके पास आनेमें किसी तरहकी आपत्ति नहीं है। इसके उपरान्त अपना परिवार लोधियानेमें छोड़ा और कुछ आदमियोंको साथ लेकर कलकत्ते चला। मिष्टर निकेलसन अमीरके साथ था। जब अमीर कलकत्तेके समीप पहुंचा, तो गवरनर जनरल बहादुरने बड़े बड़े अफसरोंको उसकी अगवानीके लिये भेजा। बड़ी प्रतिष्ठाके साथ कलकत्तेमें दाखिल किया। एक सजे सजाये बड़े मकानमें ठहराया। गवरनर जनरलने अमीरकी खातिरदारीके लिये एक अफसर नियुक्त किया। अमीर कल कारखानों सड़कों, कम्पो घाड़ी हरियालियों और सुन्दरी स्त्रियोंको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। एक दिन अमीर और गवरनर जनरलकी मुलाकात हुई। उस दिन गवरनर जनरलके सिकत्तर तथा एडीकाङ्ग अमीरकी अगवानीको आये। जब अमीर उस कमरेके समीप पहुंचा, जिसमें गवरनर जनरल थे,

तो स्वयं गवरनर जनरल बहादुर अमीरको स्वागतके लिये, कमरेके बाहर निकल आये। अमीरका हाथ अपने हाथमें लेकर बैठनेकी जगह ले गये और उसे अपनी बराबरमें बैठाया। पूछा, कि भारतवर्षमें आप किस नगरमें रहना चाहते हैं। अमीरने जवाब दिया, कि अब मैं आपकी रक्षामें आ गया हूं, जिस जगह इच्छा हो रखिये। गवरनर जनरलने कहा, कि भारतवर्षका जितना भाग हमारे पास है, उसमें आप जहां चाहें, वहां रहें। इसके उपरान्त गवरनर जनरलने अमीरको एक तलवार मोतियोंकी माला और कितनी ही अङ्गरेजी चीजें नजर कीं। अन्तमें जिस जगहसे अगवानी करके अमीरको लाये थे, वहांतक पहुंचा दिया। अमीरके पास इतने रुपये रख दिये जाते थे, कि वह जिस समय जो चीज चाहता खरीद करता था। कलकत्तेमें अमीरने अपने और अपने परिवारके लिये लाखों रुपयेकी चीजें खरीदीं। अमीरके महलमें नाच रङ्गके जलसे हुआ करते थे। अमीर कभी कभी नाच घरमें जाता और उनको देखकर प्रसन्न हुआ करता था। तीन महीने तक अमीर कलकत्तेमें रहा। यहीं अपने लड़के गुलाम हैदर खांसे मिला। इसके उपरान्त वह लोधियानेकी ओर चला। किन्तु अभी निकट भी न पहुंचने पाया था, कि भारत सरकारको काबुलकी बगावतका हाल मालूम हुआ। अमीर जहां था, वहीं नजरबन्द कर लिया गया।"

पाठक स्वयं अमीर दोस्त मुहम्मदका हाल अच्छी तरह जान गये होंगे। सारका उद्धृत लेखखण्ड कुछ लम्बा है, किन्तु प्रयोजनीय सूचनाओंसे भरा हुआ है। इसे किसी

अङ्गरेजी पुस्तकमें अमीर दोस्त मुहम्मदका अधिक हाल नहीं मिला,—इसीलिये उक्त लेखकको मेरङ्गे अफगानसे उद्धृत करना पड़ा। अब हम अमीर दोस्तमुहम्मदके काबुलसे चले आनेके बादका अफगानस्थानका हाल लिखते हैं। अमीर जिस समय अङ्गरेजी सैन्यसे लड़ रहा था, उसी समयसे अफगानस्थानमें बगावतकी आग भड़क रही थी। बगावतकी आग भड़कनेके कई कारण इस प्रकार हैं,—

(१) शाह शुजा अफगानस्थानपर अधिकार करनेके उपरान्त एक सालतक विधिपूर्व्वक, न्यायपूर्व्वक देशका शासन करता रहा। इसके बाद उसने स्वभाववश अन्याय और अत्याचार करना आरम्भ किया। शाहने एक दिन मेकानटन,साहबसे कहा, कि यह अफगानजाति बहुताधनाढ्य है। धन सम्पत्तिके जदसे वह मेरी अवज्ञा किया करती है। अफगानोंको नम्र बनानेके लिये इनका मासिक वेतन घटा देना चाहिये इनकी जागीरोंका आधा भाग ले लेना चाहिये और इनका टिकस दूना कर देना चाहिये। मेकनाटन साहबने शाहको समझाया, कि यह आज्ञा अच्छी नहीं है। शाहने मेकनाटन साहबको जवाब दिया, कि आप विदेशी हैं। आपको यह नहीं मालूम, कि अफगान जाति जब कङ्गाल हो जाती है, तो शान्ति और नम्र हो जाती है और जब धनी रहती है, तो बादशाहकी बराबरी करना चाहती है। अन्तमें मेकनाटन साहबने बादशाहकी बात मान ली। शाहकी आज्ञा कार्य्यमें परिणत होते ही सम्पूर्ण अफगानस्थानमें बगावतके चिन्ह परिलक्षित होने लगे।

(२) इस घटनाके उपरान्त ही किसी अफगानने अपने

सहित स्त्रीका नाश किया। वह पकड़ा गया। मेकनाटन साहबके सामने उसने अपना अपराध स्वीकार किया। इसपर मेकनाटनने उसको नगर भरमें घसिटवाकर मरवा डाला। अफगानोंकी बगावतका यह दूसरा कारण हुआ। अफगान सोचने लगे, कि अब इस देशमें विदेशियोंका आईन चल गया है। इससे हमारी मर्य्यादापर ठेस लगेगी। घरकी स्त्रियां व्यभिचारिणी बनेंगी। पुरुष उनका व्यभिचार देखकर भी उन्हें किसी तरहका दण्ड न दे सकेंगे।

(३) बरनेस साहब एक दिन काबुल नगरकी सैर कर रहे थे। उन्होंने किसी कोठेपर एक सुन्दरी रमणी देखी। उसकी सूरत उन्हें भली मालूम पड़ी। आपने घर वापस आकर नगरके कोतवालसे कहा, कि अमुक महल्लेके अमुक मकानके स्वामीको बुलाओ। गृहस्वामी अफगान सिपाही था। बरनेस साहबने उससे कहा, कि मैं तेरी स्त्रीपर आसक्त हूं। तू यदि उसको मेरे पास लावेगा, तो मैं तुझे धन सम्पत्ति देकर मालामाल बना दूंगा। अफगान क्रोधसे आंखें लाल लाल करके बोला,—"साहब! ऐसी बात फिर न कहियेगा। नहीं, तो मैं तलवारसे आपकी गरदन उतार दूंगा।" बरनेसने इस अफगानको कैद कर लिया। अफगानके सम्बन्धी अफगान सरदारोंके पास गये। उनको बरनेसका सब हाल सुनाया। अफगान सरदार साहबके पास गये, किन्तु साहबने उन सबकी बात सुनकर उन्हें पिटवाकर निकलवा दिया। दूसरे दिन कुछ अफगान सरदार बरनेसके पास गये। उन लोगोंने बरनेसको बहुत कड़ी बातें सुनाई और अन्तमें उनकी हत्या की

अफगानोंकी सैन्यने बालाहिसारपर मोरचे बांधकर अङ्गरेजी फ़ौज और शाह शुजाकी फ़ौजका सम्बन्ध तोड़ दिया था। इस बाधासे अङ्गरेजी फ़ौजको रसद नहीं पहुंचती थी। अकबर खांने मेकनाटन साहबको पूर्व्वोक्त पत्र भेजकर बालाहिसारके मोरचे हटवा दिये। उधर दूतने वापस जाकर अकबर खांका पत्र मेकनाटन साहबको दिया। जुबानी भी कहा, कि मुहम्मद अकबर खां आपसे युद्ध करना नहीं चाहता। उसने बालाहिसारका मोरचा छोड़ दिया है। आप यदि उसकी तीनो शर्तें मान लेंगे, तो वह आपके पास आवेगा। मेकनाटन साहबने सोच समझकर तीनो बातें स्वीकार कर लीं। अकबर खांको लिख भेजा, कि आपकी शर्तें मञ्जूर हैं। आप आकर मुझसे मिलिये। आपको यदि यहां आनेसे इनकार हो, तो मुलाकातके लिये कोई दूसरी जगह चुनिये।

नेरङ्गे अफगानमें लिखा है,—"मेकनाटेन साहबने यह चिट्ठी भेजनेके बाद एक चाल खेली। मुहम्मद अकबर खांको लिखा, कि सरदार अमीन खां, अब्दुल्लह खा, मीरीं खां और अजीज खां यह सब अफगान सरदार आपके विरुद्ध हैं। जैसे ही मैं अफगानस्थानसे बाहर निकल जाऊं, आप इन लोगोंको मरवा डालियेगा। यह जीते रहगे, तो आप जीते न रहेंगे। मेकनाटेनने अकबर खांको तो यह लिखा और पूर्व्वोक्त अफगान सरदारोंको यह लिखा, कि मेरे अफगानस्थानसे बाहर निकलते ही तुम लोग अकबर खांको मार डालनेकी फ़िक्र करना। वह तुम लोगोंकी हत्या करना चाहता है। मुहम्मद अकबर खांको मेकनाटन साहबकी चिट्ठीपर सन्देह

हुआ। उसने रातको पूर्वोक्त सरदारोंको अपने खेमेमे बुलाया। मेकनाटन साहबकी चिट्ठी सबके सामने रख दी। यह सब देखकर सब सरदार आश्चर्यान्वित हुए और उन्होंने अपनी अपनी चिट्ठी भी निकालकर सरदार मुहम्मद अकबर खाके सामने रख दी। इन चिट्ठियोंको देखकर अकबर खाने कहा, कि आज मैं मेकनाटेन साहबसे मुलाकात करूंगा। तुम लोग मुलाकातके खेमेके पास मौजूद रहना। दूसरे दिन प्रातःकाल अमीरने मेकनाटेन साहबको जवाब दिया, कि अमुक पुलके बीचमें मैं खेमा खड़ा कराता हूं। आप वहां आइये। वहीं मेरी आपकी मुलाकात होगी। अमीरने पुलके बीचमे खेमा खड़ा कराया और उसमें बैठकर मेकनाटन साहबकी प्रतीक्षा करने लगा। उधर मेकनाटन साहबने एलफिन्सटन साहबको कहा, कि आप थोड़ीसी फौज लेकर खेमेके समीप छिप रहिये। जब मैं इशारा करूं, तो खेमेपर टूट पड़ियेगा और अकबर खांको कैद कर लीजियेगा। यदि मैं मारा जाऊं, तो आप सैन्यके प्रधान सेनापतिका पद ग्रहण कीजियेगा। इसके उपरान्त मेकनाटन, ट्रेवर, मेकनाटी और लारेन्स इन तीन अङ्गरेजों और कुछ सवारोंके साथ खेमेकी ओर चला। अकबर खांने खेमेसे बाहर निकलकर मेकनाटेनका स्वागत किया। मेकनाटनका हाथ अपने हाथमें लेकर खेमेमें वापस आया। दोनो बराबर बराबर बैठे। बात चीत आरम्भ होनेके उपरान्त अकबर खाने कहा, कि आप अफगानोंसे बहुत दुःखी जान पड़ते हैं। इसीलिये आप उन्हें धोखेमें डालकर आपसमें लड़ा देना चाहते हैं। आपने

कुछ अफगान सरदारोंको मेरे विरुद्ध और मुझे उनके खिलाफ चिट्ठिया लिखी। मैंने आपकी बातपर विश्वास करके मोर चौमिरसे अपनी फौज हटा ली। आपने उसके बदलेमें मेरे साथ चालाकी खेली। मेकनाटन साहब अकबर खांकी बात सुनकर लज्जित हुआ। उसके मुहसे बात न निकली। इसपर अकबर खाने डपटकर कहा, कि आप मेरी बातका जवाब दीजिये। मेकनाटन साहबसे जवाब तो बन न पडा, अकबर खांको समझाने लगा। कहा, कि आप नासमझीकी बातें न करें। मैंने जो कुछ कहा है, उसपर दृढ हू। मेरी हार्दिक इच्छा यही है, कि मैं यहासे भारतवर्ष चला जाऊं। आशा है, कि आप भी अपना वादा पूरा करेंगे।

"अकबर खा और मेकनाटेनमें ऐसी ही बातें हो रही थीं, कि एक अफगान अकबर खाके पास दौडता हुआ आया। पश्तो भाषामें कहा, कि एलफिंस्टन सैन्य लेकर आ रहा है और पुलके समीप पहुंचना चाहता है। यह सुनकर अकबर खा खडा हो गया। मेकनाटेन भी खडा हो गया और खेमेसे बाहर निकलने लगा। इसपर अकबर खांने मेकनाटेनका हाथ पकड लिया और कहा, कि मैं आपको नहीं छोड़ूगा। आप मेरे कैदी हैं। मैं आपको मार डालता, किन्तु बडा समझकर छोड देता हूं। इसपर मेकनाटेनने जेबसे तमञ्चा निकालकर अकबर खांको मारा। निशाना खाली गया। इसपर ट्रेवर साहब अकबर खांकी ओर बढ़ा, किन्तु अकबर खाने डांटकर कहा, कि तुम अपनी जगहपर रहो। अकबर खा मारकाट करना नहीं चाहता

था। उसकी आन्तरिक कामना थी, कि मेकनाटनको अभी कैद रखूंगा और फिर इस नियमपर छोड़ दूंगा, कि वह छूटते ही अफगानस्थानसे चला जाये। किन्तु मेकनाटेनने बुद्धिसे काम नहीं लिया। उसने अकबर खांके शिरपर एक घूसा मारा। इससे अकबर खां बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने भी मेकनाटेन साहबके शिरपर एक घूसा मारा। इसपर मेकनाटेन साहब अकबर खांको गालियां देने लगा। अकबर खां गालियां बरदाश्त न कर सका। उसने मेकनाटेनको पटककर और उसकी छातीपर चढ़कर उसकी छाती चीर डाली। यह देखकर ट्रेवर साहबने तलवार खींचकर अकबर खांपर आक्रमण किया। अकबर खां, तो बच गया, किन्तु उनका एक सरदार मारा गया। अकबर खां मैकेनजी और लारेन्सको पकड़कर अपने साथ ले गया। एलफिन्स्टनको जब यह समाचार मिला, तो वह अपनी थोड़ीसी फौजके साथ वापस चला गया।"

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिकामें यही बात इस तरह लिखी हुई है,—"सन १८४० ई० की २५ वीं दिसम्बरको अमीर दोस्त मुहम्मद खांके लड़के अकबर खां और सर डबलू मेकनाटनमें एक सन्धिबन्ध हुई। इस अवसरपर अकबर खांने अपने हाथसे मेकनाटेन साहबकी हत्या की।"

इस घटनाके उपरान्त उद्दण्ड काबुलियोंका जोश बहुत बढ़ गया। सेनापति एलफिंस्टन अपनी फौज लिये हुए छावनीमें पड़े थे। छावनीको चारों ओर बागी ... घेर लिये थे। अङ्गरेजी फौजको रसद ...

बह घिरावमे पडे पडे बहुत घबराई। अन्तमें एलफिंस्टन साहबने बागियोंके सरदार अकबर खासे सन्धि की। सन्धिपत्रका सार मर्म्म यह था, कि एलफिंस्टन साहब अपनी फौजके साथ काबुलसे भारतवर्षकी ओर चले जावें और अकबर खां उन्हें राहमे बाधा न दे। सन् १८४२ ई० की ६ठीं जनवरीको अङ्गरेजी फौज पडावसे बाहर निकली। फौजमे कोई चार हजार पाच सौ सिपाही और कोई १२ हजार नौकर चाकर थे। इन सिपाहियोंमें, ४४ नम्बर रेजिमेण्टके ६ सौ ६० गोरे थे। फौजमें कितनी ही गोरी बीबियां और उनके बच्चे थे। अङ्गरेजी फौजके पडावसे बाहर निकलते ही बागी अफगानोंने मारकाट आरम्भ की। आगे पीछे सब ओरसे अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण किया जाता था। अङ्गरेजी फौजकी तोपें एक एक करके छिन गईं और फौजको एक एक कदमपर बागियोंसे भिडना पडता था। उस समय बलाकी बरफ पड रही थी। पहाड, मैदान, दर्रे बरफसे सुफेद हो गये थे। इसलिये फौजको शीतसे बडा ही कष्ट मिला। रसदकी कमीसे सिपाही भूखों मरने लगे। अगणित सिपाही शीत और भूखसे ऐसे आकुल हो गये थे, कि बिना हाथ पैर हिलाये मारे गये। ४४ नम्बर अङ्गरेजी फौजके कुल सिपाही मारे गये। जगदलक दर्रा काबुलसे कोई पैंतीस मीलके फासलेपर है। अङ्गरेजी फौज जगदलक दर्रेतक पहुंचते पहुंचते नष्ट भ्रष्ट हो गई। फौजके सोलह हजार पांच सौ मनुष्योंमे सिर्फ तीन सौ आदमी जगदलक पहुंचे। बाकी सब राहमें मारे

गये। फौजके प्रधान सेनापति एलफिस्टन साहबने अकबर खांके हाथ आत्मसमर्पण किया। आठ अङ्गरेज रमणियां भी अकबर खांकी कैदमें आईं। अङ्गरेज रमणियोंमें बीबी सेल और बीबी मेकनाटेन भी थीं। इतनी बड़ी फौजमें, यानी सोलह हजार पांच सौ मनुष्योंमें सिर्फ डाक्टर ब्राइडन अपने तेज घोड़ेकी बदौलत मारे वा पकड़े जानेसे बचे और जलाला बाद पहुंचे। कायार केम्पेनमें लिखा है,—"सन् १८४२ ई०के जनवरी महीनेकी १३ वीं तारीख थी। जलालाबादके किलेमें सर रावर्ट सेलके अधीन एक ब्रिगेड पड़ा था। ब्रिगेडके सिपाहियोंने देखा, कि एक सवार घोड़ेकी पीठपर झुका हुआ, घोड़ा भगाता किलेमें घुस आया। यह सवार डाक्टर ब्राइडन थे। काबुलमें कई महीनेतक पड़ी रहनेवाली फौजसे अकेले यही बचे थे। डाक्टर ब्राइडनको कितने ही जखम लगे थे। तलवारके वारसे उनका हाथ कटकर गिर चुका था।" यह डाक्टर भी बहुत दिनोंतक न जिये। सिर्फ चार सालके उपरान्त मर गये। अङ्गरेजी फौजके काबुल परित्याग करनेके उपरान्त ही शाह शुजाके जीवनका अन्त हुआ। वह एक दिन काबुलके बालाहिसार किलेसे बाहर निकला। अकबर खांके कुछ सिपाही उसकी ताकमें लगे थे। शाह शुजाको सामने पाते ही सिपाहियोंने गोलियां चलाईं। शाह शुजा कई गोलियां खाकर ठण्डा हो गया।

इसके उपरान्त अङ्गरेजी फौजने अफगानोंसे बदला लेनेके लिये फिर अफगानस्थानपर चढ़ाई की। सन् १८४२ ई०की १६वीं अप्रेलको सेनापति पोलाकने जलालाबादका उद्धार

किया और उसी सन्‌की १५ वीं सितम्बरको काबुलपर कब्जा कर लिया। उधर सेनापति नाट गजनीको ध्वंस करके १७वीं सितम्बरको काबुलमें सेनापति पोलाकसे मिल गये। बामियानमें अङ्गरेजी फौजने अकबर खाँसे अपने कैद सिपाही, स्त्री, बच्चे आदि छुडाये और अकबर खाँको भगाकर काबुलकी मण्डीसे दूर कर दिया। अङ्गरेजी फौजने काबुलका बडा बाजार गोलोंसे उडा दिया और सन १८४४ ई०के दिसम्बर महीनेमें अफगानस्थानसे भारत वर्षकी ओर प्रत्यावर्तन किया।

अङ्गरेजी फौज अफगानोंको सिर्फ दण्ड देने और अपने कैद सिपाहियोंको छुडाने अफगानस्थान गई थी। यह दोनो काम करके वह लौट आई। अफगानस्थानपर कब्जा करना नहीं चाहती थी। कारण, उसको मालूम हो गया था, कि इस देशपर अधिकार करना उतना आसान काम नहीं है। राबर्ट साहब अपनी पुस्तक "फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया"में लिखते हैं,—"इस विषयके दुःखमय परिणामने बृटिश सरकारको सिखा दिया, कि हमारी सीमा सतलजतक जो बढ गई, वही यथेष्ट थी। अफगानस्थानपर किसी तरहका प्रकृत-प्रभाव डालनेका वा अफगानस्थानके मामलेमें दखल देनेका समय अभी नहीं आया था।" अर मरमें लिखा है,—"और अब, अनुभवने बृटिश सरकारको सिखा दिया, कि उसकी हालकी नीति बहुत खराब थी। इसलिये उसने अफगानस्थान और इससे नैतिक सम्बन्धमें हस्तक्षेप करनेसे हाथ धो लिया।"

पाठकोंको स्मरण होगा, कि अमीर दोस्त मुहम्मद काल कत्तेसे लोधियाने जा रहा था। ऐसे ही समय अङ्गरेजोंको काबुलमें बगावतकी आग भड़कनेकी खबर मिली। अमीर दोस्त मुहम्मद दिल्ली भी नहीं पहुंचने पाया था, कि गिरफ्तार कर लिया गया। वह शाह शुजाकी उम्र तक कैदमें रखा गया। इसके उपरान्त अङ्गरेजोंने उसे छोड़कर काबुल जानेकी आज्ञा दी। दोस्त मुहम्मद दुबारा काबुल आया और फिर अफगानस्थानका अमीर बना। अफगानोंने बड़े आदर सम्मानसे अमीरको काबुलके सिंहासनपर बैठाया और उसकी सेवा करने लगे। अमीरने थोड़े ही दिनोंके शासनमें अफगानस्थानमें शान्ति स्थापित कर दी। अपने पुत्र अकबर खांको अपना मन्त्री बनाया। किन्तु अकबर खां बहुत दिनोंतक जीवित न रहा। सन् १८४८ ई०में पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। सन् १८४८ ई०में पञ्जाबमें सिखोंका बलवा हुआ। दोस्त मुहम्मद खां अपना प्राचीन देश पेशावर लेनेकी अभिलाषासे सीमा पार करके अटक आया। सिख सेनापति शेरसिंह उस समय अङ्गरेजोंसे युद्ध कर रहा था। अमीर दोस्त मुहम्मद खांने सिखोंके कहने सुननेपर अपना अफगान रिसाला सिखोंकी सहायताको भेजा। सन १८४९ ई०की २१ वीं फरवरीको पञ्जाब—गुजरातकी लड़ाईमें इस अफगान रिसालेने सिख सैन्यके साथ अङ्गरेजी फौजसे मुकाबला किया था। अन्तमें सिख परास्त हुए। सिखोंके साथ साथ अफगानी रिसाला भी परास्त हुआ। सर वाल्टर रेले गिलबर्टके सेनापतित्वमें अङ्गरेजी फौजने अफगान फौजका पीछा किया। दोस्त

मुहम्मद खा सैन्यसहित भागकर अफ़गानस्था सीमामें दाखिल हो गया। इसके उपरान्त, अमीर दोस्त मुहम्मदने स्वतन्त्र अफगान सरदारोंको विजय करके अपने अधीन करना आरम्भ किया। इस कामसे छुटकारा पाकर सन् १८५० ई० में उसने बल्खपर कब्ज़ा किया और इससे चार साल बाद कन्धारपर। अब अमीर दोस्त मुहम्मद और अङ्गरेज सरकारमें मेल मिलाप बढ़ने लगा। इसका फल यह हुआ, कि सन १८५५ ई०के जनवरी महीनेमें पेशावरमें अङ्गरेज अफगान सन्धि हुई। मैलेसे अफगानमें यह सन्धि इस प्रकार लिखी है,—

"(१) आनरेबल ईष्ट इण्डिया कम्पनी और काबुलपति दोस्त मुहम्मदके बीचमें सदैव मैत्री रहेगी।

(२) आनरेबल ईष्ट ईण्डिया कम्पनी वादा करती है, कि वह अफगानस्थानके किसी भागपर किसी तरहका हस्तक्षेप न करेगी।

(३) अमीर दोस्त मुहम्मद खां प्रण करते हैं, कि वह कम्पनीके देशपर हस्तक्षेप न करेंगे और आनरेबल कम्पनीके मित्रोंको मित्र और शत्रुओंको शत्रु समझेंगे।"

इस सन्धिके सालभर बाद ईरानने अफगानस्थानके हिरातपर आक्रमण किया। आक्रमणका हाल लिखनेसे पहले हम हिरात नगरका थोड़ासा हाल लिखते हैं। हिरात नगर हिरात प्रदेशकी राजधानी और भारतवर्षकी कुञ्जी कहा जाता है। यह १३ मील लम्बी और १५ मील चौड़ी जल और हरियालीसे परिपूर्ण घाटीमें बसा हुआ है। नगर प्रायः

चौखूटा है। नगरकी चारो ओर चालीससे पचास फुटतक ऊंचा मट्टीका टीला है। यह टीला कोई बीस फुट ऊंची ईंटोंसे बनी हुई शहरपानहसे घिरा हुआ है। शहरपनाहके बाहर तरल खन्दक है। खन्दक प्रत्येक ओर कोई एक मील लम्बी है। इस हिसाबसे नगर एक वर्ग मीलके भीतर है। नगरमें कोई पचास हजार मनुष्य बसते हैं। नगर वासियोंमें अधिकांश लोग शीया सम्प्रदायके मुसलमान हैं। बाजारमें नाना जाति और नाना देशके लोग दिखाई देते हैं। कहीं अफगान हैं, कहीं हिन्दू—कहीं तुर्क हैं, कहीं ईरानी और कहीं तातार हैं, कहीं यहूदी। शहरके आदमी हथियारोंसे लदे रहते हैं। काबुल, कन्धार, भारतवर्ष, फारस और तुरकस्थानके बीचमें सौदागरीका केन्द्र होनेकी वजहसे हिरात सौदागरोंहीसे बस गया है। हिरातकी दस्तकारियोंमें कालीन प्रधान है। यहांका कालीन सम्पूर्ण एशियामें प्रसिद्ध है और बड़े दामोंपर बिकता है। यहां नाना प्रकारके स्वादिष्ट फल उत्पन्न होते हैं। नित्यके खाद्य पदार्थ,—जैसे रोटी, तरकारी, मांस प्रभृति सस्ते दामों बिकते हैं। यहांका जल वायु स्वास्थ्यप्रद है। सिर्फ दो महीने गर्मी बढ़ जाती है। बाकी दश महीने बसन्तकी भी ऋतु रहती है। इसका प्राचीन इतिहास बहुत लम्बा चौड़ा है। बहुत पीछेकी बातें न लिखकर अपनी बात अच्छी तरह समझा देनेके लिये हम ईरानके हिरात ले लेनेसे चार मास पहलेसे हिरातका इतिहास लिखते हैं। सन् १८५७ ई०में हिरानके हाकिम मुहम्मद खांकी मृत्यु हुई। उसका

पुत्र सय्यद मुहम्मद खां हिरातके सिंहासनपर बैठा। यह तीन सालतक शासन करने पाया था, कि सद्दोनई जातिके मुहम्मद यूसुफ खांने इसे सिंहासनसे उतारा और वह स्वयं हिरातका शासक बना। किन्तु कुछ महीनोंके बाद ही दुर्रानी जातिका ईसा खां मुहम्मद यूसुफको भगाकर उसकी जगह बैठा। इधर दुर्रानी सरदार रहमदिल खां हिरात पर चढ़ाई करनेकी तय्यारी कर रहा था। इसकी तय्यारियोंसे डरकर हिरातने ईरानियोंसे सहायता मांगी। ईरानने समय देखकर अपना लशकर भेजकर सन् १८५६ ई०में हिरातपर कब्जा कर लिया।

ईरानने अङ्गरेजोंसे सन्धि करनेमें एक प्रण यह भी किया था, कि मैं हिरातपर अधिकार न करूंगा। जब ईरानने अपना प्रण भङ्ग किया, तो अङ्गरेज महाराज क्रुद्ध हुए। उन्होंने पहले अमीर दोस्त मुहम्मद खांकी मैत्री खूब पक्की की। सन् १८५७ ई०में अमीरको पेशावर बुलाया। वहां अङ्गरेज कमिश्नर सर जान लारेंस साहबने अमीरसे मुलाकात की। अमीरको आठ विलायती घोड़े, अस्सी हजार रुपयेकी खिलअत और ८ लाख रुपये नकद दिये। अङ्गरेजोंने अङ्गरेज ईरान युद्धकी समाप्तितक अफगानस्थानकी फौजी तय्यारीके लिये १२ लाख रुपये साल देना मञ्जूर किया। इसके उपरान्त अङ्गरेजोंने ईरानपर दो ओरसे आक्रमण किया। एक तो हिरातकी ओरसे और दूसरा फारसकी खाड़ीकी तरफसे। फारसकी खाड़ीमें बूशहरपर अङ्गरेजोंने कब्जा कर लिया। इससे ईरान भीत हुआ और उसने अङ्गरेजोंसे

सन्धि करी। सन १८५७ ई०के जुलाई महीनेमें हिरात खाली कर दिया। ईरानके हिरात खाली करते ही सुलतान अह्मद खाँ नामे एक बारकज़ई सरदारने हिरातपर कबजा कर लिया। अन्तमें सन १८६३ ई०में अमीर दोस्त मुहम्मदने हिरातपर आक्रमण किया और उसी सनके मई महीनेमें नगरपर अधिकार कर लिया। उसी समयसे हिरात अफ़गानस्थानके अधीन हुआ और आजतक है।

सन् १८५७ ई०की १३ वीं मार्चको अमीर अफ़गानस्थानके जमानेमें मेजर एच० बी० लमसडन साहबकी प्रधानतामें अङ्गरेज़ोंकी एक मिशन काबुल गई थी। उसी समय भारतवर्षमें ग़दर फूट पड़ा था। अङ्गरेज़ोंका भारतशासन डावाडोल हो गया था। कितने ही अफ़गान सरदारोंने और कितने ही पञ्जाबवासियोंने अमीर दोस्त मुहम्मद खाँको अफ़गानस्थानसे भारतवर्ष आकर बागियोंको सहायता पहुँचा-देनेके लिये उत्तेजित किया था। किन्तु अमीर कुछ तो दूरदर्शितावश और कुछ अङ्गरेज़ोंकी काबुल मिशनके समझाने बुझानेसे ग़दरकी भड़कती हुई आगको और भड़कानेपर राजी नहीं हुए। भारत सरकार अमीरसे इस कामसे बहुत सन्तुष्ट हुई थी।

सन १८६३ ई०की १६ वीं जूनको हिरातमें नामी गरामी अमीर दोस्त महम्मद खाँका परलोकवास हुआ।

अमीर दोस्त मुहम्मद खाँकी मृत्युके उपरान्त अमीरपुत्र शेरअली खाँ अफ़गानस्थानका अमीर बना। यह जिस समय सिंहासनपर बैठा, उस समय लार्ड भारतवर्षके

बहुत समीप पहुंच चुका था और भारतकी कुञ्जी हिरात पर कबजा कर लेनेका भय दिखा रहा था। द्वितीय अफगान-युद्धके उपरान्त ही अङ्गरेज सिख युद्ध आरम्भ हुआ। अङ्गरेजोंने सिखोंको परास्त करके सिन्ध नदके किनारेतक अपना राज्य फैला दिया। उधर रूसको विशाल रेगस्थान पार करने पर उपजाऊ भूमि मिली। वह जल्द जल्द भारतवर्षकी ओर बढ़ने लगा। सन् १८६४ ई०में रूसने चमकन्दपर कबजा कर लिया। रूस-राजकुमार गरचकाफने कहा था, कि रूस चमकन्दसे आगे अधिकार-विस्तार करना नहीं चाहता। किन्तु राजकुमारकी बात बात हीतक रही। दूसरे सालकी २८वीं जनवरी रूसने चमकन्दसे आगे बढ़कर ताशकन्दपर कबजा कर लिया। सन १८६६ ई०में रूसने खोजन्तपर कबजा किया। ३०वीं अक्टोबरको बिशारबपर कबजा किया और सन १८६७ ई०को बसन्तऋतुमें सुराता पर्वतके यानीकारगानपर। सिर्फ बुखारा रूसके हाथ पडनेसे बच गया। पहले अमीर बुखाराने भारतवर्ष और अफगानस्थानसे अपनी रक्षाके लिये प्रार्थना की, किन्तु इसका कोई फल न हुआ। अन्तमें रूससे सन्धि कर ली और प्रकारान्तसे रूसका अधिकार बुखारेपर भी हो गया।

अबतक इङ्गलण्डने रूसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था। एक तो इस कारणसे, कि इङ्गलण्डने मध्य एशियाके मामलोंमें दखल न देनेकी नीति अवलम्बन की थी। दूसरे इसलिये, कि बृटिश सरकार युरोपके राजनीतिक बखेडोंमें उलझी हुई थी। अन्तमें जब रूसने समरकन्दपर अधिकार किया, तो इङ्गल

रूसको चैतन्य लाभ हुआ। वह रूसको इतना बढ़ा हुआ देख कर चिन्तित हुआ। सन् १८८० ई०में इङ्गलैण्डके वैदेशिक सिक्रेटर लार्ड ग्रानविल और रूसके राजदूत में कान्फरेन्स हुई। कानफरेन्सका विषय यह था, कि मध्य एशियामें एक ऐसी रेखा निर्दिष्ट कर देना चाहिये, जिसका उल्लङ्घन ब्रिटिश-सरकार या रूस सरकार न करे। तीन सालतक यह झगड़ा चला, कि अफ़गानिस्तान स्वतन्त्र समझा जाय या अङ्गरेज महाराजके प्रभावमें। रूस कहता था, कि वह स्वतन्त्र समझा जावे। अङ्गरेज कहते थे, कि उसपर हमारा प्रभाव है। अन्तमें सन् १८७३ ई०की ३१वीं जनवरीको ऐसी रेखा तयार की गई, जिसके उल्लङ्घन न करनेका प्रण रूस और अङ्गरेज दोनोंने किया। किन्तु रूस अपनी प्रतिज्ञाकी उतनी परवा नहीं किया करता। यह तय हो जानेके छः ही महीनोंके बाद उसने खीवमें फ़ौज भेजी। जब अङ्गरेजोंने रूससे इस आक्रमणका कारण पूछा, तो रूस सरकारकी ओरसे काउण्ट स्कावलाफ़ने जवाब दिया, कि खीवमें डाकुओंका बहुत जोर है। डाकुओंने पचास रूसी पकड़ लिये हैं। डाकुओंको दण्ड देने और रूसियोंको जोरसे छुड़ानेके लिये रूसी फ़ौजका टुकड़ा खीव भेजा गया है। यह सब कुछ कहनेपर भी रूसने खीवपर अधिकार कर लिया और आजतक कब्जा किये हुआ है।

इस प्रकार रूस बीस सालमें कोई ६ सौ मील भारतवर्षकी ओर बढ़ आया और अब रूस तथा अङ्गरेजोंकी सीमामें चार सौ मीलका अन्तर रह गया। रूसकी दक्षिणीय सीमा अफ़गानिस्तानकी उत्तरीय सीमासे सट गई।

अमीर शेरअली खांके भाई अमीरके विरुद्ध थे। इसलिये अमीरको अफगानस्थानके सिंहासनपर बैठनेके उपरान्त ही से अपने भाइयोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना पड़ा। अमीर निर्बल था। उसने अङ्गरेजोंसे सहायता मांगी। किन्तु अङ्गरेजोंको उस पर विश्वास नहीं था। उन्होंने अमीरको लिखा, कि हम तुम्हें नहीं— वरं तुम्हारे भाई अफजल खांको काबुलका अमीर माननेके लिये तय्यार हैं। इसपर अमीर शेरअलीने अपने भुजबलपर भरोसा करके अपने भाइयोंसे युद्ध करना आरम्भ किया। सन् १८६७ ई०के अक्टोबर महीनेमें अमीर शेरअली खांने सत्तर हजार फौज तय्यार की। बलखके हाकिम फैज मुहम्मद खांने भी उसको सैन्यसे सहायता पहुंचाई। सन् १८६८ ई०की १लीं अपरेलको अमीर शेरअलीने कन्धारपर कबजा कर लिया। इसके उपरान्त सन १८६९ ई०की २री जनवरीको अपने भाई आजम खां और अपने भाई मुहम्मद अफजल खांके लड़के अब्दुररहमान खांको गजनीमें शिकस्त दी। यही अब्दुररहमान खां अन्तमें अफगानस्थानके अमीर हुए थे। अब्दुररहमान खांने अपनी इस पराजयका वृत्तान्त अपनी तुजुकमें इस प्रकार लिखा है,—

"जब गजनी पहुंचा, तो देखा, कि नगरका दरवाजे पहले हीसे किला मजबूत कर रखा है। मैंने उसका घेरा किया, किन्तु वह बहुत सुदृढ़ था। मेरी इस फील्ड-बाटरीकी तोपोंसे फतह नहीं हो सकता था। इसलिये मुझे उचित न जान पड़ा, कि मैं अपने पासका थोड़ा सा गोला बारूदको उसीपर नष्ट कर दूं। उधर घिरे हुए लोगोंकी हिम्मत

इस लिये व्यादे हो रही थी, कि उनको चालीस हजार सिपाहियोंकी फौजके साथ अमीर शेर अलीके आनेका समाचार मिल चुका था। मैंने ग्यारह दिनोंतक कुछ न किया। इस अवसरमें अमीर शेर अली खाकी कोई चालीस हजार सिपाहियोंकी फौज गननीसे एक मञ्जिलके फासलेपर पहुंच गई। मैंने जासूसोंसे समाचार पाया, कि सचमुच अमीर शेर अलीखाके पास चालीस हजार फौज थी और वह सुशिक्षित थी। यह सुनकर मैंने मीर रफीक खासे सलाह की। यह स्थिर हुआ, कि इतनी बडी फौजसे खुले मैदान युद्ध करना उचित नहीं है। इसलिये हम एक तङ्ग दर्रेमें चले गये। जिस समय हम सईदाबाद वापस जा रहे थे, अमीर शेर अली खाने दश हजार हिरातो और कन्धारी सवारोंको हमारे पीछेसे आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। यह भी आज्ञा दी, कि वह कानुलवाली नड़कपर कब्जा कर लें। जिससे दूसरे दिन जब वह विजयी हो, तो हमारी भागनेकी राह रोक दी जावे। वैरीको सैन्यके इस भागसे मेरे छ: सौ सिपाहियोंका सामना हो गया। इन्हें मैंने अपनी फौजके आगे भेजा था। मेरे सवार बडी वीरतासे लडे और धीरे धीरे पीछे हटने लगे। उन्होंने अपनी विपत्तिका समाचार मुझे दिया। मैंने समाचार पाते ही पैदलोंकी दो पलटनें उनकी सहायताको भेजीं। वह एकाएक युद्धस्थलमें पहुंचीं। अमीर शेर अली खाके सब सवार एक ही जगह जमा थे। थोडी ही गोलियोंसे उन्हें बहुत नुकसान पहुंचा। वह भाग खडे हुए। मेरे सिपाही वैरियोंका माल लेकर वापस आये

और हम सईदाबादकी ओर फिर रवाने हुए। जब अमीर शेर अली खांने इस शिकस्तका समाचार पाया, तो और उनके सिपाही अपनी सेन्यकी सहायताको भेजे। उन्होंने जाकर मैदान खाली पाया और मेरी सेन्यको वापस जाते देखा। इसलिये वह स्वयं वापस चले गये। उन्होंने अमीरको यह दुस्समाचार सुनाया, कि उनकी फौजका आधिक्य देखकर मैंने हिम्मत हार दी और लडाईसे मुंह मोडकर मैं भागा जाता था।" अब भारत सरकारने कुछ तो इस ध्यानसे, कि अमीरने शान्ति स्थिर की और कुछ अफगानस्थानमें रूसका प्रभाव प्रसार रोकनेके ध्यानसे, शेर अली खासे मेल जोल बढ़ानेका उपक्रम किया। भारतके बडे लाट अर्ल मेयोने शेरअलीको अमीर स्वीकार किया। शेरअली खांके पुत्र याकूब खांको लोगोंने समझा दिया, कि अमीर तुम्हारी जगह तुम्हारे भाई अब्दुल्ला खांको युवराज बनावेंगे और अपने बाद उन्हींको काबुलका राजसिंहासन देंगे। इस बातसे याकूब खां बिगड़ा। उसने सन् १८७० ई०को ११वीं सितम्बरको बगावतका झण्डा खडा किया। याकूब खांने सन् १८७१ ई०में गोरियान किलेपर अधिकार कर लिया और उसी सन्के मई महीनेमें हिरातपर कब्जा कर लिया। बाप बेटेका यह झगडा अङ्गरेजोंने बीचमें पडकर मिटा दिया। बाप बेटेमें सुलह कराई और अमीर याकूब खांको हिरातका हाकिम स्वीकार किया।

इससे प्रमाणित होता है, कि अमीर शेरअली भी अङ्गरेजोंका बहुत खयाल रखता था। किन्तु उस समयकी अङ्गरेजोंकी नीतिसे भारत सरकार और अमीर शेरअलीकी

रूसी बहुत दिनोंतक नहीं निबही। अमीर शेरअलीने भारत सरकारसे दो प्रार्थनायें कीं। एक तो यह, कि मैं अपने प्रिय पुत्र अबदुल्लह खांको युवराज बनाना चाहता हूं। आप भी उसीको युवराज मानिये। दूसरी यह, कि जब रूस अफगानस्थानपर आक्रमण करे, तो आप मेरी सहायता कीजिये। भारत सरकारने दोनो प्रार्थनायें अस्वीकार कर दीं। अङ्गरेजोंने अफगानस्थान ईरानकी सीस्तानवाली हदबन्दीका भी उचित फैसला नहीं किया। भारत सरकारकी इन बातोंसे अमीर शेरअलीका हृदय टूट गया। वह अङ्गरेजोंका शत्रु बन गया। चालीस साल पहले उसके पिता दोस्त मुहम्मदने जिस तरह निराश होकर रूसकी शरण जाना स्थिर किया था,— उसी तरह हृदयभग्न और निराश होकर शेरअली भी रूसकी रक्षामें जानेपर तय्यार हुआ। अमीरका रूसकी शरण लेनेकी चेष्टा करना ही द्वितीय अफगान युद्धका कारण बना। रावर्टस साहब अपनी पुस्तक "फार्टी वन इयर्स इन इण्डिया"में कहते हैं,—"यह ध्यान देने योग्य बात है, कि दोनों अफगान युद्धका कारण एक है,—यानी रूस अफसरोंका काबुल प्रवेश।"

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि दोनो अफगान युद्धका कारण रूस अफसरोंका काबुल प्रवेश या काबुलपतिका रूससे मेल मिलाप करनेकी चेष्टा है। लार्ड रावर्टस लिखते हैं,—"१८७७ ई०में रूस-रूम युद्ध हुआ। एक सालसे ऊपर ऊपर दोनो शक्तियां लड़ती रहीं। उसी समय इङ्गलण्डको भी इस युद्धमें शरीक होनेकी आशङ्का हुई। अङ्गरेजोंने पांच हजार देशी

सिपाहियोंकी फौज बम्बईसे मालटा भेज दी। रूसने मध्य एशियामें अग्रसर होनेकी चेष्टा करके अङ्गरेजोंकी इस तय्यारीका जवाब दिया। सन् १८७८ ई०के जून महीनेमें पेशावरके डिपटी कमिश्नर मेजर कवेगनरीने भारत सरकारको समाचार दिया, कि ताशकान्दके रूसी गवरनर जनरलके बराबर अधिकार रखनेवाला एक रूसी अफसर काबुल आनेवाला है। जनरल काफमेनने अमीरको चिट्ठी लिखी है, कि अमीर उक्त अफसरको स्वयं रूस सम्राट् जारका दूत समझें। कुछ ही दिनों बाद यह खबर भी मिली, कि रूसी फौज अच नदीके करेकी और किलिफ घाटपर एकत्र हुई है। वहां वह छावनी बनाना चाहती है। इसके उपरान्त खबर मिली, कि अमीरने अफगान सरदारोंकी एक सभा करके यह प्रश्न उत्थापन किया था, कि अफगानस्थानको अङ्गरेजोंका साथ देना चाहिये, वा रूसका। अवश्य ही इन सभाने रूस होका साथ देनेका फैसला किया। कारण, रूस सेनापति स्टालीटाफकी अधीनतामें एक मिशनने काबुल प्रवेश करनेपर अफगानोंने उसका आदर सत्कार करना आरम्भ किया। काबुलसे पांच मीलके फासलेपर अमीरके सरदारोंने मिशनका स्वागत किया। मिशनके लोग जड़ी-साजसे सजे हुए हाथियोंपर सवार कराये गये। एक फौज उनकी अगवानी करती हुई उन्हें काबुलदुर्ग बालाहिसारतक लाई। दूसरे दिन मिशनने अमीर शेरअली और अफगान सर्दारोंसे मुलाकात की।"

मेजरकी मिशन।

मिशन सम्बन्धी ऊपरकी कुल बातें तारद्वारा भारतके बड़े लाट बहादुरने भारत सिक्रतरसे कही। साथ साथ अनुरोध किया, कि आप मुझे काबुलमें मिशन भेजनेकी आज्ञा दीजिये। भारत सिक्रतरने मिशन भेजनेकी आज्ञा दे दी। बड़े लाटने भारत सिक्रतरकी आज्ञा पाते ही अमीर शेर अलीको एक पत्र लिखा। "फाटीवन इयर्स इन इण्डिया"में उस चिट्ठीकी नकल छपी है। उसका मर्म्मार्थ इस प्रकार है,—

"शिमला

"१४ वीं अगस्त, १८७८ ई०।

"काबुल और अफगानस्थानकी सीमाकी कुछ सच्ची खबरें मुझे मिली हैं। इन खबरोंसे मुझे इस बातकी जरूरत जान पड़ती है, कि मैं भारत और अफगानस्थानके लाभके लिये आपसे निःसङ्कोच होकर जरूरी विषयोंपर कुछ बातें कहूं। इस कामके लिये मुझे आपके पास एक उच्चश्रेणीका दूत भेजना जरूरी जान पड़ता है और मैं मन्द्राजके प्रधान सेना पति हिज एकसिलेन्सी चेम्बरलेन बहादुरको इस कामके लिये उपयुक्त समझता हूं। वह शीघ्र ही काबुल जावेंगे और आपसे बात चीत करेंगे। वर्त्तमान अवस्थापर खुलकर पूर्व्वक बातचीत हो जानेसे दोनो राज्योंकी भलाई होगी और दोनो राज्योंकी मैत्री चिरस्थायी रहेगी। यह

पत्र मेरे ईमानदार और प्रतिष्ठित सरदार नव्वाब गुलाम हुसैन खां सी० एस० आई० की मार्फत आपके पास भेजा जाता है। वह आपसे दूत जानेके प्रयोजनके विषयमें सब बातें कहेंगे। आप कृपापूर्व्वक पेशावरसे काबुलतककी राहके सरदारोंको आज्ञा दीजिये, कि वह एक मित्र शक्तिके दूतको दूतके साथियों सहित निर्व्विघ्न काबुल पहुंचानेमें सहायता दें।"

लार्ड राबर्टस लिखते हैं,—"इसके साथ साथ मेजर कावेगनरीको यह समाचार काबुल भेजनेके लिये कहा गया, कि अङ्गरेजोंकी मिशन मित्रभावसे देशमें प्रवेश करती है। यदि उसको अफगानस्थानमें दाखिल होनेकी आज्ञा न दी गई, वा रूस मिशनकी तरह उसको भी पथमें रक्षा न की गई, तो समझा जावेगा, कि अफगानस्थान खुलकर अङ्गरेजोंसे शत्रुता कर रहा है।

"१७वीं अगस्तको बड़े लाटकी चिट्ठी काबुल पहुंची। जिस दिन चिट्ठी पहुंची, उसी दिन अमीरके प्रिय पुत्र अब्दुल्लाह जानका देहान्त हुआ। इस दुर्घटनासे बड़े लाटकी चिट्ठीका जवाब देनेमें देर की गई, किन्तु रूसी मिशनसे बात चीत करनेमें किसी तरहकी आपत्ति दिखाई नहीं गई। रूस दूत स्टालीटाफने अमीर शेरअलीसे पूछा, कि क्या आप अङ्गरेजोंकी मिशन काबुलमें बुलाना चाहते हैं? इसपर अमीरने रूस दूतकी राय ली। रूस दूतने अमीर शेरअलीसे गौण भावसे समझाया, कि परस्पर शत्रुभाव रखनेवाली दो शक्तियोंके राजदूतोंका एक जगह जमा करना युक्तिसङ्गत नहीं है। इसपर अमीरने अङ्गरेजोंकी मिशनको काबुल न बुलानेका फैसला कर लिया

इस फैसलेकी खबर बड़े लाटको नहीं दी गई। उधर २१वीं सितम्बरको अङ्गरेजोंकी मिशन पेशावरसे रवाना हुई और उसने खैबर दररेसे तीन मीलके फासलेपर जमरूदमें डेरा डाला।"

अमीरका ढङ्ग बेरियोंकासा था। इसलिये अङ्गरेजोंकी मिशनके प्रधान अफसर चेम्बरलेन साहबने खैबर दररेकी अफगान फौजके सेनापति फैजमुहम्मद खाको एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीकी जो नकल लार्डराबर्टसने अपनी पुस्तकमें प्रकाश की है, उसका सम्मांश इस प्रकार है,—

"पेशावर

"१५वीं सितम्बर, १८७८।

"मैं आपको सूचित करता हू, कि भारतके बड़े लाटकी आज्ञासे एक अङ्गरेज मिशन अपनी रक्षक फौजके साथ मित्रभावसे खैबर दररेकी राहसे होती हुई काबुल जानेवाली है। नव्वाब गुलाम हुसैनकी मार्फत अमीरको इस मिशनकी खबर भेज दी गई है।

"मुझे खबर मिली है, कि काबुलसे कोई अफगान अफसर आपके पास अलीमसजिद आया था। आशा है, कि उसने आपको अमीरकी आज्ञासे सूचित किया होगा। मुझे यह भी खबर मिली है, कि खैबर घाटीके जिन सरदारोंको पेशावर बुलाकर हम लोग उसी मपरचाके सम्बन्धमें बातचीत कर रहे थे, आपने उन लोगोंको पेशावरसे खैबर दररेमें वापस बुला लिया है। अब मैं आपसे पूछता हू, कि अमीरके आज्ञानुसार आप ब्रटिशमिशनको खैबर दररेसे काकातक पहुचा देनेकी जिम्मे

लिखीं। शुतुरगरदन दर्रा पार करते ही हम लोगोंको इन्हीं मलिकोंके देशमें पहुँचना था। मुझे मलिकोंकी सहायताकी बड़ी चिन्ता थी। १८ वीं तारीखको मैंने अमीर काबुलको फिर एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीके साथ अपना इश्तहार और मलिकोंकी चिट्ठी भी शामिल कर दी। मैंने अमीरको चिट्ठीमें लिखा था, कि मैं अपनी पहली चिट्ठीका जवाब और आपके किसी प्रतिनिधिके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैंने यह भी आशा प्रकट की थी, कि आप मेरा मन सूसा पूरा करनेके लिये उचित आज्ञा जारी करेंगे और आप भारत सरकारकी सहायतापर भरोसा रखेंगे।

"१६ वीं सितम्बरतक बहुतसी तय्यारियां हो गईं। मैं बड़े लाटको सूचना दे सका, कि ब्रगेडियर जनरल बेकर शुतुरगरदनपर अपनी फौजके साथ मोरचा बांधकर डट गये हैं। कुशीतककी राह साफ करा रहे हैं। लोगार घाटी जानेमें पहले इसी जगह फौजका पड़ाव होगा। प्रादेशिक बारबरदारीसे रसद जुटाई जा रही थी। मैं फौजके पिछले भागसे तोपखानेकी गाड़ीपर खजाना और गोली बारूद ले आया हूं। अस्तु फौजके आगे बढ़ानेकी चेष्टा यथासाध्य की जा रही है।

"२० वीं तारीखको मुझे अमीरका जवाब मिला। उसने इस बातपर दुःख प्रकाश किया था, कि मैं स्वयं अलीखेल न आ सका। किन्तु मैं अपने दो विश्वस्त कर्मचारी आपके पास भेजता हूं। इनमें एक नायबयके मन्त्री हबीबुल्लह खां और दूसरे शाह मुहम्मद खां प्रधान मन्त्री हैं। चिट्ठी आनेके दूसरे दिन यह लोग आ गये।

"यह भले आदमी तीन दिनोंतक हमारे पडावमें रहे। मैंने उनसे जब पहले मुलाकात की, तो उन लोगोंने मेरे दिलपर यही विश्वास जमानेकी चेष्टा की, कि अमीर इङ्गलिश सरकारके मित्र हैं और वह इङ्गलिश सरकारकी सलाहके अनुसार चलना चाहते हैं। किन्तु मुझे शीघ्र ही मालूम हो गया, कि असलमें अमीरने इन उच्चकर्मचारियोंको हमारी काबुलकी चढ़ाई रोकनेके लिये, काबुल मिशनकी हत्या करनेवालोंको दण्ड देनेका भार काबुल सरकारको दिलानेके लिये और सम्पूर्ण देशके उत्तेजित हो उठनेतक हमारी रवानगी रोकनेके लिये भेजा था। * * *

"मैं अमीरके दोनों प्रतिनिधियोंमें एकको अपने साथ रखना चाहता था, किन्तु दोमें एक भी हमारे पडावमें रहनेपर राजी नहीं होता था। इसलिये मुझे उन दोनोंको छोड़ देना पड़ा। मैंने उनके हाथ निम्नलिखित चिट्ठी अमीरको भेजी,—

'हिज हाईनेस अमीर काबुल। अलीखेल कम्प।

२५ वीं सितम्बर, १८७९ ई०।

'(शिष्टाचारके उपरान्त)। मैंने आपकी १९ वीं और २० वीं सितम्बर १ ली और २ री शवालकी चिट्ठियां मुस्तफी हबीबुल्ला खां और वजीर शाह मुहम्मदकी मार्फत पाईं। ऐसे सुप्रसिद्ध और सुयोग्य मनुष्योंके भेजनेकी वजहसे मैं आपका कृतज्ञ हुआ। उन्होंने मुझसे आपकी इच्छा प्रकाश की और मैं उनकी बातें खूब समझ गया। दुर्भाग्यवश चढ़ाईका मौसम जल्द जल्द खतम हो रहा है। जाड़ा शीघ्र ही आना चाहता है, किन्तु [illegible] उपस्थित [illegible]

ही अङ्गरेजी फौजके काबुल पहुंच जानेके लिये यथेष्ट समय है। आपने अपनी तोसरी और चौथी तारीखकी चिट्ठीमें हमारी सलाह और सहायता पानेकी इच्छा प्रकाश की है। बड़े लाट बहादुर चाहते हैं, कि अङ्गरेजी फौज यथासम्भव शीघ्र ही काबुल पहुंचकर आपकी रक्षा करे और आपके देशमें फिरसे शान्ति स्थापित करे। दुर्भाग्यवश रसद संग्रह करनेमें कुछ हफ्तोंकी देर हो गई, फिर भी बड़े लाट बहादुरको यह जानकर हर्ष हुआ, कि इस समय आप खतरेमें नहीं हैं और उन्हें आशा है, कि अङ्गरेजी फौज काबुल पहुंचनेतक आप देशमें शान्ति रख सकेंगे। मैं आपको यह सुसमाचार सुनाता हूं, कि कन्धारसे और जलालाबादसे एक एक अङ्गरेजी फौज काबुलकी ओर रवाना हो चुकी है। मेरी फौज भी शीघ्र ही काबुलकी ओर रवाना होगी। आपको मालूम होगा, कि कुछ दिनोंसे हम लोगोंने शुतुरगरदनपर कब्जा कर लिया है। अतिरिक्त रिसाले पलटनें और तोपखाने कुर्रम पहुंच चुके हैं। यह उस फौजके स्थानापन्न होंगे, जिसे कुर्रमसे लेकर मैं काबुल आता हूं। अब एका एक मुझे मालूम हुआ, कि मुझे और फौजकी जरूरत पड़ेगी। बड़े लाट बहादुरने आपकी रक्षाके ध्यानसे आज्ञा दी है, कि काबुलकी ओर जानेवाली प्रत्येक अङ्गरेजी फौज ऐसी जबरदस्त हो, कि आपके शत्रुओंकी बाधासे रुक न सके। निःसन्देह तीनो फौजें बहुत जबरदस्त हैं। कन्धारसे आनेवाली फौजको किलातिगिलजई और गजनीमें रोकनेवाला कोई नहीं है। इसलिये उसके शीघ्र ही काबुल न

पहुंचनेका कोई कारण दिखाई नहीं देता। गत मई महीनेमें आपने ब्रटिश सरकारसे जो सन्धि की थी, उसके खयालसे खैबरकी जातियां पेशावरवाली फौजको खैबर घाटीमें न रोकेंगी,—वरञ्च अपने बारबरदारीके जानवरोंसे फौजकी सहायता करेंगी। इससे यह फौज भी शीघ्र ही काबुल पहुंच जावेगी। आपकी दयासे मेरी कठिनाइयां भी घट गई हैं। मुझे आशा है, कि खैबर और कन्धारवाली फौजके साथ साथ मैं भी आपके पास पहुंच जाऊंगा। आपकी मुलाकातके खयालसे मैं बहुत खुश हूं। मुझे आशा है, कि आपकी कृपासे मैं बारबरदारी और रसदकी सहायता पा सकूंगा। मैंने आपके इस प्रस्तावको खब गौरके साथ देखा, कि आप बागी फौजके दण्डकी व्यवस्था करके ब्रटिश फौजको काबुल आनेके कष्टसे बचाना चाहते हैं। मैं आपको इस अतिरिक्त कृपाके लिये भारत सरकार और बड़े लाटकी ओरसे धन्यवाद देता हूं। किसी दूसरे समय आपकी यह बात बड़ी खुशीके साथ मञ्जूर कर ली जाती, किन्तु वर्त्तमान दशामें विशाल ब्रटिश जाति अपनी फौजके साथ बिना काबुल आये और आपकी सहायतासे बागियोंको बिना कठोर दण्ड दिये रह नहीं सकती। मैंने आपकी चिट्ठी बड़े लाटके पास भेज दी है। इस जवाबकी भी एक नकल बड़े लाटके विचारार्थ आजकी डाकसे भेज दूंगा। इस अवसरमें मैं मुस्तफी हबीबुल्लाखां और वजीर शाह मुहम्मदको आपके पास वापस जानेकी इजाजत देता हूं।"

सन् १८७९ ई०की २७ वीं सितम्बरको रावर्ट्स साहबने कुर्र-

मकी फौजका सेनापतित्व भार सेनापति गार्डनको दिया और स्वय काबुल जानेवाली फौजको लेकर कुर मसे कुशी पहुचे। राहमें कोई दो हजार अफगानों और अङ्गरेजी फौजमें एक छोटीसी लड़ाई हुई। कुशीमें अमीर काबुल अङ्गरेजी फौजके साथ रहनेके लिये आ पहुंचे थे। लार्ड रावर्टसने कुशी पहुचकर अमीरसे मुलाकात की। लार्ड रावर्टसने इस मुलाकातकी बात अपनी पुस्तकमे इस प्रकार लिखी है,—"मुझपर अमीरकी सूरतका अच्छा असर नहीं हुआ। वह श्रीभ्रष्ट और कोई बत्तीस सालका मनुष्य है। उसका माथा दबा हुआ और शिर गावदुम है। बुड्ढी नामके लिये भी नहीं है। उसमें वह शक्ति नहीं जान पड़ती थी, जिससे अफगानस्थानकी उद्दण्ड जातिया दबाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त 'उसकी आंखें बहुत चञ्चल थीं। वह देरतक निगाहें चार नहीं कर सकता था। उसकी सूरत ही उसके दुचित्तेका पता देती थी। उससे मुझे बडी आशङ्का थी। कारण, वह मेरे पडावमे रहकर चिट्ठिया लगाता और भेजता था। अवश्य ही वह अपने काबुली मित्रोंको हमारे इरादे और कामकी सूचना दे रहा था। फिर भी वह हमारा मित्र था। काबुलके अपने बागी सिपाहियोंके भयसे भागकर हमारी शरण आया था। इसलिये भीतर भीतर हम सब कुछ सोच सकते थे, किन्तु बिना प्रमाण पाये प्रकाश रूपसे कुछ नहीं कह सकते थे। सिर्फ उसका आदर करनेपर बाध्य थे।'

सन् १८७९ ई०की २री अक्टोबरको अङ्गरेजी फौज कुशीसे

रवाना हुई और तीसरी अक्टोबरको चाहिदाबाद पहुंची। ६ठी ७वीं और ८वीं अक्टोबरको सङ्गाविसुतेसे लेकर काबुल तक अङ्गरेजी फौज और अफगानोंमें खासी लड़ाई हुई। अन्तमें ६वीं अक्टोबरको अङ्गरेजी फौजने काबुल नगर और काबुल दुर्गपर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त ही लार्ड रावर्टस बालाहिसारकी रेसिडन्सी देखने गये। उस समयका हाल "अफगान वार" नामी पुस्तकमें इस प्रकार लिखा है,—"रेसिडन्सीका पहला हिस्सा उसके पीछेकी दीवार थी। वह दुरुस्त थी, किन्तु अधिक धुआं लगनेकी वजहसे उसका ऊपरी भाग काला हो गया था। दीवारके प्रत्येक कोनेपर छेद बने हुए थे। रेसिडन्सीके योद्धे सिपाही इन्हीं छेदोंसे बहुसंख्यक आक्रमण करनेवालोंपर गोलियां चलाते थे। इस तरहके छिद्रोंकी चारों ओरके प्रत्येक वर्ग फुटपर असंख्य गोलियोंके चिन्ह बने हुए थे। कहीं कहीं गोलोंके बनाये बड़े बड़े निशान थे। रेसिडन्सीकी पश्चिमीय दीवार बालाहिसारके सामने पड़ती थी। इस दीवारपर बने हुए गोली गोलोंके असंख्य चिन्होंसे जान पड़ता था, कि बाला-हिसारके अस्त्रागारपर अधिकार करके बागियोंने रेसिडन्सीपर कितना भयङ्कर आक्रमण किया था। इस ओर रेसिडन्सीकी तीन मञ्जिलें थीं। दो अब भी मौजूद थीं। एक आगसे नष्ट हो गई थी। * * * रेसिडन्सीका आङ्गन कोई ६० वर्ग फुट होगा। इसके उत्तरीय किनारेपर एक तिमञ्जिला मकान बना है। किन्तु इस समय वह मकान नहीं था। कारण, वह जल गया था,—सिर्फ उसकी काली काली दीवारें

बाकी रह गई थीं। बाईं ओरकी दीवारपर खूनके छींटे पड़े हुए थे। इमारतकी कुरसीपर राखका ढेर लगा हुआ था। जिसमे इस समय भी आगकी चिनगारियां मौजूद थीं। मकान इस समय भी भीतर ही भीतर सुलग रहा था। यह जानना कठिन था, कि किस जगह जीवित मनुष्य जला दिये गये थे। किन्तु एक कोठरीकी बीचकी राखसे जान पड़ता था, कि वहां मनुष्य जलाने लायक आग जलाई गई थी। कोठरीके बीचमे राख पड़ी थी और उसीके समीप मनुष्यकी दो खोपड़ियां और हड्डियां पड़ी थीं। इस समय भी इनसे दुर्गन्धि निकल रही थी। कोठरीकी छत और दीवारों पर खूनके धब्बे लगे थे। इससे जान पड़ता था, कि वहां घोर युद्ध हुआ था। सरजनोंने खोपड़ियोंकी जांच की। कारण, खोपड़ियोंके युरोपियनोंकी होनेकी सम्भावना की गई थी। रेसि डन्सी ऐसी सफाईके साथ लूटी गई थी, कि दीवारपर एक खूंटीतक बाकी नहीं थी। कावेगनरी साहबके मकानकी बालाहिसारकी ओर वाली खिड़कियोंके चौखटेतक तोड़ डाले गये थे। गचपर पड़े हुए शीशोंके कुछ टुकड़े ही उनकी निशानी थे। परदे आदि लूट लिये गये थे। एक खूंटीमें रङ्गीन परदेका सिर्फ एक टुकड़ा रह गया था, वही कोठरीको लुटनेसे पहलेकी भड़कका पता देता था।"

१२ वीं अक्टोबरको लार्ड राबर्टसने बालाहिसारमे दरबार किया। दरबारके पहलेकी एक प्रयोजनीय घटनाका हाल लार्ड राबर्टस इस प्रकार लिखते हैं;—"मैं इस चिन्तामें पड़ा था, कि याकूबखांके साथ क्या कारखाई करना चाहिये।

मेरी ऐसी ही व्यवस्थाने १२वीं अक्टोबरके सबेरे याकूबखाँने आकर आप ही अपना फैसला कर लिया। मेरे काबुल पहुंचनेके पहले ही वह मेरे खेमेमें आया। उसके मुलाकातकी इच्छा प्रकट करनेपर मैं उससे मिला। मेरे पास सिर्फ एक कुरसी थी। उसे मैंने अमीरको दे दी। उसने कहा, कि मैं अपनी इमारतसे इस्तेफा देना चाहता हूं। जिस समय मैं कुश्री गया था, उसी समय मैंने यह स्थिर कर लिया था। * * * उसने कहा, कि मुझे अपना जीवन बोझ मालूम होता है और मैं अफगानिस्तानका अमीर होनेकी अपेक्षा अङ्गरेजी फौजका घसि यारा होना पसन्द करता हूं। अन्तमे उसने कहा, कि जबतक मैं बड़े लाटकी आज्ञासे भारत, लण्डन, वा जहां बड़े लाट भेजना चाहें, भेजा न जाऊ मैं आप, होके खेमेके पास अपना खेमा खड़ा कराकर रहना चाहता हूं। मैंने अमीरके लिये एक खेमा दिया। उसका जलपान तय्यार करनेकी आज्ञा दी और उसे सोच समझकर फैसला करनेके लिये कहा। उससे यह भी कहा, कि आज दश बजे दरबार होगा। उस समय आपको भी दरबारमें चलना पड़ेगा। यह खयाल रखना चाहिये, कि इस समय तक अमीरको यह मालूम नहीं था, कि हम लोग दरबारमें किस तरहकी विज्ञप्ति करेंगे वा हम लोग उसके मन्त्रियोंके साथ कैसा व्यवहार करेंगे।

दश बजे मैंने याकूबखांसे मुलाकात की। वह अपनी इमारत छोड़नेपर अटल था। ऐसी दशामें वह दरबारमें शरीक होना नहीं चाहता था। उसने कहा, कि मैं सामने

बदले अपने बड़े लड़केको आपके साथ कर दूंगा और मेरे कुल मन्त्री आपके पास रहेंगे। मैंने उससे सोचनेके लिये फिर कहा। किन्तु उसे अपना पदत्याग करनेपर उद्यत देख-कर मैंने उससे कहा, कि मैं बड़े लाटकी आज्ञाके लिये तार भेजता हूं। आपको बिना मरजीके जबरदस्ती आपसे राज्य न कराया जावेगा। फिर मैंने यह कहा, कि जबतक बड़े लाटका जवाब न आवे, आप अपना अख्य कायम रखिये।

"दोपहरको मैं बालाहिसार पहुंचा। मेरा स्टाफ, युवराज, मन्त्रिदल और काबुली सरदारोंका बड़ा झुण्ड मेरे साथ था। राहकी दोनो ओर पंक्ति बांधकर फौज खड़ी थी। उस दिन अपनी फौजपर मुझे बड़ा अभिमान हुआ। फौजके सिपाही इस उपलक्षके लिये खूब साफ हो गये और बने ठने थे।

"मेरी सवारीके आगले भागके सदर फाटकमें प्रवेश करते ही हटिश-वैजयन्ती चढ़ा दी गई, बैण्ड बाजेमें जातीय गीत बजने लगा और तोपोंने ३१ फैर सलामी सर की।

"दरबारके कमरेमें पहुंचकर मैं घोड़ेसे उतरा और उन्नत भनपर जाकर मैंने हटिश-सरकारी निम्नलिखित विज्ञप्ति और आज्ञा, उपस्थित मनुष्योंको सुनाई,—

गत ३ री अक्टोबरके विज्ञापनमें मैंने काबुलवासियोंको सूचित किया था, कि अङ्गरेजी फौज काबुलपर अधिकार करने आ रही है। मैंने उन लोगोंको अङ्गरेजी फौज तथा अमीरके अख्तियारका मुकाबला करनेसे मना कर दिया था। उस विज्ञापनसे अवज्ञा की गई। मेरी फौज अब काबुल पहुंच चुकी है और उसने बालाहिसारपर कब्जा कर

लिया है। किन्तु इसके अग्रसर होनेमें खूब बाधा दी गई और काबुलवासियोंने भी इसके रोकनेके काममें बहुत बड़ा भाग लिया। इससे पहले वह अमीरसे बगावत कर चुके हैं। उन्होंने इस अपराधको कवेगनरी साहब अमीरके दोस्तको हत्या करके और गुरु कर लिया है। उन्होंने नितान्त नामर्दी और दगाबाजसे यह हत्याकाण्ड किया। इससे सम्पूर्ण अफगानस्तानवासियोंकी अप्रतिष्ठा हुई। ऐसे दुष्कर्मोंका उचित प्रतिफल तो यही है, कि काबुल नगर बरबाद कर दिया जावे और इसका नाम निशानतक बाकी न रहे। किन्तु ग्रेट ब्रिटेन न्याय भी दयापूर्वक करना चाहता है। मैं काबुलवासियोंको सूचित करता हूं, कि उनके अपराधका पूर्ण दण्ड नहीं दिया जावेगा और यह नगर बरबादीसे बचा लिया जाइगा।

'फिर भी, इस बातकी जरूरत है, कि वह दण्ड पानेसे बच न जावें और दण्ड भी ऐसा हो, कि उन्हें मालूम हो और याद रहे। इसलिये काबुल नगरका वह भाग जो बालाहिसारके अङ्गरेजी अधिकारपर वा बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौजकी रक्षामें किसी तरहका आघात उपस्थित कर सकता है, तुरन्त ही भूमिसात कर दिया जावेगा। इसके अतिरिक्त काबुलवासियोंके अवस्थानुसार उनपर बहुत बड़ा जुर्माना किया जावेगा। जुर्मानेकी रकम पीछे प्रकट की जावेगी। मैं यह सूचना भी देता हूं, कि शान्ति स्थापित रखनेके लिये काबुल नगर और उसकी चारो ओर दश दश मील तक फौजी कानून रखा जावेगा। अमीरकी सलाहसे काबु

लमें एक जङ्गी गवरनर नियुक्त किया जावेगा। वह शासन करेगा और कठोर हाथसे अपराधियोंको दण्ड दिया करेगा। काबुलवासी और आस पासके गाँववाले गवरनरकी आज्ञा माननेके लिये सूचित किये जाते हैं।

'यह हुई काबुल नगरके दण्डकी बात। जो मनुष्य अपराधी समझे जावेंगे, उन्हें अलग दण्ड दिया जावेगा। हाल-ताके बलवेकी खासी तहकीकात की जावेगी। उसमें जो लोग जैसे अपराधी प्रमाणित होंगे, उन्हें वैसा ही दण्ड दिया जावेगा।

'अपराध और अशान्ति निवारणके लिये और काबुलवासी भलेआदमियोंकी रक्षाके लिये सूचित किया जाता है, कि भविष्यमें किसी तरहका घातकशस्त्र काबुल नगर तथा काबुलसे पांचकोससे फासलेतक बांधा न जावे। इस सूचनाके एक सप्ताहके उपरान्त जो मनुष्य हथियारबन्द दिखाई देगा उसको प्राण दण्ड दिया जावेगा। हटिश मिशनकी चीजें जिन मनुष्योंके पास हों, वह उन्हें हटिश पडावमें पहुंचा दें। इस सूचनाके उपरान्त जिसके घरसे हटिश-मिशनकी चीजें निकलेंगी, उसको कठोर दण्ड दिया जावेगा।'

'इसके अतिरिक्त जिस मनुष्यके पास आग्नेय अस्त्र हो, वह उसे हटिश पडावमें जमा कर दें। जमा करनेवालेको देशी बन्दूकके लिये तीन रुपये और युरोपियनके लिये पांच रुपये दिये जावेंगे। इस सूचनाके उपरान्त यदि किसीके पाससे ऐसे हथियार निकलेंगे, तो उसे कठिन दण्ड दिया जावेगा। अन्तमें मैं यह सूचना देता हूं, कि जो मनुष्य

रेसिडन्सीपर आक्रमण करनेवाले वा आक्रमणसे किसी तरहका सम्बन्ध रखनेवालेको गिरफ्तार करा देगा, उसे पचास रुपये पारितोषिक दिये जावेंगे। इतना ही इनाम गत २री सितम्बरके उपरान्त अङ्गरेजी फौजसे सामना करनेवालेको गिरफ्तार करानेपर दिया जावेगा। कारण, अङ्गरेजी फौजसे सामना करनेवाला यथार्थमें अमीरका बागी है। यदि इस तरहका अपराधी मनुष्य अफगान फौजका कमान होगा तो ७५ रुपये और सेनापति होगा, तो १ सौ बीस रुपये उसके गिरफ्तार करनेवालेको दिये जावेंगे।'

"अफगानों इस विज्ञप्तिसे बहुत सन्तुष्ट हुए। उन्होंने ध्यान पूर्वक इसे सुना। विज्ञप्ति हो चुकनेपर मैंने लोगोंको जाने कहा और मन्त्रियोंको ठहरने। कारण, मैं उन्हें कैद करना चाहता था। उनसे मैंने कह दिया, कि मिशनकी हत्याकी तहकीकात होनेतक तुम लोगोंको कैद रखना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

"दूसरे दिन मैंने नगर प्रवेश किया। मैं नगरके प्रधान प्रधान बजारोंसे होकर निकला। जिसमें नगरवासियोंको मालूम हो, कि वह मेरे वशमें हैं। रिसाला बृगेड मेरी सवारीके आगे था। मैं अपने ष्टाफ और शरीररक्षकोंके साथ उसके पीछे था। मेरे पीछे पैदल सिपाहियोंकी पांच बटालियन पैदल फौज थी। तोपखाना साथ नहीं था। कारण, कुछ बाजार, इतने सङ्कीर्ण थे, कि दो सवार बराबर बराबर मुश्किलसे चल सकते थे।

"मुश्किलसे इस बातकी आशा की जा सकती थी, कि

नगरवासी हमारा स्वागत करेंगे। फिर भी, वह हमारी प्रतिष्ठा करते थे। मुझे आशा भी थी, कि, मेरा जङ्गी जलूस उन्हें खूब अवनत करेगा।

"मैंने काबुलमें शान्ति-स्थापन करनेके लिये मेजर जनरल जेमस हिलको उस समयके लिये काबुलका गवरनर बनाया। उनके साथ एक मुसलमान भलेआदमी नव्वाब, गुलाम हुसैन खांको भी रखा। इसके अतिरिक्त मैंने दो अदालतें कायम कीं। एक फौजी और दूसरी मुल्की। मिशन-हत्याकी तहकीकातका काम अदालतोंको सौंप दिया।"

१६वीं अक्टोबरको बालाहिसारके एक बारूदभण्डारमें आग लगनेसे भण्डारघर बड़े भयङ्कर शब्दके साथ उड़ गया। अङ्गरेजोंको इस भण्डारघर और उसमें रखी हुई बारूदकी खबर नहीं थी। उस समय बालाहिसारमें ५वीं गोरखा और ६७ नम्बर पैदल फौजका पड़ाव था। बारूद उड़नेके साथ साथ ६६ नम्बर पैदल फौजके कप्तान शाफ्टो, ५वीं गोरखाके सुबेदार मेजर और १६ टेप्री सिपाही उड़ गये। इस घटनाके उपरान्त ही अङ्गरेजी फौजने बालाहिसार खाली करके बुद्धिमानी दिखाई। कारण, दो घण्टेके उपरान्त ही दूसरा बारूद भण्डार उड़ा। इसबार पहलेसे भी ज्यादा शब्द हुआ बालाहिसारसे चार सौ गज दूर कितने ही अफगान मर गये बारूद भण्डारोंके उड़नेका कारण खूब जांच करनेपर भी अज्ञात रहा। कितने ही लोग अनुमान करते थे, कि अफगानोंने बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौज उड़ा देनेके लिये बारूदमें आग लगाई थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनापति

लार्ड रावर्टसको भी इसी बातकी आशङ्का थी और उन्होंने नाना कारणोंके साथ बालाहिसारमें छिपी हुई बारूद उड़नेकी आशङ्कासे अङ्गरेजी फौज बालाहिसारमें नहीं रखी।

अपराधी काबुलियोंको दण्ड देनेका काम शीघ्र ही जारी किया गया। "अफगान वार" नामी पुस्तकके लेखक हेन्समेन साहब सियाहसङ्ग पड़ावसे २०वीं अक्टोबरको इस प्रकार लिखते हैं,—"आज हम लोगोंने पांच आदमियोंको फांसीकी सजा पानेके लिये जाते देखा। सन्तोष हुआ। गत कुछ सप्ताहोंकी घटनासे इन लोगोंका थोड़ा वा बहुत सम्बन्ध था। इन लोगोंका अपराध हम लोगोंकी निगाहोंमें अच्छी तरह खुल गया था। काबुलमें गवाह संग्रहका काम सहज नहीं है। कितने ही आदमी गवाही देनेके दुष्परिणामसे डरते हैं। हम लोगोंने अबतक यह किसी तरह प्रकट नहीं किया है, कि हम कबतक यहां रहेंगे। हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि अपनी-रक्षाकी छाया अपने शुभचिन्तकोंपरसे हटाते ही उनका क्या परिणाम होगा। अफगानोंकी बराबर बदला लेनेवाली शायद ही और कोई जाति हो। अपराधीके विरुद्ध गवाही देनेवालोंको अपराधीके रिश्तेदार निगाहपर चढ़ा लेंगे। * * * कल कमिशनके सामने पांच कैदी उपस्थित किये गये। पांचोंको फांसीका हुक्म दिया गया और वह फांसी चढ़ा दिये गये।" पांचोंमें एक नगरका कोतवाल था। बालाहिसारके द्वारपर दो फांसियां खड़ी की गई थीं। एकपर चार आदमी लटकाये गये। दूसरेपर सिर्फ कोतवाल लटकाया गया। अङ्गरेजी फौजने

नगरवासी हमारा स्वागत करेंगे। फिर भी, वह हमारी प्रतिष्ठा करते थे। मुझे आशा भी थी, कि, मेरा जङ्गी जलूस उन्हें खूब् अवनत करेगा।

"मैंने काबुलमें शान्ति-स्थापन करनेके लिये मेजर जनरल जेम्स हिलको उस समयके लिये काबुलका गवरनर बनाया। उनके साथ एक मुसलमान भलेआदमी नव्वाब गुलाम हसैन खांको भी रखा। इसके अतिरिक्त मैंने दो अदालतें कायम कीं। एक फौजी और दूसरी मुल्की। मिशन हत्याकी तहकीकातका काम अदालतोंको सौंप दिया।"

१६वीं अक्टोबरको बालाहिसारके एक बारूदभण्डारमें आग लगनेसे भण्डारघर बड़े भयङ्कर शब्दके साथ उड़ गया। अङ्गरेजोंको इस भण्डारघर और उसमें रखी हुई बारूदकी खबर नहीं थी। उस समय बालाहिसारमें ५वीं गोरखा और ६७ नम्बर पैदल फौजका पड़ाव था। बारूद उड़नेके साथ साथ ६६ नम्बर पैदल फौजके कप्तान शाफटो, ५वीं गोरखाके सूबेदार मेजर और १८ देशी सिपाही उड़ गये। इस घटनाके उपरान्त ही अङ्गरेजी फौजने बालाहिसार खाली करके बुद्धिमानी दिखाई। कारण, दो घण्टेके उपरान्त ही दूसरा बारूद भण्डार उड़ा। इसबार पहलेसे भी ज्यादा शब्द हुआ बालाहिसारसे चार सौ गज दूर कितने ही अफगान मर गये बारूद भण्डारोंके उड़नेका कारण खूब जांच करनेपर भी अज्ञात रहा। कितने ही लोग अनुमान करते थे, कि अफगानोंने बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौज उड़ा देनेके लिये बारूदमें आग लगाई थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनापति

लार्ड राबर्टसको भी इसी बातकी आशङ्का थी और उन्होंने नाना कारणोंके साथ बालाहिसारमें छिपी हुई बारूद उड़नेकी आशङ्कासे अङ्गरेजी फौज बालाहिसारमें नहीं रखी।

अपराधी काबुलियोंके दण्ड देनेका काम शीघ्र ही जारी किया गया। "अफगान वार" नामी पुस्तकके लेखक हैन्समैन साहब, शियाहसङ्ग पड़ावसे २०वीं अक्टोबरको इस प्रकार लिखते हैं,—"आज हम लोगोंने पांच आदमियोंको फांसीकी सजा पानेके लिये जाते देखा। सन्तोष हुआ। गत कुछ समयोंकी घटनासे इन लोगोंका थोड़ा वा बहुत सम्बन्ध था। इन लोगोंका अपराध हम लोगोंकी निगाहोंमें अच्छी तरह खुल गया था। काबुलमें गवाह संग्रहका काम सहज नहीं है। जितने ही आदमी गवाही देनेके दुष्परिणामसे डरते हैं। हम लोगोंने अबतक यह किसी तरह प्रकट नहीं किया है, कि हम कबतक यहां रहेंगे। हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि अपनी रक्षाकी छाया अपने शुभचिन्तकोंपरसे हटाते ही उनका क्या परिणाम होगा। अफगानोंकी बराबर बदला लेनेवाली शायद ही और कोई जाति हो। अपराधीके विरुद्ध गवाही देनेवालोंको अपराधीके रिश्तेदार, निगाहपर चढ़ा लेंगे। * * * कल कमिशनके सामने पांच कैदी उपस्थित किये गये। पांचोंको फांसीका हुक्म दिया गया और वह फांसी चढ़ा दिये गये। पांचोंमें एक नगरका कोतवाल था। बालाहिसारके द्वारपर दो फांसियां खड़ी की गई थीं। एकपर चार आदमी लटकाये गये। दूसरेपर सिर्फ कोतवाल लटकाया गया। अङ्गरेजी फौजने

अभागे कोतवालकी इतनी इज़्ज़त की। इसके उपरान्त नित्य ही कुछ अफ़गान मिशनकी हत्या करने वा अमीरसे बगावत करनेके अपराधपर फांसी पाने लगे। इसपर भी कुछ लोग अङ्गरेजी फ़ौजके इस कामसे सन्तुष्ट नहीं थे। हेंसमेन साहब ६वीं नवम्बरकी चिट्ठीमें लिखते हैं,—"लोगोंके दिलमें यह खयाल जमता जाता है, कि यहांकी फ़ौज बदला लेनेके काममें सुस्ती करती है और उसने प्रत्याशानुसार खूब रक्तपात नहीं किया।" इसके उपरान्त ही यानी १०वीं, ११वीं और १२वीं नवम्बरको कोई उनचास आदमियोंको फांसी दी गई।

अमीर याकूब खांके पदत्याग करनेकी बात बड़े लाट बहादुरने स्वीकार कर ली। सन् १८७९ ई०की पहली दिसम्बरको अमीर याकूब खां काबुलसे भारत भेज दिया गया। इसके एक सप्ताहके उपरान्त लार्ड राबर्टसने प्रधान मन्त्री तथा और कितने ही आदमियोंको भारतवर्ष भेज दिया।

एक ओर तो अङ्गरेजी फ़ौज यह सब कर रही थी, दूसरी ओर अफ़गान शान्त नहीं थे। वह समय समयपर अङ्गरेजी फ़ौजसे छोटी मोटी लड़ाइयां लड़ लिया करते थे। इसके अलावा वह अङ्गरेजी फ़ौजपर आक्रमण करनेके लिये स्थान स्थानपर एकत्र हो रहे थे। इन छोटे छोटे कई दलोंके मिलनेसे बड़ी फ़ौज तय्यार हो सकती थी। उस फ़ौजमें काबुलवासियोंके भी शरीक हो जानेसे वह और भी बड़ी और मज़बूत हो जा सकती थी। अङ्गरेजी फ़ौजके प्रधान सेनापति लार्ड राबर्टस इन सब बातोंकी खबर रखते थे। उन्होंने जलालाबादसे कुछ और सिपाही भेजनेके लिये तार दिया। अतिरिक्त

सिपाहियोंके आनेके पहले उन्होंने ऐसी चेष्टा की, जिससे अफ-गानोंके छोटे छोटे दल आपसमें मिल न सकें। दो फौजें तय्यार कीं। सेनापति मेकफरसनके अधीनस्थ फौजको उत्तरसे आते हुए अफगानोंसे पश्चिमके अफगानोंका मिलाप रोकनेका काम सौंपा गया। दूसरी, सेनापति बेकरके अधीनस्थ फौजको वह राह रोकनेका काम सौंपा गया, जिससे अफगानोंके परास्त होकर भागनेकी सम्भावना की गई थी। सेनापति मेकफरसनने कोहस्थानके लघमन और भारदेह दर्रेमें देखा, कि वहां दूसरे दल अफगान एकत्र हैं। मेकफरसनने उन लोगोंपर आक्रमण किया। अफगान पीछे हटे। हटते हटते एक पर्वतपर चढ़ गये और वहां जमकर उन लोगोंने मुकाबला करना आरम्भ किया। अङ्गरेजी फौजने आक्रमण करके अफगानोंको इस पर्वतपरसे भी हटा दिया। इसी तरह सेनापति बाकरने भी अफगानोंको परास्त करके पीछे हटा दिया। मुहम्मदजान खां वर्दकाई अफगानोंका सरदार था। उसने दूसरे दिन,—११वीं दिसम्बरको किलाकाजी गांवके समीप मोरचा तय्यार किया। लार्ड राबर्टसने सेनापति मासीको किलाकाजीकी ओर भेजा। मासी और जानमुह-म्मदकी फौजमें युद्ध हुआ। जानमुहम्मदकी फौज बहुत जबरदस्त थी। उसके दबावसे अङ्गरेजी फौजको पीछे हटना पड़ा। उसी दिन दूसरी ओर लार्ड राबर्टसकी फौज और दलवाइयोंकी फौजमें मुकाबला हो गया। वैरियोंकी संख्या अधिक देखकर लार्ड राबर्टसको भी पीछे हटना पड़ा। वल-वाइयोंकी प्रबलतासे लार्ड राबर्टस चिन्तित हुए। वह ५

नकी तोपें वापस लाने और बलवाइयोंके साथ काबुलवालियोंका मिलना रोकनेकी चेष्टा करने लगे। १२वीं, १३वीं, और १४वीं दिसम्बरको भी बलवाइयों और अङ्गरेजी फौजमें स्थान स्थानपर युद्ध हुआ। एक लड़ाईमें अङ्गरेजी फौजको तोपें छोड़कर पीछे हटना पड़ा था। किन्तु दूसरी लड़ाईमें उसने अपनी तोपें वापस ले लीं। फिर भी बलवाइयोंकी संख्या अधिक होनेकी वजहसे अङ्गरेजी फौजको प्रत्येक स्थानसे पीछे हटना पड़ा। लार्ड राबर्टस अपनी पुस्तकमें लिखते हैं,—"आज १४वीं दिसम्बरके दोपहरसे पहले मुझे यह नहीं मालूम था, कि अफगान इतने आदमी एकत्र कर सकते हैं। फिर भी, मुझे यह बात माननेकी कोई जरूरत दिखाई नहीं देती, कि वह लोग शिक्षित सैन्यका मुकाबला कर सकेंगे। * * * शेरपुरके पड़ावमें जाकर ठहरनेका खयाल बहुत दुःखद है। शेरपुर जानेसे काबुलनगर और बालाहिसार हम लोगोंके कब्जेसे निकल जायगा। उधर, इन दोनोंपर कब्जा करके, अफगान जातियां बहुत मजबूत बन जावेंगी।'

"मुझे अपने कामका फैसला तुरन्त ही कर डालना है। कारण, यदि मैं पीछे हटूं, तो रात्रि होनेसे पहले काबुल नगरके ऊपरकी पहाड़ियोंपर सेनापति मेकफरसनकी फौजके लिये और आसमाई पर्वतपर सेनापति बेकरकी फौजके लिये रसद भेज देना जरूरी है। मैंने हेलियोग्राफद्वारा मेकफरसनसे पूछा, कि वैरी क्या कर रहे हैं और उनकी संख्या क्या अबतक बढ़ती ही जाती है? उसने जवाब दिया, कि उत्तर, दक्षिण और पश्चिमसे दलके दल अफगान चले आ रहे हैं और उनकी

गणना प्रति घण्टे अति अधिक होती जाती है। जो युवक अफसर सङ्केतद्वारा समाचार भेज रहा था, उसने अपनी ओरसे इतनी बात और कही,—'चारदेह घाटीकी अफगानोंकी भीड़ Derby day का Epoom याद दिलाती है।'

'यह उत्तर पाकर मैंने फैसला कर डाला। मैंने सब जगहोंकी फौज शेरपुरमें एकत्र करना चाही। इससे शेरपुरकी रक्षा होने और अनतककामा वृथा रक्तपात रुकनेकी आशा थी। मैंने इस कामको खराबी अच्छी तरह समझ ली थी। किन्तु मुझे इसके सिवा दूसरा कोई उपाय दिखाई नहीं देता था। ऐसे समय अपनी रक्षा होका प्रबन्ध करना चाहिये था और समय पानेपर वा कुमककी फौज आनेपर अफगानोंपर आक्रमण करना उचित था।

"दो बजे दिनको दोनो सेनापतियोंको पीछे हटनेकी आज्ञा भेजी गई। उसी समय इस आज्ञाके अनुसार कार्य्य आरम्भ किया गया। अफगान हमारी फ़ौजपर दबाव डालने लगे। हमारी फौज जो मोर्चा छोड़ती, अफगान तुरन्त ही उसपर कबजा कर लेते थे। राहमें और सन्ध्यातक अफगान सिपाही हमारी फौजपर दबाव डालते चले आये। कहीं कहीं भिड़कर लड़ाई हो गई और इस तरहकी लड़ाईमें कितने ही बहादुरीके काम दिखाई दिये। * * राहमें हमारी फौजमें किसी तरहकी घबराहट नहीं फैली। वह बड़ी शान्ति और चालाकीके साथ परिचालित की जाती थी। रात्रि होनेके उपरान्त ही फौज और उसका साज सामान निर्विघ्न शेरपुर

पहुंच गया। उसी रातको अफगानोंने कबुल और बाला हिसारपर कबजा कर लिया।

"भारतके सुशिक्षित सिपाहियोंका प्राच्यवासियोंके बड़े से बड़े दलका सामना करना आसान काम है। शिक्षित फौजका दृढ़तापूर्वक अग्रसर होना, एक बहुत बड़ी बात है। प्राच्यके लोग इस तरहकी फौजका सामना प्रायर ही कर सकते हैं। किन्तु पीछे हटना और ही बात है। जब प्राच्यवासी अपने मुकाबिलकी फौज हटती देखते हैं, तो अपने ऊपर और अपने बलपर बहुत भरोसा करने लगते हैं। मुकाबिलकी फौज यदि किसी तरहकी घबराहट दिखावे, तो उसका नाश निश्चय है। इसलिये यह खयाल करनेकी बात है, कि घण्टोंतक मैं कितनी आशङ्काके साथ अपनी फौजका प्रत्यावर्त्तन देख रहा था। जमीन आक्रमणकारी अफगानोंके अनुकूल थी। वह बिना किसी बाधाके पीछे हटते हुए मुट्ठीभर आदमियोंपर टूट पड़ते थे। अफगा जयध्वनिके निनादसे दिशायें कपाते थे और अपने छुरे हिलाते चमकाते थे। किन्तु हमारे वीरपुरुष अपने अफसरोंके आज्ञानुसार तनिक भी विचलित न होते थे। वह शान्तभावसे अपने स्थानसे हटते थे, प्रत्येक काम इस तरह करते मानो साधारण कवायदभूमिमें चल फिर रहे थे और अपने मरे हुए तथा घायल आदमियोंको बिना किसी घबराहट और जल्दबाजीके उठा लेते थे। असलमें प्रत्येक कठिन काम बड़ी आसानीके साथ किया गया। जिस समय फौजें पड़ावमें पहुंचीं मैंने अपने साथियोंको आन्तरिक धन्यवाद दिया।

"दिनभरमें, हमारी फौजके जितने सिपाही हताहत हुए, उनकी संख्या इस प्रकार है,—१८ मारे गये। इनमें कप्तान स्पेन्स और ७२ हाईलेण्डर फौजके लफटिनण्ट गेसफर्ड शामिल हैं। ८८ घायल हुए, इनमे ६२ हाइलण्डर्सके कप्तान गोरडन और ७२ हाइलण्डर्सके लफटिनण्ट इगर्टन और गाइड्स फौजके कप्तान बेटी शामिल हैं।

"जिस समय छावनीका फाटक बन्द हुआ, मैंने बड़े लाट बहादुरको दिनभरके कामका समाचार तारद्वारा भेज दिया। कारण, मैं जानता था, कि वैरियोंका पहला काम तार काटकर हम लोगोंके और भारतके बीचका सम्बन्ध तोड़ देना होगा। मैंने समाचार भेजा, कि मैंने ब्रिगेडियर जनरल चार्लस गफ साहबको गण्डमकसे यथासम्भव शीघ्र आनेकी आज्ञा दी है। उनकी सैन्यसे काबुल और भारतकी राह खोल रखूंगा और प्रयोजन पड़नेपर शत्रुदमनके लिये सहायता भी लूंगा। मुझे हाकिमोंको तारद्वारा यह समाचार भेजकर सन्तोष हुआ, कि अङ्गरेजी फौजके लिये उतनी चिन्ता करनेका प्रयोजन नहीं है। शेरपुरमे कोई चार महीनेकी रसद आदमियोंके लिये, छः सप्ताहका चारा बारबरदारीके जानवरोंके लिये एकत्र है। ईंधन, दवा और अस्पतालसम्बन्धी सामानकी इफरात है। छावनीके भीतरसे तोपें बन्दूकें चलानेके मौके हैं। कोई तीन या चार महीनेतक हम लोग अच्छी तरह मुकाबला कर सकते हैं।

"सौभाग्यवश, हमारे पास रसदकी कमी नहीं थी। हम लोगोंकी जनसंख्या बढ़ गई थी। वलीमुहम्मद खां

और कितने ही सरदार हमारी रक्षामें शेरपुर चले आये। उन्होंने कहा, कि यदि हम लोग काबुल नगर जावेंगे, तो वहां मार डाले जावेंगे। हमें ऐसे मेहमान पसन्द नहीं थे। कारण, मैं उनपर विश्वास नहीं कर सकता था। फिर भी, वह हमारे मित्र थे और मैं उनकी प्रार्थना अस्वीकार नहीं कर सकता था। मैंने उन्हें इस शर्तपर छावनीमें दाखिल कर लिया, कि प्रत्येक सरदारके साथ गिनतीके कुछ आदमी रहें।

"१४वी तारीखकी तूफानी घटनाके उपरान्त शान्ति उपस्थित हुई। इसमें छावनीके मोरचे दुरुस्त किये गये और काबुल-अस्त्रागारसे मिली हुई बड़ी बड़ी तोपें कामके लिये तय्यार की गईं।

"इधर हम मुकाबलेके लिये तय्यार हो रहे थे, उधर वैरी बिलकुल ही निकम्मे थे। इस अवसरमें उन लोगोंने यदि कोई काम किया, तो यह, कि काबुल नगर लूट लिया और अमीरका अस्त्रागार खाली कर दिया। बारूद सम्भवतः नष्ट कर दी गई थी। फिर भी बहुत कुछ बच रही थी। बहुत-सी बची हुई बारूद मुहम्मद जानकी फौजके हाथ पड़ गई। मुहम्मदजान बलवाई अफगानोंका प्रधान सरदार बन गया था। उसने याकूब खांके सबसे बड़े लड़के मूसा खांको काबुलका अमीर बना दिया था।

"पांच दिनतक दोनो ओरसे कोई प्रयोजनीय काम न किया गया। वैरी पड़ोसके किले और बागोंपर कबजा करने जाते थे। इसमें दो एक आदमी हताहत हुआ करते थे। जिस जगहसे वैरी हमें तकलीफ पहुंचा सकते, वहांसे

हम उन्हें हटा दिया करते थे। मैंने कुछ किले तुड़वा दिये और छावनीको पड़ोसके रक्षास्थल नष्ट करा दिये। फिर भी, वैरियोंके हटानेके लिये मैं कोई बड़ी लड़ाई नहीं लड़ा। इसलिये, कि छीने हुए स्थानोंपर क़बज़ा जमा रखनेके लिये मेरे पास फ़ौज नहीं थी और स्थान छीन लेनेके उपरान्त क़ाबू न रखनेसे छीननेके समयका रक्तपात वृथा होता। * *

"२१वीं तारीख़से अफ़ग़ानोंकी बड़ी तय्यारीके लक्षण दिखाई देने लगे। उसदिन और उसके दूसरे दिन छावनीके पूर्व कई जगहोंपर अफ़ग़ानोंने छावनीपर आक्रमण करनेके लिये क़बज़ा कर लिया। मुझे यह भी ख़बर मिली, कि अफ़ग़ान छावनीकी दीवार पार करनेके लिये बड़ी बड़ी सीढ़ियां तय्यार करनेमें मसरूफ़ हैं। इस समाचारसे पता पड़ा, कि अब अफ़ग़ान प्रस्ताव कार्य्यमें संलग्न हैं। दूसरी ख़बर मिली, कि कुल मसजिदोंमें मुल्ले, लोगोंको उपदेश कर रहे हैं, कि तुम लोग मिलकर काफ़िरोंका नाश करो। वृद्ध मुल्ला मुश्क़े आलम लोगोंकी उत्तेजनाकी आग भड़कानेकी चेष्टा यथाशक्ति कर रहा है। आगामी २३वीं तारीख़को सन्ध्याको मुहर्रम पड़ता था। उस दिन मुसलमानोंकी धार्म्मिक उत्तेजना चरमसीमापर्य्यन्त पहुंच जाती है। मुल्ला मुश्क़े आलमने वाद किया था, कि उस दिन प्रातःकाल वह मस्जिदकी अग्नि अपने हाथसे जलावेगा। इस अग्निको देखते ही अफ़ग़ानोंने छावनीपर आक्रमण करनेका प्रण किया था।

"२२वीं की रात निर्विघ्न बीती। छावनीकी दीवारके,

प्रातःकाल होते ही एकाएक बाढ़ दगने लगी। हमारे सिपाही हथियारसे लैस होकर अपनी अपनी जगह खड़े आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आक्रमण आरम्भ हुआ। छावनीकी पूर्व और दक्षिण-ओरसे गोलियोंकी वृष्टि होने लगी। अत्यन्त भयङ्कर आक्रमण दो ओरसे हो रहा था। इनमें एक ओर सेनापति ह्यिउ गफ और दूसरी ओर कर्नल जेनकिन था। उनकी दृढ़ता देखकर मुझे विश्वास हुआ, कि जो विश्वास मैंने उनपर किया था, वह इसके योग्य थे।

"अभी सबेरा नहीं हुआ था। चारों ओर इतना अन्धेरा था, कि दीवारके सामनेकी चीजें दिखाई नहीं देती थी। मैंने आज्ञा दे दी थी, कि बैरियोंको बिना अच्छी तरह देखे बाढ़ न दागी जावे। लफटिनण्ट प्रसंके अधीन गफकी पहाड़ी तोपोंने स्टार गोले दागे। इससे मैदानमें प्रकाश फैल गया। प्रकाशमें दिखाई दिया, कि अफगान छावनीसे कोई एक हजार गजके फासलेपर आ चुके हैं। २८ नम्बर पञ्जाब पलटनने पहले बाढ़ मारना आरम्भ की। इसके उपरान्त गाइड्स, ३६ नम्बर और ६२ नम्बर पलटन यथाक्रम बाढ़ दागने लगीं। दीवारके समीप पहुंचे हुए गाजियोंपर बाढ़ पड़ने लगी। फिर तो तोपखाने भी आगे बढ़ते हुए बैरियोंपर गोले उतारने लगे। प्रातःकाल सात बजेसे लेकर दश बजेतक इसी तरह लड़ाई होती रही। बैरियोंने पड़ावकी दक्षिण ओरकी ...र उल्लङ्घन करनेकी चेष्टा बारबार की। कितनी ही तो बैरी दीवारके अत्यन्त समीप पहुंच गये। पर ...ं पीछे हटाये गये। जिस जिस जगह इस तरहकी बड़ी

प्रातःकाल होते ही एकाएक बाढ़ दगने लगी। हमारे सिपाही हथियारसे लैस होकर अपनी अपनी जगह खड़े आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आक्रमण आरम्भ हुआ। छावनीकी पूर्व और दक्षिण ओरसे गोलियोंकी वृष्टि होने लगी। अत्यन्त भयङ्कर आक्रमण दो ओरसे हो रहा था। इनमें एक ओर सेनापति ह्यु गफ और दूसरी ओर कर्नेल जेनकिन था। उनकी दृढ़ता देखकर मुझे विश्वास हुआ, कि जो विश्वास मैंने उनपर किया था, वह इसके योग्य थे।

"अभी सबेरा नहीं हुआ था। चारों ओर इतना अन्धेरा था, कि दीवारके सामनेकी चीजें दिखाई नहीं देती थीं। मैंने आज्ञा दे दी थी, कि वैरियोंको बिना अच्छी तरह देखे बाढ़ न दागी जावे। लफटिनण्ट शर्सके अधीन गफकी पहाड़ी तोपोंने चार गोले दागे। इससे मैदानमें प्रकाश फैल गया। प्रकाशमें दिखाई दिया, कि अफगान छावनीसे कोई एक हजार गजके फासलेपर आ चुके हैं। २८ नम्बर पञ्जाब पलटनने पहले बाढ़ मारना आरम्भ की। इसके उपरान्त गाइड्स, ३९ नम्बर और ९२ नम्बर पलटन यथाक्रम बाढ़ दागने लगीं। दीवारके समीप पहुंचे हुए गाजियोंपर बाढ़ पड़ने लगी। फिर तो तोपखाने भी आगे बढ़ते हुए वैरियोंपर गोले उतारने लगे। प्रातःकाल सात बजेसे लेकर दश बजेतक इसी तरह लड़ाई होती रही। वैरियोंने पड़ावकी दक्षिण ओरकी दीवार उल्लङ्घन करनेकी चेष्टा बारबार की। कितनी ही तो वैरी दीवारके अत्यन्त समीप पहुंच गये। पर पीछे हटाये गये। जिस जिस जगह इस तरहकी बड़ी

तैयार की गई थ, लाशोंका ढेर उन जगहोंका पता बता रहा था। ऐसे ही समय मुझे भारतवासियोंके साहस और उनकी निर्भीकताका परिचय मिला। युद्ध बहुत घोर शोरसे जारी था। मैं एक जगह खड़ा था। प्रति क्षण कमाण्डिङ्ग अफसरोंकी रिपोर्टें मुझे मिल रही थीं। ऐसे समय अलीबख्श नामे नौकरने मेरे पास आकर कानमें कहा, कि स्नान कर लीजिये। यह गोलियों और तोप बन्दूकोंकी आवाजसे तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उसने अपना दैनिक कर्तव्य इस प्रकार पालन किया, मानो कोई असाधारण बात नहीं हो रही थी।

दस बजनेके उपरान्त ही युद्ध कुछ स्थगित हुआ। मैंने खयाल किया, कि अफ़गान ब्रीचलोडिङ्ग बन्दूकोंके सामने आनेसे हिचकते हैं। पर घण्टे भर बाद आक्रमण ज़ोरशोरके साथ फिर आरम्भ हुआ। मैंने देखा, कि वैरी हमारी बाड़ोंसे पीछे नहीं हटते, इसलिये उचित जान पड़ा, कि अपनी फौज बाहर निकालूं और आक्रमण करके उन्हें अपने सामनेसे हटा दूं। मैंने मेजर कायरको फील्ड आर्टिलरी तोपोंके साथ और लफटिनराट कारनेल विलयमको ५ नम्बर पञ्जाब रिसालेके साथ सिमाल्ट्खालके ऊपर पहुंचकर [illegible] [illegible] नामे गांवकी गिर्द एकत्र वैरियोंको ध्वस्त [illegible] आज्ञा दी। इस आक्रमणसे अभीष्ट सिद्ध [illegible] अफ़गान तितरबितर भाग गये।

इसके उपरान्त ही [illegible] पड़ा, कि आक्रमण कुछ टूट गया। [illegible]

आये थे। रास्तेके ग्रामवासी और काबुलवासी इन लोगोंके मध हो गये थे। अफसरोंका कहना था, कि आक्रमणकारियोंकी संख्या एक लाखके करीब थी। मैं भी इसे अधिक नहीं समझता।

"१५ वींसे लेकर २३ वींतक हमारे बहुत थोड़े आदमी हताहत हुए। दो अफसर ८ सिपाही और ७ नौकर मारे गये, ५ अफसर ०१ आदमी और २२ नौकर घायल हुए। वैरियोंके कोई तीन हजार आदमी काम आये होंगे।"

इस घटनाके उपरान्त अङ्गरेजी फौज शेरपुरसे बाहर निकली। उसने काबुल और बालाहिसार प्रभृति स्थानोंपर फिर कबजा किया। राबर्टस साहबने निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाश की,—

"कुछ बागी आदमियोंके उत्तेजित करनेपर साधारणतः अज्ञ और अदूरदर्शी मनुष्योंने बगावतका झण्डा खड़ा किया। बागियोंको उचित प्रतिफल मिल चुका है। प्रजा भगवानकी थाती है। शक्तिशालिनी न्यायपरायणा ब्रटिश सरकार प्रजाका अपराध क्षमा करती है। जो लोग बिना विलम्बके ब्रटिशकी शरण आवेंगे, उनका अपराध क्षमा किया जावेगा। सिर्फ वारदकके मुहम्मद जान, कोहस्थानके मीर बूचा, लोगारका समन्दर खां, घारदेहका गुलाम हैदर और सरदार मुहम्मदहसन खांके हत्यारोंका अपराध क्षमा नहीं किया जावेगा। चाहे तुम किसी जातिके हो, आओ और अधीनता स्वीकार करो। इसके उपरान्त तुम अपने मकानोंमें सुख और शान्तिके साथ रह सकोगे। तुम्हारा किसी तरहका नुकसान न होगा।

करते थे। मध्याह्नके उपरान्त एक बजते बजते आक्रमण एकबारगी ही बन्द हो गया। वैरी भागने लगे। अब रिसा-लेके आक्रमण करनेका मौका था। मैंने मान्नीको आज्ञा दी, कि छावनीका प्रत्येक सवार लेकर तुम वैरियोंका पीछा करो और रात्रि होनेके पहले शेरपुरको चारो ओरकी कुल खुली हुई जगह वैरियोंसे साफ कर दी गई। साथ साथ रिसालेका एक भाग छावनीके दक्षिण कुछ गावोंको ध्वंस करनेके लिये भेजा गया। इन गावोंसे वैरियोंने हमें कष्ट पहुंचाया था और उन्हें वहांसे हटा देना बहुत आवश्यक था। इन गावोंके ध्वंस होनेपर ब्रोगेडियर जनरल गफकी फौजके लिये राह खुल जाती। वह शेरपुरसे कोई ६ मीलके फासलेपर पहुंच चुके थे। मुझे उनके पड़ावके खेमे दिखाई देते थे। खेमे गाड़नेके ढङ्गसे जान पड़ता था, कि वह एक रात रहनेके लिये वहां गाड़े गये थे। गावोंमें गाजी मिले। इन सबने आत्मसमर्पण करनेके वा भागनेके बदले मरना मुनासिब समझा। फलतः वह गावके मकानोंके साथ साथ उड़ा दिये गये। दो वीर इञ्जीनियर अफसर, कप्तान डण्डाम सी० सी० और लफटिनण्ट सी० नजेण्ट मकान उड़ाते वक्त खुद उड़ गये।

* * मुझे मालूम हुआ, कि वैरियोंने आक्रमण करना हो नहीं छोड़ दिया, वरंच जातियोंका बड़ा जमाव टूट चुका था और नगरसे मुकाबला करनेवाले सहस्र सहस्र मनुष्योंमें एक भी पार्श्ववर्त्ती गावों वा पहाड़ियोंमें नहीं था। आक्रमण करने वालोंकी ठीक संख्या बताना कठिन था। दूर दूरके लोग

आये थे। राहके ग्रामवासी और काबुलवासी इन लोगोंके म थ हो गये थे। अमिनोंका कहना था, कि आक्रमणकारि-योंकी संख्या एक लाखके करीब थी। मैं भी इसे अधिक नहीं समझता।

"१५ वींसे लेकर २३ वींतक हमारे बहुत थोड़े आदमी हताहत हुए। दो अफसर ८ सिपाही और ७ नौकर मारे गये, ५ अफसर ४१ आदमी और २२ नौकर घायल हुए। वैरियोंके कोई तीन हजार आदमी काम आये होंगे।"

इस घटनाके उपरान्त अङ्गरेजी फौज शेरपुरसे बाहर निकली। उसने काबुल और बालाहिसार प्रभृति स्थानोंपर फिर कबजा किया। राबर्टस साहबने निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाश की,—

"कुछ बागी आदमियोंके उत्तेजित करनेपर साधारणत अज्ञ और अदूरदर्शी मनुष्योंने बगावतका भाण्डा खड़ा किया। बागियोंको उचित प्रतिफल मिल चुका है। प्रजा भगवानकी थाती है। शक्तिशालिनी न्यायपरायणा ब्रटिश सरकार प्रजाका अपराध क्षमा करती है। जो लोग बिना विलम्बके ब्रटिशकी शरण आवेंगे, उनका अपराध क्षमा किया जावेगा। सिर्फ वारदकाके मुहम्मद जान, कोहस्थानके मीर बूचा, लोगारका सम न्दर खां, घारदेहका गुलाम हैदर और सरदार मुहम्मदहसन खांके हत्यारोंका अपराध क्षमा नहीं किया जावेगा। चाहे तुम किसी जातिके हो, आओ और अधीनता स्वीकार करो। इसके उपरान्त तुम अपने मकानोंमें सुख और शान्तिसे साथ रह सकोगे। तुम्हारा किसी तरहका नुकसान न होगा।

प्रजाके विरुद्ध इटिश गवरमेंट किसी तरहका वैरभाव नहीं रखती। अब जो मनुष्य बगावत करेगा, निश्चय ही दण्ड पावेगा, यह जरूरी बात है। किन्तु जो लोग बिना बिलम्बके चले आवेंगे, उन्हें भय अथवा शङ्का न करना चाहिये। इटिश-सरकार वही कहती है, जो उसके हृदयमें है।"

इस विज्ञप्तिका असर बहुत अच्छा हुआ। काबुल नगर और पार्श्ववर्त्ती देशोंमें शान्ति स्थापित हो गई। नगरके बाजार खुल गये और बाजारमें पूर्ववत भीड़भाड़ होने लगी। दूर दूरके सरदार आकर राबर्टस साहबसे मुलाकात करने लगे।

सन् १८८० ई०के आरम्भमें काबुलमें शान्ति विराजने लगी। किन्तु यह शान्ति असली नहीं थी। जिस तरह ज्वालामुखी पर्व्वतका ऊपरीभाग ठण्डा हो जानेपर भी उसके भीतर आग भड़कती रहती है, ठीक उसी तरह काबुलवासी प्रत्यक्षमें शान्त दिखाई देनेपर भी आन्तरिक उत्तेजनासे परिपूर्ण थे। कहीं अफगान अङ्गरेजी फौजपर जेहाद करनेकी चेष्टा कर रहे थे। कहीं बलवाई सरदार महम्मदजान और मुल्ला मुश्क-आलमकी अधीनतामें सहस्र सहस्र मनुष्य काबुलपर फिर चढ़ाई करनेके लिये सजधज रहे थे। अङ्गरेजी फौज भी निश्चिन्त नहीं थी। वह हर घड़ी अफगानोंसे लड़ने झगड़नेके लिये तय्यार रहती थी। अङ्गरेजी फौजने बड़ी चेष्टा करके [illegible] और उसकी इर्दगिर्द कोई बीस बीस कोसके [illegible] अपने शासनकी प्रस्तार प्रतिपत्ति कर रखी थी। को[illegible] हस्थान तथा अफगान तुरकस्थानतक अङ्गरेजी फौज नहीं गई।

यह पूर्ववत स्वतन्त्र और स्वाधीन था। देशकी दशा देखकर ब्रटिश सरकार किसी उपयुक्त मनुष्यको अफगानस्थानकी गद्दी देकर अपनी फौजको भारतमें वापस लाना चाहती थी। अफगान कहते थे, कि याकूब खां काबुलका अमीर फिर बनाया जावे। ब्रटिश सरकार यह बात मञ्जूर नहीं करती थी। कारण, उसको विश्वास हो चुका था, कि अमीरकी साटसे कवेगनरीकी मिशन मारी गई थी। ठीक ऐसे ही समय सम्पूर्ण अफगान स्थानमें यह खबर फैल गई, कि अमीर दोस्त मुहम्मदके पोते और अमीर शेर अली खांके भतीजे अबदुररहमान खां रूसकी अमलदारीसे अफगान तुरकस्थान आ पहुंचे हैं। अबदुररहमान सन १८८० ई० के आरम्भमें अफगान तुरकस्थान आये थे। मार्चका अन्त होते न होते, उन्होंने सम्पूर्ण अफगान तुरकस्थानपर अपना अधिकार जमा लिया। अब्दुर रहमानकी शक्ति बढ़नेसे अङ्गरेजोंको आशङ्का हुई और अफगानोंकी हिम्मत बढ़ गई। इससे कुछ पहले, सन् १८८०की १६वीं फरवरीको हेंसमेन साहब "अफगान वार" नाम्नी अपनी पुस्तकमें लिखते हैं,—"अब्दुररहमानकी चालें समझना बहुत कठिन है। अफगानस्थानके प्रधान सरदारोंकी अपेक्षा इस सरदारका नाम लोगोंकी जुबानपर ज्यादा है। जैसा मैंने खयाल किया था, अबदुररहमान अफगानस्थानके अभिनयमें प्रधान पात्र बनता मालूम होता है। कारण, प्रादेशिक नीतिपर उसका असर बहुत जल्द पड़ सकता है। तुरकस्थानके मामलेकी खबर हमें अत्यन्त कठिनतापूर्वक मिलती है। हमें युरोपीय तार समाचारद्वारा मालूम हुआ, कि रूसियोंने

अबदुररहमानको अवकाश दे दिया और अब वह अपनी भाग्य परीक्षाके लिये अफगानस्थान आया है। तथापि अबतक हम लोगोंको उसके अक्ष नदीकी दक्षिण ओर पहुंचनेकी पक्की खबर नहीं मिली है। यह सत्य है, कि उसके बलख आनेकी खबर एकबार मिली थी, किन्तु इस समाचारका समर्थन नहीं हुआ। इसलिये वह अविश्वासनीय समझा गया। अब हम लोगोंको उसकी गतिकी दूसरी खबर मिली है। बलखके एजराटोंने काबुली सौदागरोंको चिट्ठी लिखी है, कि मीर अफ़जल खाका निरुद्देश लड़का बदखशांमें है। उसके साथ कोई २ हजार तुर्क सिपाही हैं। वह इमारतका दावा करना चाहता है। * * * अमीर अबदुररहमानको अफगानस्थानकी जातिया और अफगान सिपाही दोनो प्यार करते हैं। मुल्ला मुश्के आलमके लोगोंके जेहादके लिये उभारने और मुहम्मद जानकी फौजके कुछ दिनोंके लिये शेर-पुर घेर देनेकी खबरसे विदेशमें पड़े हुए अबदुररहमानको अपना मनस्सा पूरा करनेकी आनभायशका खयाल पैदा हुआ होगा। इस मन्सूबेका हाल भविष्यमे मालूम होगा। किंतु इसका प्रत्यक्ष स्वरूप कुछ तुरकी सवारोंको एकत्र करना और दो स्थानसे अक्ष नदी पार करना है। अबदुर रहमान बदखशांकी ओर आया। वहा उसकी स्त्रीका सम्बन्धी हाकिम था। * * * खबर है, कि अबदुररहमानके पास दो हजारसे तीन हजारतक सवार हैं। यहावाले कहते हैं, कि जिस समय उसने अक्ष नदी पार की थी, उसके पास १२ लाख रुपये बुखारेकी अशरफियोंमे थे। * * * अबदुरर

हमारा यदि अफ़गान तुरकस्थानके साथ काबुलपर भी कब्जा करना चाहेगा, तो या तो हम लोगोंको उसे अमीर मानना पड़ेगा, या उसकी फ़ौजसे युद्धस्थलमें भिड़ना पड़ेगा। अभी यह देखना बाकी है, कि वह रूसको पसन्द करता है, या इङ्गलण्डको।"

इस अवसरमें काबुलका शासन सम्बन्धी फ़ैसला करनेके लिये सर लेपेल ग्रिफ़िन साहब राजनीति समितिके प्रधान बनकर भारतसे काबुल आये। उन्होंने अमीर अबदुररहमानको एक चिट्ठी भेजी।

इस चिट्ठीका हाल लिखनेसे पहले हम अबदुररहमानके सम्बन्धमें कुछ बातें कहना चाहते हैं। अब्दुररहमान का जीवन अत्यन्त कौतूहलमय है। उन्होंने कभी कैद होकर बेड़ियां खड़काईं, और कभी अपने हाथसे अपना भोजन बनाया। कभी देशके हाकिम बने और कभी हाकिमकी प्रजा। कभी सैन्यके सेनापति और कभी सेनापतिके अधीन सिपाही हुए। कभी उन्होंने राजकुमारोंकी तरह कभी हुशारों और कभी दरवेशियोंकासा जीवन व्यतीत किया। कभी उनके पास सम्पत्तिका भण्डार रहा, कभी भोजनके लिये एक टुकड़ा भी मयस्सर न हुआ। अबदुररहमान शासनोंमें अपने चाचा शेरअलीखांसे पराक्त होकर अफ़गानस्थानकी सीमा पार करके रूसकी अमलदारीमें चले गये थे। जब उनको मालूम हुआ, कि अफ़गानस्थानमें अङ्गरेजी फ़ौजका कब्जा है और अफ़गान अङ्गरेजोंकी फ़ौजसे असन्तुष्ट हैं, तो वह रूस अफ़सरोंकी सलाह और आशासे अफ़गानस्थान आये।

इनको देखते ही अफगान तुरकस्थानके अमीर रईस अपनी अपनी फौजोंके साथ इनसे मिलने लगे। अमीर अबदुररहमान अपनी पुस्तक तुजुक अबदुररहमानीमें अपने रूसकी अम लदारीसे अफगान तुरकस्थान आने और अपने अमीर बननेका हाल इस प्रकार लिखते हैं,—"दूसरे दिन मैं कान्दज पहुंचा। सिपाहियोंने एक सौ एक तोपोंकी सलामी दी। मुझे देख कर वह बहुत प्रसन्न हुए। मेरे वैरी दो अफसरोंको मेरे सामने लाये। दोनोंको मेरे सामने मार डालना चाहते थे। मैंने मारनेकी आज्ञा न दी। दोनोंको छोड दिया।

"अगले दिन तोपखानेको देख भाल कर रहा था। इतनेमें एक मनुष्य आगे निकल आया और सलाम करके मेरे पैरोंपर गिर पडा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उसे उठाया, तो देखा, कि नाजिर हैदरका लडका सरवर खां है। यह मुझसे समरकन्दमें छुट गया था। पहले तो उसने मुझसे अत्यन्त विनीत भावसे क्षमा प्रार्थना की। जब मैंने उसको क्षमा किया, तो उसने कहा, कि मैं काबुलसे आपके नामकी चिट्ठी लाया हूं। मैं अपने खेमेमें वापस आया, तो जान पडा, कि सर लेपेल ग्रिफिन साहबका पत्र लेकर आया है। राहमें विषम शीत थी। पाला और बरफ घुटनोंसे ऊपर ऊपर थी। पत्रका विषय इस प्रकार था;—

'मेरे प्रतिष्ठित मित्र सरदार अब्दुररहमान खां।

'यथायोग्यके उपरान्त आपका मित्र ग्रिफिन आपको सूचित करता है, कि, ब्रटिश सरकार आपके सकुशल कतागान पहुंचनेसे अत्यन्त सन्तुष्ट है। आप यदि यह लिखेंगे, कि रूससे

आप कैसे आये और अब आपकी क्या इच्छा है, तो गवरमेण्ट अत्यन्त प्रसन्न होगी।'

'मैंने अपनी फ़ौजको यह पत्र सुनाया। कारण, यह पहले पहल इटिशसरकारसे मेरा सम्बन्ध हो रहा था। बिना फ़ौजकी सलाहके इस पत्रका उत्तर देना उचित जान न पड़ा। मुझे भय था, कि फ़िसादी लोग कहीं यह न प्रसिद्ध कर दें, कि मैं अङ्गरेजोंसे मिला हुआ था और इसी बहानेसे उन्हें देश देना चाहता था। इससे मैं बरबाद हो जाता। मुझे यह भी आजमाना था, कि लोग नैतिक सम्बन्धमें मुझे कहांतक स्वतन्त्रता देते हैं। मैंने पत्र उच्चस्वरसे पढ़ दिया और कहा, कि सरदारगण मुझे इस पत्रका उत्तर देनेमें सहायता प्रदान करें। मैं नहीं चाहता, कि अपने नये मित्रोंकी सलाह बिना लिये कोई काम करूं। मेरी इच्छा है, कि सब लोग जवाब तय्यार करनेमें मिल जावें। उन लोगोंने मुझसे दो दिनोंकी मुहलत चाही। तीसरे दिन कोई सौ चिट्ठियां लाये। इनमें किसी किसीका विषय यह था, -'हे अङ्गरेज जाति! हमारा देश छोड़ दो। या तो हम तुम्हें निकाल देंगे, या स्वयं इसी चेष्टामें मारे जावेंगे।' एक पत्रमें हरजानेके रुपये मांगे गये थे। एकमें लिखा था, कि अङ्गरेज तोपें और क़िले बरबाद करनेके लिये एक करोड़ रुपयेका हरजाना दें, नहीं तो एक भी अङ्गरेज पेशावरतक जीता जाने न पावेगा। ऐसा हो एकबार पहले भी हो चुका है। एक सरदारने लिखा, 'ऐ दगाबाज़ काफ़िरो। तुमने भारतवर्ष तो धोखेसे ले लिया और अब इसी तरह अफ़गानिस्तानपर भी क़बज़ा करना चहते

हो। यथासाध्य हम तुम्हें रोकेंगे। इसके उपरान्त रूस वा कोई दूसरा राज्य तुम्हारा सामना करनेके लिये हमारे साथ मिल जावेगा'। मतलब यह, कि उन लोगोंने इसी तरहकी बेसमझीकी, अट पटाङ्ग बातें लिखी थीं।' मैंने सब चिट्ठियां जोरसे पढ़कर सुनाईं और कहा, कि मैं भी एक चिट्ठी तुम्हारे सामने ही लिखता। जिसमें यह न मालूम हो, कि मैंने पहले हीसे सलाह कर ली है। मैंने चिट्ठी लिखनेका एक कागज और कलम लिया। भगवानसे प्रार्थना की, कि मुझे उचित उत्तर लिखनेकी शक्ति दे। इसके उपरान्त सात हजार उजबक और अफगानोंके सामने यह पत्र लिखा,—

'मेरे प्रतिष्ठित मित्र ग्रिफिन साहब रेजिडराट ब्रिटिश गवरमेगट।

'पत्र-लेखक सरदार अबदुररहमान खांका सलाम स्वीकार कीजिये। मुझे आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। आपके मेरे रूससे आनेके प्रश्नके उत्तरमे निवेदन है, कि मैं वायसराय जनरल काफमेन और रूस सरकारकी आज्ञासे अफगानस्थान आया हूं। यहां मैं इसलिये आया हूं कि ऐसी मुसीबत और विपत्तिमें मैं अपनी जातिकी सहायता करूं। वस्सलाम।'

"यह पत्र ऊंची आवाजसे पढ़कर अपनी फौजको सुनाया। पूछा, कि सबको पसन्द है, वा नहीं? सबने जवाब दिया, कि आपके अधीन रहकर अपने देश और धर्मके लिये हम लड़नेको तय्यार हैं, किन्तु बादशाहोंसे पत्रव्यवहार करना नहीं जानते। उन्होंने खुदा और रसूलकी कसम खाकर मुझे उचित उत्तर लिखनेकी आज्ञा दी। इसके उपरान्त 'यारयार'की ध्वनि करके कहने लगे, कि जो उत्तर आपने

लिखा, ठीक है। हम सब उसे स्वीकार करते हैं। इसके उपरान्त यह पत्र सरदार खाको दिया गया। वह चार दिन ठहरकर कन्दनसे काबुलकी ओर रवाना हो गया। मैं भी धीरे धीरे चाराकारकी ओर चला। इसके साथ साथ अङ्गरेजी अफसरोंसे कहला भेजा, कि मैं उनसे फैसला करनेके लिये चाराकार आता हूं। ३० अपरेलको ग्रिफिन साहबका और एक पत्र मिला। इसमें अनुरोध किया गया था, कि काबुल आकर काबुल प्राप्त कीजिये। १६ वीं मईको मैंने जो जवाब दिया उसकी नकल इस प्रकार है,—

'मेरे प्यारे मित्र।

'मुझे इंडिया सरकारसे बड़ी आशा थी और अब भी है। मुझे आपकी मैत्रीकी जितनी आशा थी, उतनी ही प्रमाणित हुई और यही मेरी कुल आशाओंका कारण भी है। आप अफगानोंका स्वभाव अच्छी तरह जानते हैं। एक आदमीकी बातका कोई असर नहीं हो सकता। वह इस बातका विश्वास कर लेना चाहते हैं, कि जो कुछ किया जाता है, वह उनकी भलाईके लिये। वह मुझे काबुल जानेकी आज्ञा देनेसे पहले निम्नलिखित प्रश्नोंका उत्तर चाहते हैं,—(१) मेरे राज्यकी सीमा क्या होगी ? (२) कन्धार भी मेरे राज्यमें रखा जायेगा, वा नहीं ? (३) क्या कोई अङ्गरेज दूत अथवा अङ्गरेजी फौज अफगानिस्थानमें रहेगी ? (४) क्या इंडिया राज्यके किसी वैरी वा रूससे सामना करनेकी आशा मुझसे की जावेगी ? (५) इंडिया राज्य मुझे और मेरे देशको क्या लाभ पहुंचाना चाहता है ? (६) और इसके पहले वह कौनसी सेवा मुझसे चाहता

बादशाही घरानेका नगर था। उसके निकल जानेसे देशकी प्रतिष्ठामे आघात पहुंच सकता था।

"भगवानपर निर्भर रहकर मैं कोहस्थानकी राहसे चाराकार दाखिल हुआ। अङ्गरेजी फौज गाजियोंका आधिक्य देखकर किसी कदर परेशान थी। अङ्गरेजोंसे लड़नेवाले कोहस्तानी और काबुली सरदार प्रति दिवस आकर मुझसे मिलते जाते थे और मेरे अधीन होते जाते थे। जो खय न आ सके, उन्होंने मुझे पत्रद्वारा या किसी दूसरे उपायसे समाचार भेज दिया। मेरे जासूसोंने काबुलसे समाचार दिया, कि अङ्गरेज कर्म्मचारी किसी कदर घबराये हुए थे और उनकी समझमे नही आता था, कि मेरा अभिप्राय क्या था। २०वी जुलाईको अफगान जातियोंके उपस्थित कुल सरदार और सरगरोहोंने मुझे चाराकारमे अपना बादशाह और अमीर बनाया। मुझे देशका शासक मानकर मेरा नाम खतबेमे दाखिल किया। लोग अत्यन्त प्रसन्न थे, कि भगवानने उनका देश एक मुसलमानको सौंप दिया। उधर ग्रिफिन साहबने भी २२वी जुलाईको काबुलमें दरबार किया। उन्होंने अङ्गरेज कर्म्मचारियों और अफगान सरदारोंके सामने मेरे अमीर होनेकी सूचना दी। उस समय उन्होंने जो वक्तृता दी वह यह है;—

'घटनाओंके क्रमसे सरदार अब्दुररहमानके लिये एक ऐसी सूरत पैदा हो गई है, जो गवरमेण्टकी इच्छाके अनुकूल है। इसलिये गवरमेण्ट और बड़े लाट प्रसन्नतापूर्व्वक सूचना देते हैं, कि हमने अमीर दोस्त मुहम्मदके पोते सरदार अब्दुर-

रहमान खाको काबुलका अमीर मान लिया। भारत सरकारको इस बातसे बहुत हर्ष हुआ, कि अफगानिस्थानकी सम्पूर्ण जातियों और सरदारोंने बारकजाइ घरानेके ऐसे सुप्रसिद्ध पुरुषको पसन्द किया, जो सुप्रसिद्ध सिपाही, बुद्धिमान और अनुभवी हैं। वह भारत सरकारसे मैत्री रखते हैं। जबतक भारत सरकारको यह बात मालूम होती रहेगी, कि भारत सरकारके प्रति उनके विचार पूर्ववत हैं, उस समयतक भारत सरकार उनकी सहायता करती रहेगी। सबसे अच्छी बात अफगानस्थान सरकारके लिये यह होगी, कि उसको जिस प्रजाने हमारी सेनाकी सहायता की है उसके साथ अच्छा सुलूक करें।'

"२६वीं जुलाइको शिमलेसे एक तार आया। इसमें काबुलके अङ्गरेज कर्मचारियोंको सूचना दी गई थी, कि कन्धार—मैवन्दमें अङ्गरेजी फौज सरदार अयूबखांद्वारा परास्त हुई। यह सुनकर ग्रिफिन साहब थोड़े से सवार लेकर तुरन्त ही ज़िमे मुझसे मिलने आये। यह एक गांव है, जो काबुलसे कोई सोलह मीलके फासलेपर है। तीन रोज,—यानी ३०वीं जुलाईसे १ली अगस्ततक मुझसे उनसे बातचीत होती रही। जो बात स्थिर हुई,—उसके लिये मैंने एक लिखावट मांगी। जिससे मैं वह लिखावट अपनी प्रजाको दिखा सकूं। ग्रिफिन साहबने निम्नलिखित विषयका एक पत्र मुझे दिया,—

'हिज एक्सिलेन्सी वाइसराय और गवरनर जनरलको यह मालूम कर हर्ष हुआ, कि इटिश सरकारके बुलानेपर आप काबुलकी ओर रवाने हुए। इसलिये आपके मित्रभाव और उस लाभदा

ध्यान करके जो आपकी स्थायी गवरमेण्ट हो जानेसे सरदारों और प्रजाको प्राप्त होंगे इटिश-सरकार आपको अमीर मानती है। बड़े लाटकी ओरसे मुझे यह कहनेकी भी आज्ञा दी गई है, कि इटिश सरकार यह नहीं चाहती, कि आपके शासन सम्बन्धी कामोंमें किसी तरहका हस्तक्षेप करे। वह यह भी नहीं चाहती, कि कोई अङ्गरेज रेजिडण्ट आपके राज्यमें रहे। यह सम्भव है, कि दोनो सरकारोंकी सलाहसे एक मुसलमान एजण्ट काबुलमें रहे। आप यह मालूम करना चाहते हैं, कि अफगानस्थान विदेशी शक्तियोंसे किसी तरहका सम्बन्ध रख सकता है, वा नहीं? इस विषयमें बड़े लाटने मुझे यह कहनेकी आज्ञा दी है, कि इटिश-सरकारकी जानमें अफगानस्थानसे कोई विदेशी शक्ति सम्बन्ध नहीं रख सकती। रूस और ईरानने यह बात स्वीकार कर ली है। इसलिये साफ जाहिर है, कि आप सिवा इटिश सरकारके और किसी बाहरी शक्तिसे नैतिक सम्बन्ध नहीं कर सकते हैं। आप यदि वैदेशिक सम्बन्धमें इटिश सरकारकी रायके मुताबिक काम करेंगे और ऐसी दशामें बिना आपकी ओरसे छेड़छाड़ हुए यदि कोई वैदेशिक शक्ति अफगानस्थानपर आक्रमण करेगी, तो इटिश सरकार आपकी ऐसी सहायता करेगी, जिससे आपके वैरीका आक्रमण रुके और वह अफगानस्थानसे बाहर निकाल दिया जाने।'

"ग्रिफिन साहबने मुझसे कहा, कि काबुल जाइये और अङ्गरेज कर्मचारियोंको विदा कीजिये। साथ ही यह प्रार्थना भी की, कि उनके काबुलसे भारततक निर्विघ्न जाने और

राहमें रसद आदि संग्रह करनेकी सुव्यवस्था भी कर दीजिये। (याकूब खांको दण्ड देनेके लिये) एक फौज सेनापति राबर्टसके अधीन कन्धार जानेवाली थी दूसरी फौज सर डानल्ड स्टुआर्टके मातहत काबुलसे पेशावर लौट जानेवाली थी। मैंने यथाशक्ति सब प्रबन्ध करनेका वादा किया। अङ्गरेजी फौजको अङ्गरेजी सीमातक निर्विघ्न पहुंचा देनेके लिये बहुत तमस्सी दी। मैंने उनसे कहा, कि मेरी रायमें सेनापति राबर्टसको यथासम्भव शीघ्र कन्धारकी ओर जाना चाहिये। उनके जानेके उपरान्त मैं सर डानल्ड स्टुआर्टसे विदा होनेके लिये जाऊंगा। ८ वीं अगस्तको लार्ड राबर्टस थोड़ीसी फौजके साथ कन्धारकी ओर रवाने हुए। मैंने सरदार शमसुद्दीन खांके लड़के मुहम्मद अजीज खांको कुछ अफसरोंके साथ सेनापति राबर्टसके साथ कन्धारतक भेज दिया। जिसमें लोग राहमें किसी तरहकी बाधा न दें। * * *

"१० वीं अगस्तको सर डानल्ड स्टुआर्ट और रफिन साहब शेरपुरसे पेशावरकी ओर रवाने हुए। उनके विदा होनेसे कुछ मिनिट पहले मैं उनसे मिलने गया। कोई १५ मिनिट तक मुझसे और उनसे मित्रभावसे बातें हुईं। बातों बातोंमें यह भी स्थिर हुआ, कि शेरपुरमें रखी हुई अफगान तोप खानेकी तीस तोपें मुझे दे दी जावें। दूसरे यह, कि कोई उन्नीस लाख रुपये जो अङ्गरेजोंने अपनी स्थितिमें देशसे वसूल किये थे और किले बनानेमें खर्च हुए थे, वह मुझे वापस किये जावें और जो नये किले अङ्गरेजोंने काबुलमें बनाये थे, वह बरबाद न किये जावें"

जिस समय अङ्गरेजी फौज काबुल खाली करके भारतवर्षकी ओर चली उस समय अफगानोंके हर्षका वारापार नहीं रहा। वह राहकी गिर्देके पर्व्वतोंपर एकत्र होकर नाना प्रकारका उल्लास प्रकट करते थे। एग्न साहब "कन्धार कैम्पेन"में लिखते हैं,—"पडावकी गिर्देके टीले ऐसे मनुष्योंद्वारा अधिकृत हो चुके थे। वह एक तरहका ढोल बजाते और लड़ाईका नाच नाचते थे। जिस समय उन लोगोंने हमें कूच करते देखा, उस समय अमानुषिक उत्तेजना दिखाने लगे। ऐसे मनुष्योंके विशृङ्खलित दल पहाड़ोंकी चोटियोंपर एकत्र होकर भीतानोंकाला चीत्कार करने लगे। इनके चीत्कारके बीचमें हमें बराबर यह आवाज सुनाई देती थी,—'ओ—हो, अहा—हा।' बहुसंख्यक अफगान धीरे धीरे यह सब कहते थे। इसकी प्रतिध्वनि होती थी।" इतना ही नहीं,—बरन कुछ दुष्ट और बदमाश अफगानोंने अङ्गरेजी फौजको चिढ़ाकर झगड़ा उठानेतककी चेष्टा की थी। किन्तु धीर गम्भीर हटिग्रवाहिनीने उच्छृङ्खल अफगानोंकी छेड़पर ध्यान नहीं दिया। वह निर्विघ्न भारत लौट आई और उनके आनेके साथ साथ द्वितीय अफगान युद्धकी समाप्ति हो गई।

कन्धार-युद्ध।

हम तुजुक अब्दुर्रहमानीके उद्धृत अंशमें यह प्रकट कर चुके हैं, कि अयूबखांने कन्धारकी अङ्गरेजी फौजको शिकस्त दी थी। लार्ड राबर्टस अयूबखांसे युद्ध करनेके लिये काबुलसे कन्धारको ओर रवाने हुए। लार्ड राबर्टस और अयूबखांकी लड़ाईका हाल लिखनेसे पहले हम अयूबखां और अङ्गरेजी फौजकी लड़ाईका हाल लिखना चाहते हैं।

कन्धारकी अङ्गरेजी फौजने अयूबखांके हिरातसे कन्धारकी ओर चलनेकी खबर पाते ही सेनापति बरोके अधीन एक जबरदस्त फौज अयूबखांकी ओर भेजी। सेनापति बरोने कन्धारसे थोड़े फासलेपर मैवन्द स्थानमें डेरा डाल दिया और अयूबखांके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा। सन् १८८० ई०की २७ वीं जुलाईको मैवन्दमें अङ्गरेजों और अफगानोंकी फौजमें मुकाबला हुआ। अङ्गरेजी फौजकी अपेक्षा अयूबकी फौज अधिक थी और उसका अधिकांश शिक्षित था। अङ्गरेजी फौज दिनभर खूब जमकर लड़ी। तीसरे पहरतक उसका बहुत बड़ा भाग हताहत होनेकी वजहसे निकम्मा हो गया। जितने सिपाही बचे, उनके पैर उखड़ने लगे। सन्ध्या होते होते अङ्गरेजी फौज परास्त हुई। कथार वेम्पेनमें लिखा है,—"अपनी फौजको मामला हद बताना अत्युक्ति होगी। किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि ऐसी पूरी और कुचल डालनेवाली शिकस्त

कभी नहीं मिली थी। अयूब खाने आदिसे लेकर अन्ततक हमारी चालें काटीं। हम लोगोंको जो स्थान चुनना चाहिये था, वह उसने चुन लिया। इतना ही नहीं,—वरञ्च जिस जगह हम लोग घातमें बैठे थे, वहांसे हमें लालच देकर ऐसी जगह ले आया, जिस जगह उसके रिसालेको आक्रमण करनेकी सुविधा थी, जहां हमारी पैदल फौजकी अपेक्षा उसकी पैदल फौज अच्छी तरह काम कर सकती थी। यह निन्दनीय सत्य है, किन्तु इसको पूर्णरूपसे छिपा रखना असम्भव है। तीसरे पहरके साढ़े तीन बजते बजते हमारी तीन रेजिमेण्टों और दो रिसालेके बाकी बचे हुए सिपाही मिलजुलकर भागे। * * * अङ्गरेज और नेटिव,—अफसर और सिपाही,—वृद्ध और युवक, वीर और कायर एक साथ मिलकर एक राहपर भागने लगे। सेनापति और उनका श्टाफ दुःखके साथ भागना देख रहे थे। उन्होंने भागनेवालोंको ठहराने और आगे बढ़ानेकी चेष्टा की, किन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। वैरी हम लोगोंमें इतने मिल गये थे, कि सौभाग्यवश उनके तोपखानोंने गोले उतारना मौकूफ कर दिया था। अब सिर्फ छुरे, सङ्गीनों, तलवारों और भालोंसे लड़ाई हो रही थी। सेनापति, बरोने मेजर ओलिवरकी सहायतासे बड़ी मुश्किलके साथ अग्रगामी और पश्चाद्गामी सैन्य बनाई। कुछ ऊंटों और खच्चरोंको बीचमें रख लिया। एक तो इस लिये, कि जिसमें एक तरहकी फौज बन जावे, दूसरे इस लिये, कि कोई पीछे न रह जाय और फौजकी गति न रुके।" उस समय राहकी धूलि आदमियोंके रक्तके सबबसे कीचड़ बन गई थी। अङ्गरेजी फौजको गली

बारूद और तोपें वैरियोंके हाथ पड़ गई थी। सिपाही इतने थक गये थे, कि राह चल नहीं सकते थे। कन्धार वैर्स्थनमें लिखा है,—"हम लोग बड़े दुःखके साथ चुपचाप चले जाते थे। मरते हुए अभागे राहमें गिरने लगे। प्यासकी वजहसे उनका कष्ट और बढ़ गया था। सुदृढ़ मनुष्य और लड़के दोनो ही मारे कष्टके विह्वल हो गये थे। दुर्निवार्य्य वैरियोंसे सामना न करके वह राहमें गिरने लगे। हम यदि उस जगहका हाल जानते, तो सीधी राह चलते और कुछ ही मीलोंके उपरान्त अरगन्दाब नदी पार करके प्यास और शायद वैरियोंसे भी रक्षा पा जाते। किन्तु भाग्यमें और ही बदा था। हम लोग नदीकी बराबर बराबर चले। इस अवसरमें हम रक्षा और रात्रिके अन्धकारकी प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु जब रात्रि आई तो कष्टकी विभीषिका और बढ़ी। अन्धकारमें जैसे जैसे हम आगे बढ़ा फौजका कायदा बिगड़ता गया।" अङ्गरेजी फौज बड़ी मुशकिलके साथ मैवन्दसे कन्धार पहुंची। इसके उपरान्त ही अयूबखांकी फौज भी पहुंची। अयूबने कन्धार घेर लिया। मैवन्दकी लड़ाईमें २ हजार चार सौ ७६, अङ्गरेजी सिपाही थे। इनमें ६ सौ ३४ सिपाही मारे गये और १ सौ ७५ सिपाही घायल तथा गुम हुए। ४ सौ ५५ फौजी नौकर मारे गये तथा गुम हो गये। अस्त्र शस्त्रका बहुत बड़ा भण्डार लुट गया। कोई १ हजार बन्दूकें और कड़ाबीनें और कोई ७ सौ तलवारें और सङ्गीनें लुट गईं। २ सौ १ घोड़े मारे गये और १ हजार ६ सौ ७६ ऊंट, ३ सौ ५५ टट्टू, ३ सौ १५ खच्चर और ९८ बैल गुम हो गये।

कन्धार, काबुलसे कोई ३ सौ १३ मीलके फासलेपर है॥ सेनापति राबर्टस ८ वीं अगस्तको काबुलसे चले और ३१ वीं अगस्तमें सवेरे कन्धार दाखिल हो गये। १ ली सितम्बरको सेनापति राबर्टसने ३ हजार ८ सौ गोरे, ग्यारह हजार हिन्दुस्थानी सिपाहियों और ३६ तोपोंके साथ पीरपैमल गांवके समीप बाबा अलीकोतल पर्व्वतपर अयूबखांकी फौजपर आक्रमण किया। तीसरे पहरतक, अङ्गरेजी फौजने अयूबखांकी फौजको मार काटकर भगा दिया। अयूब खां अपना पड़ाव छोड़कर अपनी बची बचाई फौजके साथ हिरातकी ओर भागा। इसके उपरान्त कोई एक सालतक अङ्गरेजोंने कन्धारपर अपना कबजा रखा। अपनी ओरसे शेरअली खांको वहांका हाकिम बनाया। अन्तमें सन् १८८१ ई०की २१ वीं अप्रेलको अङ्गरेजोंने शेरअली खांको पेनशन नियत करके, उसे भारतवर्ष भेज दिया और कन्धार अमीर अब्दुररहमानके हवाले कर दिया। अमीर अपने तुज़ुकमें लिखते हैं,— "जहांतक मैं समझ सकता हूं, मेरा खयाल है, कि शेरअलीको कन्धारसे हटाये जानेके कारण यह थे,—(१) अयूबखाने प्रयोजनीय तय्यारियां हिरातमें की थीं। उसने फिर कन्धारपर चढ़ जानेके लिये बहुत बड़ी फौज एकत्र की थी। शेरअली खांमें उसका सामना करनेकी शक्ति न थी। कारण, वह इससे पहले एकबार अयूबखांके सामने निर्ब्बल प्रमाणित हो चुका था। (२) कन्धारके लोग और दूसरे मुसलमान उसके विरुद्ध थे। वह बहुत बदनाम था और सदैव बगावत और मारे जानेका भय उसे रहता था। (३) मैंने कन्धारके

अपने साम्राज्यसे पृथक किये जानेका कोई यत्न नहीं किया था और, न मुझे उसका पृथक किया जाना स्वीकृत था,— वरन् मैं उसे अपने पूर्वपुरुषोंका निवासस्थान समझता और अपने देशके प्राचीन शासकोंकी राजधानी समझता था। इस समय अङ्गरेजोंने जो मुझे उसपर कबजा करनेके लिये कहा, तो मैंने खूब विचारकर उनकी बात मान ली।

वास्तवमें कन्धार दुर्रानी बादशाहोंके जमानेमें अफगानिस्तान-की राजधानी रह चुका था। दुर्रानी बादशाह वहीं कबरस्थ किये गये थे। यह नगर अरगन्दाब और तुरनाक नदियोंके बीचमें बसा हुआ है। किलाते गिलजईसे दक्षिण पश्चिम कोई ८८ मीलके फासलेपर है और क्वेटेसे उत्तर पश्चिम कोई १ सौ ४४ मीलके अन्तरपर। शहरकी चारों ओर मट्टीकी शहरपनाह है, जिसमें स्थान स्थानपर गोल बुर्ज बने हुए हैं। शहरपनाहके बाहर चौड़ी और गहरी खाई है। नगरमें कोई बीस हजार मकान हैं। अधिकांश मकान ईंटोंसे बने हैं। ये ईंटें ऐसी हैं, जिनपर चूनाका गाढ़ा सफेद मसाला लगा हुआ है। यह मसाला चमकता है और इससे मरमर पत्थर मालूम होता है। अहमदशाहकी कब्र बहुत खूबसूरत है। इसका गुम्बद सोनेका है। कन्धार प्रायः हिरात और गोमल तथा बोलान दर्रेकी राहसे हिन्दुस्तानके साथ व्यापार किया करता है।

अमीर अब्दुर्रहमानका शासनकाल।

अमीर अब्दुर्रहमान खां बड़े ही अनुभवी और परिश्रमी शासक थे। उन्होंने अपने परिश्रमके बलसे अफगानिस्थानको सुदृढ़ और शक्तिशाली देश बनाया। वह स्वयं कहा करते थे,—"यह अजीब बात है। मैं जितनी ज्यादा मिहनत करता हूं, उतना ही थक जानेकी जगह और ज्यादा काम करनेको जी चाहता है। सच है, कि जिस पदार्थसे भूख पूरी होती है, वही पदार्थ उसकी उन्नतिका कारण भी होता है।" अमीरके खाने पीनेका कोई समय निर्दिष्ट नहीं था। भोजन घण्टोंतक उनके सामने रखा रहता और वह अपने काममें इतने डूबे रहते, कि भोजनकी ओर तनिक भी ध्यान न देते। प्रायः रात रातभर वह काम करते रहते। उन्होंने स्वयं लिखा है,—"रात दिन चौबीस घण्टे जो मैं काम करता हूं, उसके लिये कोई समय निर्दिष्ट नहीं है और कोई विशेष प्रबन्ध भी नहीं है। प्रातःकालसे सन्ध्यापर्यन्त और सन्ध्यासे प्रातःकालपर्यन्त एक साधारण मजदूरकी तरह परिश्रम किया करता हूं। जब भूख मालूम होती है, तो भोजन कर लेता हूं। कभी कभी तो यह भी भूल जाता हूं, कि आज मैंने भोजन किया वा नहीं। इसी तरह जब मैं थक जाता हूं और नींद आ जाती है, तो उसी चारपाईपर सो जाता हूं, जिसपर बैठकर काम करता हूं। मुझे किसी विशेष कोठरी वा सोनेकी कोठरीका प्रयोजन नहीं होता। न गुप्तगृह अथवा किसी

दरबारी कमरेका प्रयोजन है। मेरे महलोंमें इस तरहके अनेक कमरे हैं, पर मुझे फुरसत कहा, कि एक कमरेसे दूसरेमें भी जा सकू। * * * साधारणत मैं सवेरे पाच वा छ. बजे सोता हू और तीसरे पहर दो बजे उठता हूं। किन्तु इतनी देरतक लगातार नहीं सो सकता। प्राय: प्रत्येक घण्टेपर मेरी नींद खुल जाती है। * * * तीसरे पहर कोई दो तीन बजे उठता हू और पहला काम जो होता है, वह यह है, कि हकीम और डाक्टर आकर मेरी दवाकी जरूरत देखते हैं।" इसके उपरान्त अमीर कोई ६ बजे सवेरेतक काममे लगे रहा करते थे।

अमीर अब्दुररहमानने सिंहासनारूढ होनेके उपरान्त ही देशके बागियों और स्वतन्त्र मनुष्योंको दबाया और देशमें शान्ति स्थापित की। अयूब खांको परास्त किया और हिरातको अफगानस्थानमें मिलाया। सन् १८८५ ई०की ३०वीं मार्चको रूसियोंने पञ्चदेहपर कबजा कर लिया। इसपर अमीरने अङ्गरेजोंसे कह सुनकर अफगानस्थानकी सीमा निर्द्धारित कराई। इसके उपरान्त अङ्गरेजों और अमीरने मिलकर रूससे कहा, कि भविष्यमें यदि तुम अफगानस्थानके किसी अंशपर अधिकार करोगे, तो तुमसे युद्ध आरम्भ किया जावेगा। इसके उपरान्त आजतक रूसने अफगानस्थानपर किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं किया। सन् १८८६ और सन् १८८७ ई०में अफगानस्थानमें बलवेकी आग प्रज्वलित हुई। अमीरने अपने बुद्धिबलसे इसे भी शान्त की। सन् १८८८ ई०मे इसहाक खाने बगावत की। अमीरने उसको भी परास्त किया। हजारा देशकी

हजारा जातियोंसे चार बडी बडी लडाइयां लडकर उन्हें भी प्राप्त किया। इसके उपरान्त सन् १८८६ ई०मे काफ-रस्थान विजय किया। देशमे शान्ति स्थापित करके विलायती कारीगरोंकी सहायतासे देशमे तरह तरहके कल कारखाने खोले। उन्होंने अपने जमानेमे टकसाल खोली, कारतूस, मारटिनीहेनरी बन्दूक, कलदार तोपों, तमञ्चे, इञ्जिन, बायलर, पत्थरतेके कारखाने खोले। इसके अतिरिक्त व्याव कारी और नाना प्रकारके चमडेके काम, साबुन और बत्तियां बनानेका काम और वरदी बनानेका काम जारी किया। छापा-खाना खोला, साहित्यकी भी उन्नति की। इनके अतिरिक्त तरह तरहके छोटे बडे कारखाने खोले।

अमीरने अपने जङ्गी और मुल्की विभागका भी बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। अफगानस्थानकी फौज इतने भागोंमे विभक्त की,—(१) तोपखाना, (२) रिसाला, (३) पैदल, (४) पुलिस, (५) मिलिशिया और (६) वालण्टेर। तोपखानेमे मैचलोडिङ्ग, निवरडेफिल्ट, कृचेवय और क्रप तोपें हैं। घुडचढे तोपखानोंमें मेकसिम, गार्डिनर और गेटलिङ्ग तोपें हैं। सिपाही लीमेटफर्ड, मारटिनी हेनरी, स्नाइडर और लसर बन्दूकोंसे सुसज्जित हैं। सवारोंके पास आष्ट्रेलियाकी कडाबीनोंकीसी कडाबीने हैं। यह सब शस्त्र काबुलमे तय्यार किये जाते है। बन्दूकोंके कारतूस और तरह तरहके फटने-वाले गोले भी काबुलमे प्रस्तुत किये जाते हैं। अमीरने तीन लाख सिपाहियोंके काम लायक अस्त्र शस्त्र तय्यार कर रखे थे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अफगानस्थानवासीको बन्दूकें आदि दे

रखी थी। अफगान फौजको रसदके लिये उतना तरद्दुद करना नहीं पड़ता। कारण, प्रत्येक अफगान सिपाहीको अस्त्र शस्त्रके साथ साथ तीस रोटियां मिलती हैं। एक रोटी अफगान सिपाहीकी एक दिनकी खुराक है। इस प्रकार वह महीनेभरकी रसद अपनी कमरसे बांधकर चलता है। अमीर इस बातकी चेष्टामें थे, कि उनके पास दस लाख सिपाहियोंकी फौज एकत्र हो जावे। नहीं कह सकते, कि वह अपनी यह चेष्टा कहांतक पूर्ण कर सके।

अमीरने मुल्की विभागकी इतनी शाखायें स्थापित कीं,— खजाना, अदालत, इञ्जीनियरी, डाक्टरी, खानिसम्बन्धी और डाकखाना। इनकी कितनी ही प्रशाखायें भी स्थापित कीं। असलमें अमीरने अपने श्रम और प्रबन्धसे अफगानिस्थानको बिलकुल ही बदल दिया। वह स्वयं लिखते हैं,—"वर्त्तमान अफगानिस्थान वह अफगानस्थान नहीं है, जो पहले था। गत भविष्य कालकी बातें स्वप्नकी बातें मालूम होती हैं।"

अमीर अब्दुररहमानकी आन्तरिक इच्छा थी, कि उनका एक दूत इङ्गलण्डमें रहे। अमीरके जमानेमें अङ्गरेज अफगान युद्ध फिर होनेकी आशङ्का हुई थी। अमीरको विश्वास था, कि हमारा दूत इङ्गलण्डमें रहनेपर अङ्गरेज अफगान युद्धकी आशङ्का न रहेगी। इसी खयालसे उन्होंने अपने पुत्र नसरुल्ला खांको विलायत भेजा था। किन्तु उनकी यह कामना पूरी न हुई।

सन १८८५ ई०की ३१वीं अपरेलको रावलपिण्डीके दरबारमें अमीर अब्दुररहमान उस समयके बड़े लाट मारक्विस आफ

डफरिन बहादुर तथा वर्तमान सम्राटके भाई डिउक आफ कनाटसे मिले थे। इस दरबारमें अमीर और बड़े लाट दोनो शासकोंने आपसकी मैत्री बनाये रखनेकी प्रतिज्ञा की थी। इस दरबारके विषयमें अमीर अपनी पुस्तकमें इस प्रकार लिखते हैं,—"मुझे लेडी डफरिनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। ऐसी विदुषी बुद्धिमती स्त्री मैंने कभी नहीं देखी थी। डिउक और डचेज आफ कनाटसे मिलकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मैंने देखा, कि भारतीय प्रजा उनकी बहुत भक्ति करती थी। डिउक और डचेजने प्रजाका हृदय मोह लिया है। डिउक बड़े ही दयालु, स्वच्छहृदय, सत्यवादी और सुस्तैद सिपाही है। इसलिये यह जरूरी है, कि फौज ऐसे अफसरकी सेवा हृदयसे करे। अपनी इस मुलाकातमें मैंने एक दुःखद दृश्य देखा। इसे देखकर मेरे हृदयमें असीम दुःख हुआ। यह दृश्य पक्का बने नव्वाबों और राजोंकी दुरवस्था था। यह सबके सब स्त्रियोंके माल स्त्रियोंकासा परिच्छद धारण किये थे। हीरे जड़ी हुई रस्सियाँ इनके बालोंमें खुंसी हुई थीं। यह कानोंमें बाले, हाथोंमें कड़े और गलेमें हार तथा माले पहने थे। इनके अतिरिक्त स्त्रियोंके पहननेके अन्यान्य आभूषण भी पहने थे। इनके इजारबन्दमें भी जवाहरात टके थे। इनमें छोटे छोटे घुंघरू बंधे थे, जो पैरोंतक लटकते थे। यह लोग अज्ञता इस्तो और शरीर पालनेके काममें डूबे हुए थे। उन्हें यह नहीं मालूम, कि संसारमें क्या हो रहा है। वह पैदल भी नहीं चल सकते थे। कारण, इसका उन्हें अभ्यास नहीं और इससे वह अपनी अप्रतिष्ठा समझते हैं। उनका समय अफीम

पने और अफ़गानोंसे अतिवाहित होता है। मुझे इन जानें ढेके बेचारोंपर बड़ी दया आई। इनकी प्रजापर भी दया आई। कारण, ऐसे लोगोंसे न्याय तथा उत्तम शासनकी क्या प्रत्याशा की जा सकती है।" किन्तु भगवानकी दयासे अफ़ग़ान नरेशोंकी दशा इस समय वैसी नहीं है।

अमीर अब्दुर्रहमानका जीवनचरित बहुत लम्बा चौड़ा है। यहां स्थानाभाववश हम उसे प्रकाश नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त उनकी जीवनी हिन्दी भाषामें मौजूद है। उसके पढ़नेसे अमीरके शासनकालमें अफ़ग़ानस्थानमें जो विशेष परिवर्त्तन हुए, उनका सुविस्तृत हाल मालूम होगा। उन्हींका आभास हम ऊपर दे चुके हैं। सन् १९०१ ई०की ३ री अक्टोबरको आधीरातके उपरान्त काबुलमें नामवर अमीर अब्दुर्रहमानने देहत्याग किया।

अमीर हबीबुल्लह।

अमीरकी मृत्युके उपरान्त उनके ज्येष्ठपुत्र हबीबुल्लह काबुलके सिंहासनपर बैठे। अमीर हबीबुल्लहने इस विषयमें जो कुछ कहा है, वह नेरङ्गे अफ़ग़ानमें इस प्रकार प्रकाशित किया गया है,—"मेरे पिताकी मृत्युका दुःखमय समाचार देशभरमें फैल गया। उसे सुनते ही कुल फ़ौजी और मुल्की अफ़सर मातमपुरसीके लिये मेरे पास आये। उनके इस [illegible]

हाल था, मानो उनका प्रिय पिता उनसे सदैवके निमित्त पृथक हो गया था। कन्धार और तुरकस्थान इत्यादिके कुल अफसर इस तुच्छ मनुष्यके पास आये। सहस्र सहस्र मनुष्य फातिहा पढ़नेमें शरीक हुए। सबने विशुद्धान्त करणसे फातिहा पढ़ी। फिर उन लोगोंने मेरी सेवाकी कसमें खाईं। यह कहा, कि हम हुजूर हीको अपना बादशाह जानते हैं। हमें इस दुरवस्थामें न छोड़िये। हमने सत्य सत्य ही आपको अपना स्वामी माना है। हम प्रार्थना करते हैं, कि आप हमपर शासन कीजिये। हमारी जातिके शिरपर हाथ रखिये। जिस तरह आपके स्वर्गवासी पिताने अहर्निशि श्रम करके अपना कर्त्तव्य पालन किया, उसी प्रकार आप भी करें।

"फातिहाके उपरान्त मैंने अत्यन्त दयाके साथ उनकी कसमें स्वीकार कीं। उसी दिन मेरे सब छोटे भाई आये। उन्होंने बारी बारीसे मेरी सेवा करना स्वीकार किया।"

सन् १६०१ की छठी अक्टोबरको काबुलमें एक दरबार हुआ। दरबारमें राज्यके यावत् उच्चकर्म्मचारी तथा सरदार गण एकत्र थे। सबने मिलकर शपथपूर्व्वक हबीबुल्लह खांको अपना अमीर स्वीकार किया। ६ वीं अक्टोबरको अमीर हबीबुल्लहने विधिपूर्व्वक शासन करनेकी शपथ की। इसके उपरान्त सम्पूर्ण अफगानस्थानमें यह विज्ञापन प्रकाश किया गया,—

"विज्ञापन।

"मेरे पिताका स्वर्गवास हो गया। मुझे, यानी हबीबुल्लह को कुल सरदारोंने इच्छापूर्व्वक अपना बादशाह बनाया है।

जो कमरबन्द कुरान और तलवार मजारेशरीफके तबर्कने मेरे पिता को दी थी, वही जातिके लोगोंने मुझे दी है। मैं लोगोंको सूचना देता हूं, कि मैंने राजकर घटा दिया है। देशवासियोंको विश्वास रखना चाहिये, कि मैं सदैव उनके हित और उन्नतिके लिये चेष्टा करता रहूंगा।"

अमीर हबीबुल्लह खां ही इस समय काबुलके अमीर हैं। आप अभी नौजवान् है। नौजवान होनेपर भी बुद्धिमान, दूरदर्शी और अत्यन्त स्वतन्त्र स्वभावके हैं। अमीर अब दुररहमानने अपने जीवनकाल हीमें हबीबुल्लह खांको शासन करनेकी शक्ति प्रदान की थी। एकबार हबीबुल्लह खांने अपने पिताकी अनुपस्थितिमें अपनी जानतककी परवा न करके काबुलका उठना हुआ बलवा दबाया था। उन्होंने अफगानस्थानको और भी सुदृढ़ बनाया है। पिता अमीर अब दुररहमानने अफगानिस्थानकी जितनी ही जातियोंको देशसे बाहर निकाल दिया था, अब पुत्र अमीर हबीबुल्लह उन्हें बुला रहे हैं। पिताके समय देशमें शान्ति और ऐक्यका बीज बोया गया था, पुत्रके समय उसी बीजसे वृक्ष प्रकट हुआ और अब वह क्रमशः बढ़ता और फलता फूलता जाता है। वर्तमान अमीर हबीबुल्लह खांके सात स्त्रियां और बाइ लड़के लड़कियां हैं। सबसे बड़े बेटेका नाम इनायतुल्लह खां है। यही अफगानस्थानके युवराज समझे जाते हैं।

स्वर्गीय अमीर अबदुररहमानके जमानेमें अङ्गरेजों और अफगानस्थानमें जैसी मैत्री थी, वैसी ही अब भी है। वर्तमान अमीरके जमानेमें सिर्फ एक बात नई हुई है। अङ्गरेज

महाराज म्रत अमीरको १८ लाख रुपये सालाना देते हैं अमीर हबीबुल्लहने सिंहासनारूढ़ होनेके उपरान्तसे रुपये नहीं लिये हैं। सन् १६०५ ई०के २५ वीं जूनवाले पा निजरने कहा था,—"सन् १६०१ ई०के अक्टोबर महीनेसे अ रने अपने १८ लाख रुपये सालानाकी रकम नहीं वसूल है। इस समय अमीर सरकारी खजानेसे ६० वा ७५ ला रुपये वसूल कर सकते हैं।" अङ्गरेजोंने अमीरको रु लेनेके लिये वारम्वार कहा, किन्तु अमीरने आजतक रु नहो लिये हैं।

डेन साहबको मिशन।

सन् १६०४ ई०के अन्तमें भारतके वड़े लाट कर्जनने डे साहबकी अधीनतामें एक मिशन काबुल भेजी थी। य मिशन काबुलमें महीनोंतक पड़ी रही। उस समय उस काममें वारेमें तरह तरहकी अफवाहें उड़ती रहीं। अन्त मिशन काबुलसे शिमले वापस आई। सन् १६०५ ई०की २५ मईको भारत सरकारने मिशनकी कारवाई प्रकाश की मिशनने और कुछ न किया, वह काबुल जाकर अमीर अबदुर रहमानके जमानेकी सन्धि नई कर आई। साथ सा अमीरको वादशाहकी उपाधि दे आई। मिशनने जि सन्धिद्वारा प्राचीन सन्धि नई की, उसकी नकल इस प्रका

गानस्थान और उसके अधीन राज्यके स्वतन्त्र बादशाह श्रीमान सिराजुलमिल्लतुद्दीन अमीर हबीबुल्लहखा एक ओर हैं और प्रशंसनीय हटिश सरकारके प्रतिनिधि तथा शक्तिशालिनी भारत सरकारके देशी सिक्रत्तर माननीय मिष्टर लुई डेन सी, एस, आई दूसरी ओर। बादशाह सलामत स्वीकार करते हैं, कि मेरे परलोकगत श्रीमान पिताने, जिनकी आत्मापर भगवानने दया की और भगवान जिनकी कब्रमें प्रकाश प्रदान करें, जो सन्धि प्रशंसनीय हटिश गवरमेण्टसे की थी, उसकी असलियत और उसके सहायता सम्बन्धी विषयोंके अनुसार मैंने काम किया, मैं करता हूं और करूंगा। मैं अपने किसी कार्यसे अथवा किसी वादेसे सन्धिनियमोंको भङ्ग न करूंगा। माननीय लुई विलियम डेन साहब स्वीकार करते हैं, कि प्रशंसनीय हटिश सरकारने वर्त्तमान बादशाह सिराजुलमिल्लतुद्दीनके म्टत प्रतिष्ठित पिता श्रीमान जियाउलमिल्लतुद्दीनसे, भगवान जिनकी आत्माको शान्ति दी और जिनकी कब्रमें रोशनी होवे, स्वदेश और विदेशके सम्बन्धमें वा सहायताके सम्बन्धमें जो सन्धि की थी, मैं उसकी पुष्टि करता हूं और लिखता हूं, कि हटिश सरकार उस सन्धिके विरुद्ध कभी और किसी तरहसे कोई काम न करेगी।

"यह सन्धि मङ्गलवार १३२३ हिजरीकी १४ वीं मुहर्रमुल हरामको वा सन १९०५ ई०के मार्च महीनेमें लिखी और दस्तखत की गई।"

जिस समय अङ्गरेजोंकी मिशन काबुलमें थी, उसी समय अमीरके २रे लड़के इनायतुल्लह खां भारत आये थे।

अन्यान्य अमीरोंकी तरह वर्त्तमान अमीर हबीबुल्लाहने भी काबुल हीको अपनी राजधानी बनाया है। काबुल जेलाला-बादसे १०३ मील, गजनीसे ८८ और कन्धारसे ३ सौ १८ मीलके फासलेपर है। काबुल और लोगार नदीके सङ्गमपर बहुत बड़े मैदानके पश्चिमीय किनारेपर बसा हुआ है। नदियोंपर दो पुल पड़े हुए हैं। यह नगर समुद्रबचासे ६ हजार ३ सौ ८६ फुटकी ऊंचाईपर बसा हुआ है। चारों ओर पर्व्वतमाला है। पर्व्वतमाला और शहरपनाहके बीच एक तङ्ग जगह बची हुई है। पहाडियोंपर भी बुर्जदार दीवारें बनाई गई थीं। किन्तु मरम्मत न होनेकी वजहसे टूट गई हैं।

काबुलनगर पूर्व्वसे पश्चिम कोई एक मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण कोई आध मील चौड़ा है। इसकी गिर्द मट्टीकी शहरपनाह है, किन्तु खन्दक नहीं। नगरको पूर्व ओर एक खन्दक है। खन्दककी दूसरी ओर एक पर्व्वतपर बालाहिसार दुर्ग अवस्थित है। पर्व्वतके ढालुवे भागपर शाही महल बन हैं और एक बाजार भी है। नगरमें कोई एक लाख मनुष्य बसते हैं। नगरके नीचे ही काबुल नदी बहती है। वर्त्तमान अमीरके जमानेमें यह नगर बहुत रौनकपर है। वर्त्तमान अमीरके शासनकालमें अन्यान्य नगरोंकी उन्नति होनेके साथ साथ गजनी नगरकी भी खासी उन्नति हुई है। लोगार घाटी पार करनेपर एक खुले मैदानमें यह प्राचीन नगर मिलता है। इसके पार्श्वमें एक सुदृढ़ दुर्ग है और नगरकी गिर्द शहरपनाह तथा खन्दक है।

अफगानस्थान, रूस और अङ्गरेज।

अमीर अब्दुर्रहमाने लिखा है,— रूसके लोग हिन्दु स्थानको कुवेरका भण्डार समझते हैं। मैंने प्रायः रूसी सिपाहियोंको इस आशासे उछलते कूदते देखा है, कि उन्हें एक दिन इस धन धान्यसे परिपूर्ण देशके लूटनेका समय मिलेगा। वह इस दिनकी बाट जोह रहे हैं।" रूसी केवल बाट नहीं जोह रहे हैं, वरच भारतवर्षपर चढ़ाई करनेकी तय्यारीमें लगे हुए हैं। उन्होंने अफगानकी सीमापर्य्यन्त अपनी रेल बना ली, वह अब नदीपर पुल बांधनेकी चिन्तामें हैं और उन्होंने अपनी मध्य एशियाकी फौज बढ़ाना आरम्भ की है। रूस भारताक्रमण करनेमें कृतकार्य्य हो, वा चाहे अकृतकाय, किन्तु लक्षणसे जान पड़ता है, कि वह पूरी तरह तय्यार होनेके उपरान्त ही भारतवर्षपर आक्रमण कर सकता है।

इधर अङ्गरेज महाराज भी रूससे सामना करनेके लिये पूर्णरूपसे तय्यार हैं और तय्यार होते जाते हैं। उनकी सरहद्दी रेलें बन चुकी हैं। ऐसी रेलका एक छोर कन्धारकी पड़ोसतक पहुंच चुका है। दूसरा छोर खैबर दररेके पास पहुंच गया है और खबर है, कि शीघ्र ही खैबर दररेतक पहुंच जावेगा। भारतवर्षमें तोप बन्दूकके नये कारखाने खुल रहे हैं। भारतकी फौज भी बढ़ाइ जानेकी खबर है। ब्रिटिश सरकारने वर्तमान बड़े लाट कर्ज़न बहादुरके इस्तेफेकी उतनी परवा न करके वर्त्तमान जङ्गी लाट किचनर

अन्यान्य अमीरोंकी तरह वर्त्तमान अमीर हबीबुल्लहने भी काबुल हीको अपनी राजधानी बनाया है। काबुल जेलाला बादसे १०३ मील, गजनीसे ८८ और कन्धारसे ३ सौ १८ मीलके फासलेपर है। काबुल और लोगार नदीके सङ्गमपर बहुत बड़े मैदानके पश्चिमीय किनारेपर बसा हुआ है। नदियोंपर दो पुल पड़े हुए हैं। यह नगर समुद्रतलसे ६ हजार ३ सौ ८६ फुटकी ऊंचाईपर बसा हुआ है। चारो ओर पर्वतमाला है। पर्वतमाला और शहरपनाहके बीच एक तङ्ग जगह बची हुई है। पहाड़ियोंपर भी बुर्जदार दीवारें बनाई गई थीं। किन्तु मरम्मत न होनेकी वजहसे टूट गई हैं।

काबुलनगर पूर्वसे पश्चिम कोई एक मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण कोई आध मील चौड़ा है। इसकी गिर्द भट्टीकी शहरपनाह है, किन्तु खन्दक नहीं। नगरकी पूर्व ओर एक खन्दक है। खन्दककी दूसरी ओर एक पर्व्वत पर बालाहिसार दुर्ग अवस्थित है। पर्व्वतके ढालुवें भागपर शाही महल बने हैं और एक बाजार भी है। नगरमें कोई एक लाख मनुष्य बसते हैं। नगरके नीचे ही काबुल नदी बहती है। वर्त्तमान अमीरके जमानेमें यह नगर बहुत रौनकपर है। वर्त्तमान अमीरके शासनकालमें अन्यान्य नगरोंकी उन्नति होनेके साथ साथ गजनी नगरकी भी खासी उन्नति हुई है। लोगार घाटी पार करनेपर एक खुले मैदानमें यह प्राचीन नगर मिलता है। इसके पार्श्वमें एक सुदृढ़ दुर्ग है और नगरकी गिर्द शहरपनाह तथा खन्दक है।

अफगानस्थान, रूस और अङ्गरेज।

अमीर अब्दुर्रहमानने लिखा है,—"रूसके लोग हिन्दु
।नको कुबरका भण्डार समझते हैं। मैंने प्राय रूसी सिपा
हयोंको इस आशासे उछलते कूदते देखा है, कि उन्हें एक
दिन इस धन धान्यसे परिपूर्ण देशके लूटनेका समय मिलेगा।
ह इस दिनकी बाट जोह रहे हैं।" रूसी केवल बाट नहीं
जोह रहे हैं, वरञ्च भारतवर्षपर चढ़ाई करनेकी तय्यारीमें लगे
हुए हैं। उन्होंने अफगानकी सीमापर्यन्त अपनी रेल बना
ली, वह अब नदीपर पुल बांधनेकी चिन्तामें है और उन्होंने
अपनी मध्य एशियाकी फौज बढ़ाना आरम्भ की है। रूस
भारताक्रमण करनेमें कृतकार्य्य हो, वा चाहे अकृतकार्य, किन्तु
जसयसे जान पड़ता है, कि वह पूरी तरह तय्यार होनेके
उपरान्त ही भारतवर्षपर आक्रमण कर सकता है।

इधर अङ्गरेज महाराज भी रूससे सामना करनेके लिये
पूर्णरूपसे तय्यार हैं और तय्यार होते जाते हैं। उनकी
सरहद्दी रेलें बन चुकी हैं। ऐसी रेलका एक छोर कन्धा
रको पड़ोसतक पहुंच चुका है। दूसरा छोर खैबर दर्रेके
पास पहुंच गया है और खबर है, कि शीघ्र ही खैबर दर्रे-
तक पहुंच जावेगा। भारतवर्षमें तोप बन्दूकके नये कार-
ाने खुल रहे हैं। भारतकी फौज भी बढ़ाई जानेकी खबर
। वृटिश सरकारने वर्तमान बड़े लाट कर्जन बहादुरके
लेफेकी उतनी परवा न करके वर्तमान जङ्गी

बहादुरकी फौजी शक्ति बढ़ा दी है। जङ्गी लाट इस शक्तिद्वारा भारतरक्षाका मनमाना प्रबन्ध करना चाहते हैं। इस प्रकार अङ्गरेज सरकार भी निश्चिन्त नहीं हैं। वह रूसको रोकनेकी पूरी तय्यारीमें लगे हुऐ हैं।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं है, कि अफगानस्थान भारतवर्षका फाटक है। इसी राहसे रूस भारतवर्षमें घुस सकता है। इस समय अफगानस्थान स्वतन्त्र होनेपर भी अङ्गरेजोंका मित्र है और अङ्गरेजोंके प्रभावमें है। जिस समय रूसअङ्गरेज युद्ध होगा, उस समय भी अफगानस्थानको दोमें एक शक्तिके साथ रहना पड़ेगा। किन्तु प्रश्न यह है, कि ऐसा समय उपस्थित होनेपर अफगानस्थान किसका साथ दे सकता है? इस गूढ़ प्रश्नका उत्तर देनेसे पहले हमें यह दिखाना उचित है, कि रूस और अङ्गरेजकी वैदेशिक नीति क्या है और अफगानस्थान रूससे कौनसा लाभ उठा सकता है और अङ्गरेजोंसे कौनसा। रूसकी नीति संक्षिप्त यह है, कि वह उचित वा अनुचित रीतिसे, सन्धिसे वा मैत्रीसे,—जिस युक्तिसे उसे सुविधा होती है, एशियाई शक्तियोंको नष्ट और निर्बल कर रहा है। रूसकी आन्तरिक इच्छा यह है, कि रूस, अफगानस्थान और ईरान यह तीनों शक्तियां नष्ट हो जाय। यदि रहें तो रूसके अधीन होकर रहें। कितने ही लोग कहते हैं, कि रूस जिस देशको जीतता है, उस देशके रहनेवालोंको वहांका हाकिम बनाता है। इस बातके प्रमाणमें बुखारे और खीवकी बात उपस्थित करते हैं। किन्तु ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो उक्त दोनों देशके शासक नाममात्रके लिये

स्वतन्त्र हैं। इन देशोंमें न्याय मीमांसाका काम देशी शासकोंके हाथमें रखा गया है सही, किन्तु राजकर वसूल करनेका काम रूसी कर्मचारी ही करते हैं। इस प्रकार रूस विजित शक्तिको प्रकारान्तरसे निर्बल करके बिलकुल ही अपने काबूमें कर लेता है।

किन्तु अङ्गरेज महाराज एशियाई शक्तियोंके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते। वह सदैव उनके साथ मित्रभाव रखते हैं और यह चाहते हैं, कि उनकी मित्र शक्तियां सुदृढ़ बनी रहें। अमीर अब्दुररहमान कहते हैं, किन्तु इस पालिसीमें अस्थायी परिवर्त्तन हो जाया करते हैं। अङ्गरेजी पालिसी रूसी पालिसीकी तरह सुदृढ़ और स्थायी नहीं। जिस दलका राज्य रहता है, उसीकी शक्ति मानी जाती है। उसीके मन्त्री उसकी सलाहके अनुसार काम करते हैं। किन्तु एक दलका अखतियार मिटते ही दूसरे दलका अखतियार होता है। पहले दलके विचारकी अपेक्षा दूसरे दलका विचार बिलकुल ही भिन्न होता है। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता, कि गवरमेण्टकी अमुक अमुक पालिसी स्थायी हैं। इस बातमें कोई सन्देह नहीं, कि बहुत दिनोंसे ग्रेटबृटेनकी यह पालिसी है, कि एशियाई रूम तथा भारतवर्षमें जो मुसलमानी राज्य हैं, वह रक्षित रहें और उनकी स्वतन्त्रता नष्ट न होने पावे।" इसमें कोई सन्देह नहीं, कि विलायतमें कभी लिबरल दलका प्राधान्य होता है और कभी कान्सरवेटिवका। जो दल प्रबल होता है, वह अपनी नीति अवलम्बन करता है। दोनों दलोंकी नीतिमें बड़ा अन्तर

है। किन्तु यह निश्चय है, कि अङ्गरेज रूसकी तरह एशियाई शक्तियोंकी स्वतन्त्रता छीनना नहीं चाहते।

इसलिये यद्यपि दोबार अङ्गरेज अफ़गान युद्ध हो चुका है, यद्यपि अफ़गानस्थानकी कितनी ही जातियां अङ्गरेजोंसे घृणा करती है, यद्यपि कितने ही राजनीति विशारदोंका कहना है, कि अङ्गरेजों और अफ़गानोंमें कभी मैत्री न होगी,—फिर भी, स्वतन्त्रताप्रेमी अफ़गानस्थान अपनी स्वतन्त्रता स्थापित रखनेके ध्यानसे अङ्गरेजोंहीके साथ रहेगा।

किन्तु इसके साथ साथ अमीर अब्दुररमानकी यह बात भी देखना चाहिये,—"यदि दुर्भाग्यवश अङ्गरेज अपनी पालिसी बदल दे और अफ़गानस्थानपर अधिकार करने या उसकी स्वतन्त्रतामें बाधा पहुंचानेके अभिप्रायसे ज्यादती करेंगे, तो अफ़गान जातिको विवश होकर अङ्गरेजोंसे लड़ना पड़ेगा। वह यदि पराजित हुए तो रूससे मिल जावेंगे। कारण, रूस इङ्गलण्डकी अपेक्षा अफ़गानस्थानके अत्यन्त समीप है। इसलिये रूस अफ़गानस्थानकी सहायता कर सकता है।"

जो हो, समझदारोंका कहना है, कि ग्रेटब्रिटेन अफ़गानस्थानसे यथाशक्य मैत्री स्थापित रखेगा। उधर अफ़गानस्थानको भी यही उचित है, कि वह पिछली बातें भुलाकर कायमनो वाक्यसे अङ्गरेजोंकी मैत्री कायम रखनेकी चेष्टा करे। इससे अङ्गरेजोंका तो भला होवे होगा, किन्तु अफ़गानस्थानका बहुत भला होगा। वह बरबाद हो जानेसे बचा रहेगा।

अफगानस्थानका भविष्य।

अब हम अफगानस्थानके विषयमें बत्तीस भविष्यवाणियाँ नेरङ्गे अफगानसे उद्धृत करके यह पुस्तक समाप्त करते हैं,—

"(१) रूस और इङ्गलण्डमें किसी न किसी समय बहुत बड़ा युद्ध होगा।

(२) रूस यदि अफगानस्थानमें दाखिल हो गया, तो अफगान उसको जबरदस्त समझेंगे और उसकी छायामें रह कर भारतवर्ष लूटने जावेंगे।

(३) अब जो अफगान आपसमें लड़ेंगे, तो उस युद्धका फल यह होगा, कि उधर रूस अपने निकटस्थ स्थान जैसे हिरात, बलख इत्यादिपर अधिकार कर लेगा और इधर अङ्गरेज अपने निकटस्थ स्थान कन्धार, जलालाबाद प्रभृतिपर कबजा कर लेंगे।

(४) अभी कुछ दिनोंतक इङ्गलण्ड और रूसमें युद्ध न होगा। काबुलमें इमारत कायम रखी जावेगी और यही काबुल इन दोनो बादशाहोंके बीचमें आड़ बना रहेगा।

(५) फिर यह होगा, कि अमीर काबुलकी बदौलत दोनो बादशाहोंमें झगड़ा हो जावेगा और तब रूस अङ्गरेज युद्ध आरम्भ होगा।

(६) भारतवर्ष बहुत दिनोंतक सुरक्षित रहेगा।

(७) जो जबरदस्त प्रमाणित होगा, अफगान उसीका साथ देंगे। उसीका प्रभाव अफगानस्थानपर स्थापित होगा। जो दबेगा, उसका साथ छोड़ देंगे। यह ऐतिहासिक सत्य है।

(८) कभी एक न एक दिन अफगानस्थान अफगानोंके लिये न रहेगा और रहेगा, तो उस समय, जब अफगान किसी जबरदस्तकी छाया मान लेंगे।

(९) अफगान भिन्न धर्म और भिन्न जातिके लोगोंका शासन कभी स्वीकार न करेंगे। जो जबरदस्तीके साथ शासन करेगा, उसे साजिश करके परेशान कर देंगे। जिसको वह स्वयं बुलाकर शासक बनावेंगे, उसको भी कष्ट पहुंचावेंगे।

(१०) उनके देशमें रूस या इङ्गलण्डका जो बादशाह दाखिल होगा, वह अपनी जबरदस्त फौजकी वजहसे दाखिल हो जावेगा, किन्तु अफगान उससे मिलकर वही करेंगे जो पहले करते आये हैं।

(११) जिस बादशाहके पास अधिक फौज होगी, वही अफगानस्थानका शासन कर सकेगा।

(१२) अमीर दोस्तमुहम्मदके घरानेमें इमारत रहेगी और उन्होंके सन्तानके जमानेमें इङ्गलण्ड और रूसमें युद्ध होगा।

(१३) रूस और इङ्गलण्डकी रेल मिल जावगी और यह अफगान जो अब हैं, रह न जावगा।

(१४) अमीर अब्दुररहमानने अफगानस्थानमें जो सभ्यता फैलाई है, वह एक समयमें मिट जावगी।

(१५) पहले रूस अफगानस्थानको छेड़कर लड़ेगा और अन्तमें अफगानस्थानको परास्त करेगा।

(१६) रूस जो देश लेगा, उसे न छोड़ेगा।

(१७) एक न एक दिन रूसी दूत भी काबुलमें नियुक्त होगा।

(१८) रूस वाखिया और पामीरसे दाखिल होगा और जब ट्रांस्य पथोंसे दूसरे बादशाहोंकी फौज आई हैं, तो उसकी भी चली आवेगी।

(१९) कोई नियमपत्र कायम न रहेगा।

(२०) एक जमानेमें अफगानस्थानके हिस्से हो जावेंगे, तो रूस और इङ्गलैण्ड एक सन्धि होगी।

(२१) हिरात इरानको न मिलेगा।

(२२) जबतक और जिस हैसियतसे काबुलमें इमारत होगी अङ्गरेज रुपये देते रहेंगे।

(२३) काफरस्थान और हजारा एक दिन अफगानस्थानकी अधीनता स्वतन्त्र हो जावेगा।

(२४) रूस अफगानस्थान विजय करके वहां शान्ति स्थापित कर सकता है।

(२५) इङ्गलैण्ड यदि फिर कभी अफगानस्थान विजय करेगा तो वापस आवेगा।

(२६) अफगानस्थानकी सरहता और सामिधमें किसी तरह का परिवर्तन न होगा।

(२७) अफगानस्थानकी धार्मिक उत्तेजना कभी कम न होगी।

(२८) जब रूस अफगानस्थानमें आवेगा, तो पेशावरका दावा करेगा।

(२९) रूस अङ्गरेज युद्धमें अटकपर घमसान युद्ध होगा।

(३०) रूस-अङ्गरेज युद्धके समय मध्यएशियाकी रूसी प्रजा बलवा करेगी।

(३१) भारतवर्षमें इङ्गलण्डसे बगावत न होगी।

(३२) भारतवर्षमें अब जो बड़े लाट होंगे, वह वही होंगे, जो सीमासम्बन्धी बातें जानते होंगे।"

इति।

—•:—